|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | 'B©-2019

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

शासनपति श्री महावीराय नमः

प्रातः स्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः

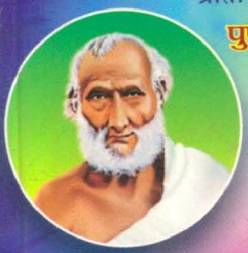

पुण्य सम्राट श्री विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

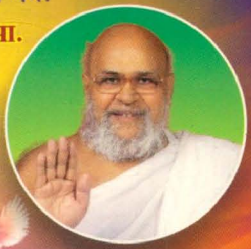

त्रिस्तुतिक श्री संघ तृतीयबार

वीरभूमि राज नगरे अहमदाबाद

आत्मोद्धार

'सामूहिक दीक्षा महोत्सव'

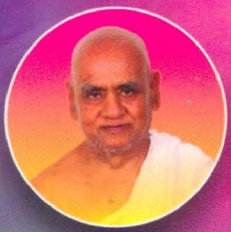

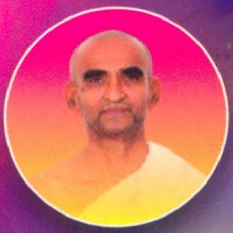

आत्मोद्धार निश्रा प्रदाता धर्म दिवाकर गच्छाधिपति

श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज

सूरि मंत्र आराधक जैनाचार्य

श्रीमद्विजय जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज

आत्मोद्धार आयोजक

श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ

वल्लभ सदन रिवरफ्रंट, आश्रम रोड़, राजनगर (अहमदाबाद), गुजरात

आत्मोद्धार–3, दिवस वैशाख कृष्ण–5, दि. 23 मई 2019, गुरुवार

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

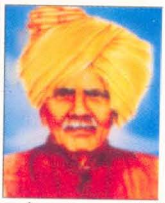

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा घाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

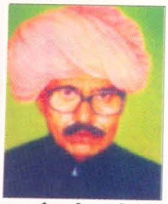

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

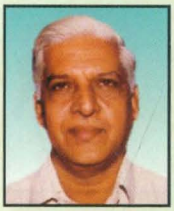
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

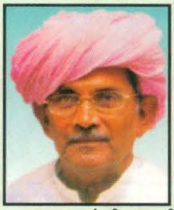
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

34104

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

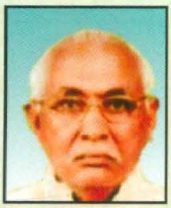

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

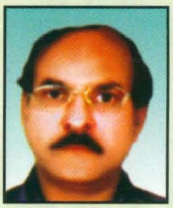

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

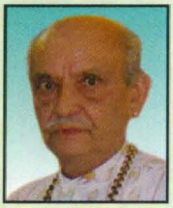

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

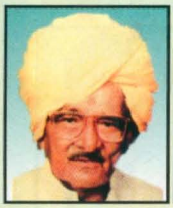

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

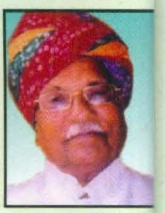

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

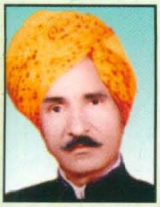
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

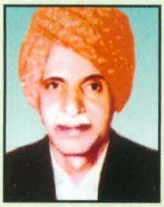
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

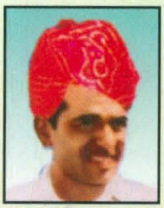
संघवी श्रा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

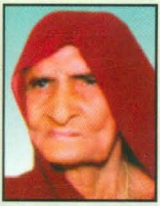
पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

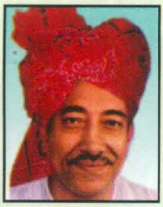
श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

श्रा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

श्रा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

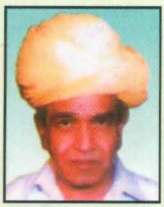
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. वगराजजी नसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

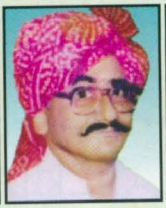
पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैगावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

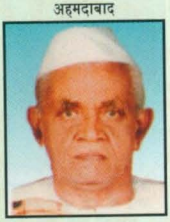
श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

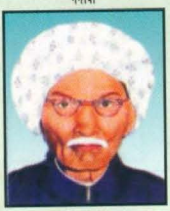
वेदलीया हालचंद भाई
भणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

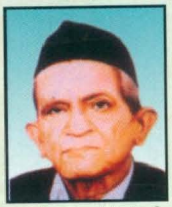
शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

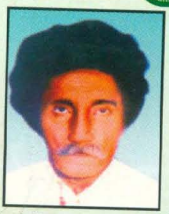
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

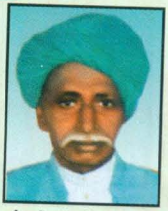
संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

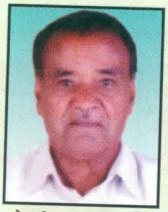
मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

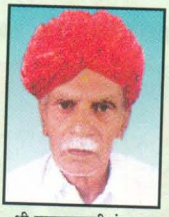
श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

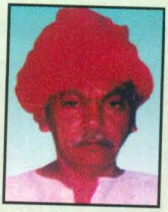
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

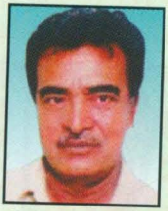
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

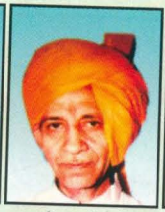
स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तलेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

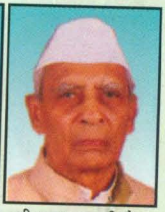
श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

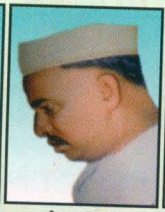
श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

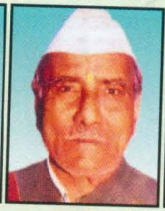
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

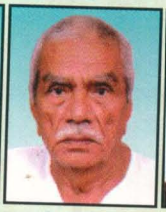
श्री मानसिंहजी राजगढ़

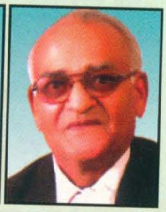
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवालालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भूरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भूरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

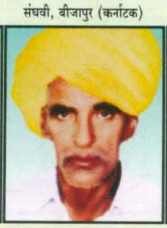

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

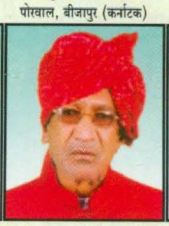

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

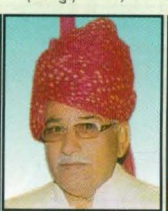

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (साथला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

मई-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 5
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मने रजोहरण लागे प्यारो-प्यारो

तुंबीया ग्राम में गुरु सिंहगिरी तथा धनगिरी का चातुर्मास था। उनके साथ एक बालक वज्र भी था जिसे उसकी माता तथा सिंहगिरी की गृहस्थ पत्नी सुनन्दा ने वहोराया था।

पूरे ग्राम में बालक की दीक्षा की चर्चा थी। कुछ वर्ष बाद सुनन्दा का मन पलट गया। वह सिंहगिरी के पास गई तथा बालक को मांगने लगी। सिंहगुरु ने कहा –

'संतों को दान दिये जाने के बाद दान वापिस नहीं मिलता है।'

श्रीसंघ भी गुरु आज्ञा से सहमत था। सुनन्दा ने राज दरबार में जाकर शिकायत की तथा अपना पुत्र वापिस दिलाने की राजा से प्रार्थना की। राजा ने गुरु सिंहगिरी तथा सुनन्दा को अपने सामने बिठाया और बीच में वज्र को बिठाकर पूछा कि वह किधर जाना चाहता है?

सुनन्दा ने कई जतन किये, बच्चे को लुभाया, उसे बार – बार बुलाया किन्तु वज्र ने उसकी ओर देखा ही नहीं। माता के प्रयास निष्फल हो गये।

गुरु सिंहगिरि का क्रम आने पर उनने हाथ ऊँचा कर रजोहरण देने का संकेत किया।

बालक वज्र एकदम उठा और रजोहरण लेकर नाचने लगा।

'मने रजोहरण लागे प्यारो, प्यारो।'

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	श्री जयंतसेन जयनाद (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	9
2.	पूज्याचार्य 'जयन्त' स्तुति (श्री मनोज जैन)	10
3.	जयंतसेन जीवन झलक (8) (साध्वी रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	11
4.	अशुभ वचन योग (28) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	13
5.	गणधरवाद (लेखांक-65) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
6.	लघु कथाएँ (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	19
7.	प्रश्नोत्तरी	21
8.	बैर का बदला बैर से नहीं (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	22
9.	मांसाहार से केवल विनाश (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.)	24
10.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	26
11.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	27
12.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	28
13.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	30
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	32
15.	प्रासंगिकम्-सर्वधर्मशिरोमणिः-10 यति धर्म (मुनिश्री निपुणरत्नविजय म.सा.)	34
16.	श्रमणः किंस्वरुपम्? (पुण्य सम्राट ज्ञानज्जनम् पर्व-पाटण)	36
17.	काल चक्र तथा उसके आरे (मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)	37
18.	प्रतिक्रमण (संकलन-श्री सुरेन्द्र गंग)	39
19.	मांसाहार सबसे बड़ा पाप (जैन जसराज देवड़ा, धोका)	41
20.	शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	43
21.	निश्चय बुद्धि से देवार्षित है-देवद्रव्य (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	47
22.	गुरु कृपा (श्री जयवंतराज पुकराजजी वाणीगोता)	50
23.	अनेक रोगों की कारगर चिकित्सा-उपवास (श्री गौरीशंकर शर्मा)	51
24.	अष्टमंगल जैन मंगल चिह्न	53
25.	जयंतगिरी सिद्धाचल चैत्री पूनम (संकलन-मनोहरलाल पुराणिक, कुक्षी)	54
26.	क्रियोद्धार-एक नजर में (जे.के. संघवी, ठाणे)	57
27.	महामंगलकारी है-अक्षतृतीया (अचलचन्द जैन, सायला)	60
28.	श्री भक्ताम्बर स्त्रोत मंत्र-यंत्र-साधना विधान (विनय कुमारी छिपानी)	62
29.	गुजराती संभाग	63-76
30.	कुमकुम सने पगलिये	77-84
31.	समाज सौरभ	85-96
32.	परिषद् प्रांगण से	97-107
33.	जैन विश्व	108-110
34.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	111-112

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

'गुरु-भक्ति स्तवन'

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

(तर्जः धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना है ...)

Jayant Guruvar, Where are you-
Why you leave me alone & went away very for
where are you .....

1. Guru is my heart and guru is my light
without guru nothing in this world
you are enlightenedman, you're navkar suppliants
without you we are being groundless
2. You have saved me from materialistic life,
you gave me spiritual life
you had done very favour on me.
you're my saviour, you' re my base of soul
your's personality is morvelous.
Guru is my custody..... where are you...
3. Guru is my dictionary, guru is my library
guru is my disclosure-2
guru is my helpline, guru is my guidline
guru is my inspiring
we are missing you very much....where are you

पूज्याचार्य 'जयन्त' स्तुति

(श्री मनोज जैन)

चिंता चूरे, मंशा पूरे, जग में सबसे न्यारे थे।
सदा हो जय-जय जयंतसेन की, पूज्याचार्य हमारे थे ।।

मगसर वदी तेरस को, पूनम जी अवतारे हैं।
महतारी है पार्वती, जनक स्वरूप के तारे हैं ।।
धन्य धरा है, पेपरात की, शीश झुकाते सारे हैं।
सदा हो जय-जय जयंतसेन की, पूज्याचार्य हमारे हैं ।।

संयम लिया सियाणा में, देवगुरु अपनाया है।
राणापुर नगरे में देखो, पहला ठाठ मचाया है ।।
राजेन्द्र निहारे, यतीन्द्र दुलारे, अद्भुत 'मधुकर' प्यारे है।
सदा हो जय-जय जयंतसेन की, पूज्याचार्य हमारे हैं ।।

देश प्रांत में घूम-घूम कर, जिन संदेश सुनाया है।
परिषद् के बेनर तले, अनुशासन सिखलाया है ।।
वाणी सिद्धि, लब्धीदाता, प्रभु गौतम को धारे हैं।
सदा हो जय-जय जयंतसेन की, पूज्याचार्य हमारे हैं ।।

रज-कण-चरण जो आपके, गर हमको मिल जायेंगे।
विनती है ये 'मनोज' की, हम सब तो तिर जायेंगे ।।
ज्ञानी, ध्यानी, त्यागी थे, गुरुवर सबको तारे थे।
सदा हो जय - जय जयंतसेन की, पूज्याचार्य हमारे थे ।।

श्री जयंतसेन जीवन झलक (8)

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

पू. गुरुदेव का चरण प्रवाह जिधर मुड़ता था उधर के वायुमंडल में पवित्रता और प्रफुल्लता की सौरभ महकने लगती थी। जहाँ भी जाते हर गांव हर नगर हर मौहल्ले में आपका कल्पनातीत स्वागत होता था। महोत्सव कितने ही बड़े पैमाने पर आयोजित किया जाए सभी के लिए महत्त्वपूर्ण आकर्षण केन्द्र तो मात्र पू. गुरुदेव ही होते थे। उनके इस अप्रतीम पुण्य वैभव को देखकर सभी अभिभूत हो जाते थे। पू. गुरुदेव ने अपने जीवन काल में 63 यशस्वी चातुर्मास किये।

संघ एकता शिल्पी - पू. गुरुदेव संघ-समाज में एकता की स्थापना हेतु सदैव तत्पर रहे। गांव-गांव, नगर-नगर के अनेकों वैर-विरोधों को समाप्त किया एवं एकता की स्थापना की उनके वचनों में प्रचंड शक्ति एवं सामर्थ्य था। सन् 2006 में मोहनखेड़ा तीर्थ पर श्री राजेन्द्रसूरि शताब्दि महोत्सव के आयोजन के अवसर पर हजारों कि.मी. की यात्रा करके पधारे।

विजयवाड़ा में आये मोहनखेड़ा तीर्थ के ट्रस्टीगण की विनति को एकता हेतु सहर्ष स्वीकार की। जब भी अवसर मिला आपने एकता का प्रयास किया। उनकी एकता एवं समन्वय दिखावा, छलना या नेतृत्व करने की चाल नहीं थी किन्तु सभी के कल्याण की सच्ची अभीप्सा थी। उन्होंने खोटी आलोचना भी हमेशा समताभाव से सहन की विरोध या परिहार के लिए एक शब्द भी नहीं कहा। वे द्राक्ष के समान अंदर बाहर से नम्र स्वभाव वाले अत्यंत सहिष्णु शांत थे कितना भी कठोर वचन कहे आक्षेप नहीं करते थे। उनमें दाहकता नहीं जीवनदायी उष्मीय संघ के प्रमुख लोगों ने मिलकर उन्हें संघ एकता शिल्पी के विरुद से नवाजा।

कांटों का ताज - व्यक्ति सत्य के पक्ष में खड़ा रहे और बुराइयों से लड़ते रहे जीवन आसानी से निकल जाए यह संभव नहीं है। पू. गुरुदेव की जीवन यात्रा भी संघर्षों के आंधी तूफनों में सम्पन्न हुई। किन्तु वे विकट प्रसंगों पर विरोधी से विरोधी वातावरण में भी क्षुब्ध नहीं हुए और साम्यभाव में लीन रहे।

उनका संकल्प और पराक्रम चुनौतियों में अप्रकंप बना रहता था। उनकी हिमाचल जैसी संकल्पशक्ति के सामने प्रतिपक्षी लोगों के मनसूबे कच्ची दीवार की तरह ढह जाते थे। उनके प्रतिदिन के आगे से आगे कार्यक्रम तय हो जाते थे। हजारों मील की विहार यात्रा करके भी वे निश्चित एकम सान्निध्य प्रदत्त कर देते थे।

(क्रमशः)

जयंतसेन हस्ताक्षर

(भक्तों को पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रसादी रूप भेजे गये पत्रों का यहाँ क्रमशः प्रकाशन किया जायेगा)

प्रभु श्री राजेन्द्र सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः

श्री सुश्रावक श्री अशोक कुमारजी एवं समस्त नान्देच्या परिवार।
— धर्मलाभ।

क्षमापना पत्र मिला।

परस्पर हुए दुःखद व्यवहार, चिंतन एवं कथन की शुद्धि के लिये पर्वाधिराज आते हैं। पर्वों का राजा प्रत्येक को प्रेरणा देता है कि

अनादि की दुर्मतिने हमें भटकाया एवं स्नेह, सद्भाव की सरिता को शुष्क कर दिया है अब थोड़ा अपने को जागृत कर सुमति के श्रृंगार से स्वयं को सुशोभित करें।

सभी को धर्मलाभ कहें।

यहाँ पर धर्माराधना सानन्द संपन्न हो रही है। कल्पनातीत तपश्चर्याने तपोधर्म की ध्वजा को उंचा उठाया है।

धर्माराधना में रत रहें।

संघ, समाज की प्रगति में तन, मन, धन से लगे रहें। परिवार में सभी को एवं श्री संघ में सभी को धर्मलाभ कहें। शेष कुशल। साध्वीमण्डल को भी शाता पृछे।

श्री जयन्तसेनसूरि. जी
— धर्मलाभ।
दि. २३-९-२२
नेनावा

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (28)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उसके बाद उसके गले पर मामूली - सी खरोंच हथियार से लगाकर खरोंच वाली जगह से नल का जल गिराया गया, किन्तु अपने मुँह से सभी यह कहते रहे कि देखो- देखो, कितनी तेजी से खून बह रहा है ! अब तो इस आदमी का बचना मुश्किल है। इसके शरीर में चढ़ाने के लिए इतने खून की व्यवस्था कैसे कहाँ से हो पाएगी ? हम तो इसका थोड़ा-सा दूषित खून ही निकालने की कोशिश कर रहे थे, किन्तु पता नहीं, इसका खून रुक ही नहीं रहा है, धारा प्रवाह निकल रहा है । क्या करें ? कुछ सूझ ही नहीं रहा है ! इसे कैसे बचायें ? अपना तो दिमाग ही काम नहीं कर पा रहा है...।'

डॉक्टरों के ऐसे वार्तालाप को सुन-सुनकर पानी की धार को अपने खून की धार समझकर वह कैदी बहुत घबरा गया है। उस घबराहट के कारण जल्दी ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए ।

यद्यपि कैदी के शरीर से रक्त की एक बूँद भी बाहर नहीं निकली थी, फिर भी डॉक्टरों के वार्तालाप का मन पर ऐसा विपरीत प्रभाव पड़ा कि जल्दी ही उसे अपने प्राणों से हाथ धोने पड़ गए। इंग्लिश की एक सूक्ति हैं -

The tongue is but three inches long, yet it can kill a man six feet high.

हिन्दी में इसका अर्थ यह हुआ कि एक जीभ केवल तीन इंच लम्बी होती है, फिर भी छह फुट ऊँचे मनुष्य को मार सकती है ।

मुनियों के लिए निश्चयात्मक वचन (भविष्य कथन) का निषेध किया गया है किन्तु बहुत - से मुनियों को बोलते समय इस

बात का ध्यान नहीं रहता। एक उदाहरण से यह बात बहुत अच्छी तरह से समझ में आ जाएगी कि ऐसी भाषा बोलने से कितना भयंकर अनर्थ हो सकता है।

किसी नगर में एक राजपूत रहता था। नई-नई शादी हुई थी उसकी परन्तु एक अत्यावश्यक काम से उसे नगर से बाहर अन्यत्र जाना पड़ा। घर में अकेली राजपूतानी थी। राजपूत दूसरे नगर में काम करते हुए भी पत्नी को बहुत याद करता था। पत्नी भी पति को याद करती रहती और जिधर से पतिदेव गए थे, उस दिशा को निहारती रहती थी। पतिदेव भी काम में ऐसे उलझे कि चाहते हुए भी शीघ्र नहीं लौट सके। कई दिन बीत गए।

एक मुनि भिक्षार्थ पर्यटन करते हुए उस घर के निकट से होकर गुजरते थे। प्रतीक्षारत राजपूतानी की विरह-व्यथा उनसे नहीं देखी गई। ध्यान करने पर उन्हें पता चल गया कि प्रवासी राजपूत अब शीघ्र ही घर लौट आने वाले हैं। राजपूतानी की विरह-व्यथा को शान्त करने के लिए दयालु मुनि ने अपने नियमों के विरुद्ध निश्चयात्मक भाषा का उपयोग करते हुए कह दिया - 'माताजी ! आपके पतिदेव कल दोपहर तक अपना काम निपटाकर अवश्य लौट आएँगे ! आप निश्चिंत रहें।'

यह सुनकर राजपूतानी की प्रसन्नता का पार न रहा। अगले दिन घर की साफ-सफाई और सजावट करने के बाद स्वयं स्नान करके सुन्दर बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से अपने शरीर को उसने अलंकृत कर लिया। फिर उत्सुकता से पतिदेव के शुभागमन की बाट देखने लगी।

दोपहर को सचमुच पतिदेव घर लौट आये। घर की सजावट और वस्त्राभूषणों से अलंकृत पत्नी को देखकर उन्हें मन में क्षोभ हुआ। पत्नी के चरित्र पर शंका हुई कि मेरे घर पर न रहने के कारण किसी के साथ यह गुलछर्रे उड़ाती रही है, अन्यथा मैं आज लौटकर घर आने वाला हूँ, यह बात पहले से तो मालूम हो नहीं सकती थी। पत्नी को भी यह समझते देर न लगी कि इतने दिनों बाद मुझे देखकर उनके

चेहरे पर अपेक्षित प्रसन्नता के भाव न होने से कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। उसने अपनी ओर से खुलासा करते हुए कहा कि घर और शरीर की सजावट आज ही की गई है।

पति ने पूछा- 'लेकिन तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं आज ही दोपहर तक लौटने वाला हूँ ? मैंने किसी के साथ न कोई चिट्ठी भेजी थी और न कोई मौखिक संदेश ही भेजा था कि मैं आज लौट रहा हूँ।'

ठीक उसी समय वे मुनि उस घर के पास से गुजरे। राजपूतानी ने उनकी ओर संकेत करके कहा - 'पतिदेव ! ये ही मुनि जी हैं जिन्होंने आपके आज सकुशल घर लौट आने की भविष्यवाणी कल इधर से जाते समय सुनाई थी। उस भविष्यवाणी पर विश्वास करके ही मैंने अपने घर और शरीर को सजाया था।'

पतिदेव ने अपनी घोड़ी से नीचे उतरने के बाद- 'यह सब बकवास है। कोई भी व्यक्ति अपना भविष्य नहीं जान सकता, क्योंकि भविष्य असत् है और असत् (अविद्यमान) का प्रत्यक्ष कोई नहीं कर सकता। जब स्वयं कोई अपना भविष्य भी नहीं जान सकता, तब किसी दूसरे का भविष्य भला कैसे जान सकता है ?'

पत्नी- 'मैं इतनी पढ़ी-लिखी नहीं हूँ कि आपकी तर्कपूर्ण बात का तर्क से उत्तर दे सकूँ। केवल इतना ही कह सकती हूँ कि मुझे मुनिजी से ही यह जानकारी मिली है, बस !'

पति- यदि मुनिजी की भविष्यवाणी सही निकलती है और तुम्हें मुनिजी पर विश्वास है तो मैं उन्हें चुनौती देता हूँ कि वे मेरी इस गर्भवती घोड़ी के विषय में भविष्यवाणी करके यह बतायें कि इसके गर्भ में बछड़ा है या बछड़ी?

मुनिजी पति-पत्नी की बात कुछ दूरी पर खड़े-खड़े सुन रहे थे।

(क्रमशः)

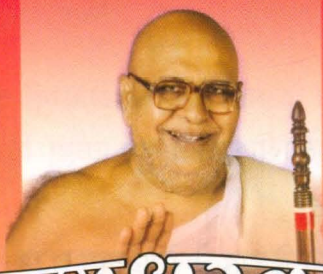

गणधरवाद

स्वर्गीय मनीषी लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

प्रवचनकार

व्यक्त- हाँ वस्तुतः यथार्थ बात तो यही है कि कुछ नहीं दिखता, इसीलिए सबका अभाव है- सर्वशून्य है ।

महावीर- ऐसा कहने पर तो तुमने पहले जो स्वीकार किया था, उसका बाध हो जाएगा। याने पहले तुमने कहा था कि परभाग का अदर्शन है और अब यह कहते हो कि किसी का दर्शन नहीं। इसमें तो परस्पर विरोध है तथा घटपटादि बाह्य वस्तुएँ तो सभी को प्रत्यक्ष हैं । इसलिए ऐसा कैसे कहा जा सकता है कि कुछ भी नहीं दिखता है। इसमें तो प्रत्यक्ष विरोध है। अतएव कुछ नहीं दिखता। इस हेतु से सर्वाभाव सिद्ध नहीं किया जा सकता।

व्यक्त- सर्व सपक्ष में हेतु के विद्यमान होने पर भी यदि वह सर्व विपक्ष से व्यावृत्त हो, अर्थात् एक भी विपक्ष में विद्यमान हो, तो वह सद्हेतु कहलाता है। जैसे शब्द अनित्य है, क्योंकि वह प्रयत्न से उत्पन्न होता है। इसमें रहा हुआ हेतु सभी अनित्य पदार्थों में विद्यमान नहीं है, क्योंकि विद्युत, बादल आदि ये अनित्य पदार्थ ऐसे हैं, जो प्रयत्न की अपेक्षा नहीं रखते। तो भी किसी भी विपक्ष में यह हेतु नहीं है अर्थात् कोई भी ऐसा नित्य पदार्थ नहीं है, जो स्वोत्पत्ति में प्रयत्न की अपेक्षा रखता हो, क्योंकि जब नित्य पदार्थ की उत्पत्ति ही नहीं होती, तो वहाँ प्रयत्न का क्या प्रयोजन ? इसलिए उक्त हेतु सर्व सपक्ष व्यापी न होने पर भी सर्व विपक्ष से व्यावृत्ति के कारण स्व-ससाध्य अनित्यता को सिद्ध करता है। इसी प्रकार परभाग

का अदर्शन भले ही स्फटिकादि शून्य पदार्थों में न हो, अर्थात् वह सर्व सपक्षों में न हो, किन्तु सपक्ष के बहुभाग में तो है ही, जिससे वह स्व-साध्य को सिद्ध कर सकता है।

महावीर- आयुष्मन् ! तुम्हरा तर्क भले ही रमणीय प्रतीत होता हो, लेकिन परभाग का अदर्शन इस हेतु में उक्त हेतु की तरह व्यतिरेक सिद्ध नहीं होता। उक्त हेतु का व्यतिरेक-जो अनित्य नहीं है, वह प्रयत्न से उत्पन्न भी होता है- जैसे आकाश- यह सिद्ध है, किन्तु यहाँ तो 'जहाँ शून्यता नहीं, वहाँ परभाग का अदर्शन भी नहीं, ऐसा व्यतिरेक कैसे सिद्ध करोगे ? ऐसा व्यतिरेक तो किसी सद्भुत वस्तु में ही सिद्ध हो सकता है, किन्तु सर्वाभाव मानने से तुम तो किसी सद्भुत वस्तु का स्वीकार ही नहीं कर सकते। याने परभाग के अदर्शन को अहेतु मानने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है।

व्यक्त- पर और मध्य भाग नहीं है, क्योंकि खर-विषाण की तरह वे अप्रत्यक्ष है। और यदि पर व मध्य भाग न हों, तो अग्रभाग भी कहाँ से होगा? क्योंकि वह अग्रभाग भी पर व मध्य भाग की अपेक्षा से है। इस प्रकार से सर्वशून्यता सिद्ध होती है।

महावीर- अलग-अलग इन्द्रियों का जो विषय बनता है, वह पदार्थ प्रत्यक्ष कहलाता है। इसलिए जब तुम कहते हो कि अप्रत्यक्ष है, तब कम से कम इन्द्रियाँ और अर्थ इतना तो तुम्हें विद्यमान मानना ही चाहिए, क्योंकि विद्यमान का ही निषेध होता है और उसे (विद्यमान को) स्वीकार करने में तो शून्यता की हानि होती है। इसलिए कदाचित् तुम उन दोनों इन्द्रिय और अर्थ को स्वीकार नहीं करके शून्य को स्वीकार करो, तो भी अप्रत्यक्ष होने से ऐसा नहीं कह सकते, क्योंकि इन्द्रिय और अर्थ के अभाव में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ऐसा व्यवहार हो ही नहीं सकता।

इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष होने से यह हेतु व्यभिचारी भी है, क्योंकि ऐसा नियम नहीं है कि जो अप्रत्यक्ष हो वह अविद्यमान ही हो । तुम्हारे

स्वयं के संशय को तथा ज्ञानों को बहुत से व्यक्ति प्रत्यक्ष नहीं करते हैं, किन्तु वे विद्यमान हैं। इसी प्रकार अन्य पदार्थ ऐसे हो सकते हैं कि अप्रत्यक्ष होने पर भी वे विद्यमान होते हैं। इसी तरह पर मध्य भाग भी अप्रत्यक्ष होने पर भी उनका विद्यमान होना सम्भव है।

व्यक्त- संशयादि ज्ञान भी अप्रत्यक्ष होने से विद्यमान नहीं ऐसा कहें तो?

महावीर- तब तो यह क्यों न माना जाए कि तुम्हें तो भूतों की शून्यता के बारे में संशय नहीं है, तो फिर किसको है ? यह क्या है ? और किसने शून्यता को जाना है। सारांश यह है कि दूसरे किसी को तो भूतों के अस्तित्व के बारे में संदेह नहीं है, किन्तु तुम्हें ही था और अब कहते हो कि मुझे भी सन्देह नहीं है, तो फिर यह चर्चा यहीं समाप्त हो जानी चाहिए। क्योंकि दूसरे व्यक्तियों को तो इन ग्राम-नगर आदि की सत्ता के बारे में किंचितमात्र भी सन्देह नहीं है। जिससे सर्वशून्यता का प्रश्न ही नहीं रहता।

इसलिए हे व्यक्त ! तुम्हें भी पृथ्वी, जल, अग्नि जो प्रत्यक्ष दिख रहा है, जैसे तुम अपने स्वरूप के बारे में सन्देह नहीं करते हो, वैसे ही उनके बारे में में भी सन्देह नहीं करना चाहिए। वायु और आकाश जो प्रत्यक्ष नहीं दिखते हैं, कदाचित् उनके बारे में संशय होना संभव है, किन्तु उस संशय का निवारण भी अनुमान से हो सकता है।

वायु और आकाश प्रत्यक्ष हैं

व्यक्त- वायु की सिद्धि का कौनसा अनुमान है ?

महावीर- स्पर्श आदि गुणों की गुणी अदृश्य होने पर भी विद्यमानता होनी चाहिए, क्योंकि वे गुण हैं। जैसे रूप गुण का गुणी घट है। इसलिए स्पर्श, शब्द, स्वास्थ्य, कंपादि गुणों का भी संपादक जो गुणी है वह वायु है। इस प्रकार वायु का अस्तित्व सिद्ध होने से उसके विषय में सन्देह को अवकाश नहीं है।

लघु कथाएँ

मैं जानता हूँ

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

बिहारी का एक दोहा

महाराजा जयसिंह का विवाह हुआ । नवोढ़ा सुन्दरी ने महाराज का तन-मन जीत लिया। वे रात-दिन उसी के साथ रहने लगे। वे राज-काज सब भूल गये। अब वे दरबार में भी अनुपस्थित रहने लगे। राज्य में अराजकता फैल गई। प्रजा की फरियाद सुनने वाला कोई नहीं रहा।

महाकवि बिहारी को यह बात खटक गई। वे महाराज के कृपापात्र थे। उन्होंने महाराज को समझाने के लिये एक दोहा उनके पास लिख भेजा। दोहा इस प्रकार था-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल ।
अली कली ही तें बन्ध्यो, आगे कौन हवाल ?।।

हे भ्रमर ! तुम तो केवल कली में फँस गये हो, उसमें पराग नहीं है, मधुर रस नहीं है और उसके विकसित होने का यह समय नहीं हैं। जब यह कली पूर्ण विकसित होगी, तब तुम्हारा क्या हाल होगा ? जरा सोचो तो सही ।

यह दोहा पढ़ते ही जयसिंह सारी बात समझ गए। अपने को कर्त्तव्य मार्ग पर लाने वाले बिहारी को उन्होंने अपना राजकवि बना दिया। कहा जाता है, महाराज बिहारी से रोज एक दोहा सुनते थे और बदले में उसे वे एक सुवर्णमुद्रा देते थे।

बिहारी ने जो दोहे बनाए वे 'बिहारी सतसई' के नाम से

प्रसिद्ध हैं। उनके दोहों के बारे में कहा जाता है कि वे -

सतसइया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर ।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर ।।

सवाल-जवाब

एक दिन गुंजा के साथ तुलने से अपमानित सोने ने सुनार से कहा-

सुन रे अरे सुनार तू, उत्तम मेरी जात ।
काले मुँह की चिरमी, तुली हमारे साथ ।।

यह सुनते ही गुंजा बोल पड़ी -

मैं हूँ वन की लाड़ली, लाल हमारा रंग ।
काला मुँह इससे हुआ, तुली नीच के संग ।।

अपमान अपमान सोने से सहन नहीं हुआ । वह बोला -

भोली चिरमी बावली, क्या है तेरी बात।
जो तू गुण की खान तो, जल ज्वाला में साथ ।।

सोने के इस आह्वान को आड़े हाथों लेते हुए गुंजा बोल पड़ी -

बन जाई बन में बढ़ी, बिकी नगर में आय ।
तू तो जले कलंक से, मेरी जले बलाय ।।

अब सोना क्या उत्तर दे । बेचारा सोना निरुत्तर हो गया ।

इसलिए कभी भी किसी व्यक्ति के साथ बात करते वक्त अपनी स्थिति देखकर शब्दालाप करना चाहिये, जिससे व्यक्ति का अपना स्थान बना रहे।

सोच-सोच कर बोलना, शब्द है जीवन-द्रव्य ।
जयन्तसेन इसका कभी, करो न व्यर्थ में व्यय ।।

अहंकार व्यक्ति को ऊर्ध्वस्थान की ओर न ले जाकर मौन रहने को बाध्य करता है या व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है ।

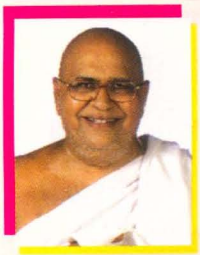

प्रश्नोत्तरी

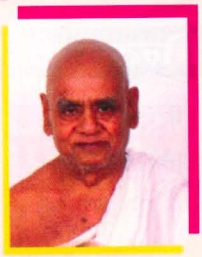

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. धर्म द्रव्य के कितने भेद होते हैं ?

उ. धर्म द्रव्य का कोई भेद नहीं है, वह एक अखंड द्रव्य है।

प्र. अधर्म द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उ. अधर्म द्रव्य का कोई भेद नहीं है। वह भी धर्मद्रव्य की तरह एक अखंड द्रव्य है और दोनों समस्त लोकाकाश में व्याप्त हैं।

प्र. आकाश के कितने भेद हैं ?

उ. आकाश एक ही अखंड द्रव्य है और सर्वव्यापी है। लेकिन जहाँ तक जीव, पुद्गल आदि द्रव्य रहते हैं, उसको लोकाकाश कहते हैं और जिसमें आकाश के सिवाय किसी द्रव्य का अस्तित्व नहीं पाया जाता उसे अलोकाकाश कहते हैं।

प्र. लोक का आकार कैसा है ?

उ. नाचते हुए भोपा के आकार जैसा लोक का आकार है। अथवा कमर पर दो हाथ रखकर पैर फैलाये पुरुष के जैसा है। लोक की मोटाई नीचे उत्तर और दक्षिण में सात राजू है, चौड़ाई पूर्व और पश्चिम में मूल भाग में सातराजू है। फिर ऊपर क्रमशः घटते-घटते सातराजू की ऊँचाई पर चौड़ाई एक राजू है फिर क्रमशः बढ़ते-बढ़ते साढ़े दस राजू की ऊँचाई पर चौड़ाई पाँच राजू है, फिर क्रम से घटते-घटते चौदह राजू की ऊँचाई पर एक राजू चौड़ाई है। कुल ऊँचाई चौदह राजू है।

प्र. राजू का क्या परिभाषा है ?

उ. एक हजार भार का गोला ऊर्ध्व लोक से इन्द्र या देव जोर से नीचे फैंके, वह छह महीने, छह दिन, छह प्रहर, छह घड़ी, छह पल में जितनी दूर जावे उसको एक राजू क्षेत्र कहते हैं।

प्र. भार का क्या परिमाण है ?

उ. तीन करोड़ इक्यासी लाख बारह हजार नौ सौ सत्तर मन का एक भार होता है।

प्र. लोक के कितने भेद हैं ?

उ. लोक के तीन भेद हैं- अधोलोक, तिरछालोक (मध्य लोक) और ऊर्ध्वलोक।

प्र. अधोलोक कहाँ से शुरू होता है ?

उ. समभूमि से नौ सौ योजन नीचे से अधोलोक शुरू होता है।

प्र. तिरछा लोक कहाँ है ?

उ. ऊर्ध्व लोक से नीचे और अधोलोक से ऊपर अठारह सौ योजन की मोटाई वाला एक राजू लंबा-चौड़ा तिरछा लोक है।

चिन्तन का चित्रांकण

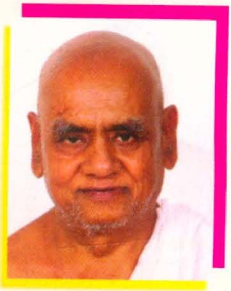

बैर का बदला बैर से नहीं

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

जब हम किसी की बुराई सोचते हैं अथवा किसी के साथ बुराई कर रहे हों तब पहले यह विचार करना चाहिए कि यदि मैं सामने वाले के स्थान पर हूँ और मेरे साथ ऐसा व्यवहार हो तो मुझ पर क्या बितेगी ? इस स्थिति को मैं पसन्द नहीं करता तब मुझे दूसरों को इस स्थिति में लाने का भी कोई हक नहीं है । जिस प्रकार सुख, प्रसन्नता तथा भलाई मुझे अच्छे लगते हैं, उसी प्रकार वे सभी के लिए पसंदगी हैं । मैं नहीं चाहता हूँ कि कोई मेरा बुरा करे। मुझे क्यों दूसरों का बुरा करना चाहिए। यह सिद्धान्त श्रेष्ठ है लेकिन इसको जीवन में लाना अत्यन्त कठिन होता है। मानव स्वभाव प्रतिरोध से युक्त है वह प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया करना चाहता है। वह प्रत्येक से अपना हिसाब चुकता करना चाहता है। वह सहनशीलता तत्काल खो देता है। प्रतिशोध की भावना नहीं होने पर बुराई करने की मनस्थिति समाप्त हो जाती है। प्रतिशोध मानव की मानसिक जटिलताओं का हल नहीं है, सहनशीलता ही सही जीवन पद्धति है। यह कोई ग्यारण्टी नहीं कि हम जिसका बुरा करने जा रहे हैं, वह हमारे साथ बदला नहीं भुलाएगा। उसके बदले का, हम पुनः बदले से उत्तर देंगे। इस प्रकार प्रतिशोध की एक अनन्त परंपरा की ओर हम अग्रसर हो जाएंगे। यह परम्परा तोड़ने का कार्य दूसरे करें, यह आशा नहीं करनी चाहिए। परम्परा पर पूर्ण विराम लगाकर हम अपनी मानवीयता का परिचय दे सकते हैं। बैर का बदला बैर से लेने पर बैर और अधिक बढ़ता है।

सत्ता का स्वभाव भ्रष्ट होता है। संसार, धार्मिक निष्ठा अथवा पापभीरूता सत्ता को भ्रष्ट होने से नियंत्रित कर सकते हैं लेकिन यह आसान नहीं है। परिस्थितियाँ एवं जीवन विलासों का आकर्षण उसे भ्रष्टता की ओर उन्मुख कर देते हैं। ऐसी स्थिति में सत्ता भ्रष्ट होकर अनीति को जन्म देती है। अनीति का फल अव्यवस्था है। नीति के अनुसार संचालन व्यवस्था का पोषक है इससे विपरीत अनीति विधि, विवेक तथा नैतिकता से पर है। उसका प्रवेश अव्यस्था को प्रक्षय देता है। अव्यवस्था से असन्तोष उभरता है क्योंकि

अव्यवस्था कभी भी जनहित या जनकल्याण नहीं देखती वह सदैव स्वहित व स्वअर्थ की ओर मुड़ती है। आम व्यक्ति से वह सत्ता की दूरी बढ़ा देती है। सत्ता दूर छिटकर एक काल्पनिक विश्व में तैरने लगती है जहाँ उसे अपने से ऊँचा कोई दिखाई नहीं देता। ऐसी सत्ता के प्रति असंतोष जागृत हो जाता है जो क्रमशः आक्रोश में बदलकर क्रान्ति को जन्म देता है। विश्व में जहाँ भी क्रांति हुई है उसका मुख्य कारण सत्ता का भ्रष्ट होना है, इतिहास में जितने भी युगों का पतन हुआ है उनके पीछे क्रमशः सत्ता का विलासी भ्रष्ट एवं जनविरोधी बनना है एवं जहाँ भी सत्ता भ्रष्टता की ओर उन्मुख हो गई है, उसका अंतिम पढ़ाव क्रांति ही है। क्रांति जनता से प्रारंभ होती है, वह मैदान में फलती-फूलती है एवं अपनी लपटों से सत्ता को भस्म कर देती है। भ्रष्ट सत्ता इतनी असहाय होती है कि वह क्रान्ति का मुकाबला नहीं कर पाती। जनशक्ति सबसे बड़ी एवं प्रभावशाली है जनशक्ति ही क्रांति का उद्‌गम होती है।

(क्रमशः)

छठा- कर्मग्रंथ

छठा कर्मग्रथः सम्पादक- जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म., प्रकाशक-दिव्य संदेश प्रकाशक ठि. सुरेन्द्र जैन मुंबई 400002 टेलि. (022) 40020120, मो. 9892069330 आवृत्ति - प्रथम, मूल्य- 160 रु., पृष्ठ 260 बहुरंगी कव्हर पृष्ठ। सफाई-छपाई-अच्छी।

जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का हिन्दी में यह 205 वां ग्रंथ है। कर्मग्रंथों का अभ्यास जैन धर्म की आधार शिला है। जैन दर्शन की तात्विक अट्टालिका की उपमा इसे दी जाती है। समय-समय पर कर्म के विवेचन के ग्रंथों की रचना हुई है। विद्वान लेखक आचार्यश्री ने पूर्व प्रकाशित हिन्दी व गुजराती प्रकाशनों का आधार लेकर इस ग्रंथ का विवेचन किया है जो सरल एवं सुबोध भाषा में होने के कारण सुज्ञजनों के लिये अध्ययनार्थ काफी उपयोगी है। आशा है यह प्रकाशन स्वाध्यायियों के लिये महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। इसमें छटवां-कर्मग्रंथ मूलसूत्र में भी दिया गया है तथा गाथाओं के साथ शब्दार्थ एवं विवेचन भी संयुक्त है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

मांसाहार से केवल विनाश

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

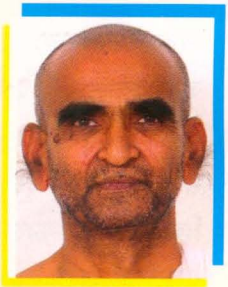

आज मानव भोग-विलास के लिए मांसाहार का सेवन कर निरंतर मृत्यु के गर्त में चला जा रहा है मानव अपने भोग-विलास के लिए प्राकृतिक संसाधनों को क्षति पहुँचा रहा है। कुछ समय पहले तक पृथ्वी पर भरपूर मात्रा में पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ उपलब्ध थी जो मानव को भोजन प्रदान करने में अपनी अहम भूमिकाएँ निभा रही थी वनस्पतियों और कल्पवृक्षों से बिना मेहनत के ही मानव को भोजन प्राप्त हो जाता था मानव की जरूरते भी सीमित थी परन्तु धीरे-धीरे मानव प्रगति के क्षेत्र में आगे बढ़ता गया वैसे उसकी भोग-विलासिता और जरूरतें भी बढ़ती गई।

वर्तमान सदी में तो वातावरण एकदम प्रदूषित हो गया है। लालच, क्रूर, अत्याचार, छल-फरेब का सहारा लेकर धर्म परायण संस्कृति में अधर्म का बीज बोकर हमारी भारतीय संस्कृति को विनाश के गर्त की ओर धकेल दिया है, संस्कृति, धर्म, वेद-पुराण वाले देश (भारत) में निरंतर मांसाहार का सेवन बढ़ता ही जा रहा है वहीं दूसरी तरफ चीन, अमेरिका जैसे मांसाहारी देशों में शाकाहार का तेजी से विकास हो रहा है कोई भी प्राणी जन्म से मांसाहारी नहीं होता है यहाँ तक की जब शेरनी एक शावक को जन्म देती है तो वह भी दूध का सेवन करता है। न कि रक्तका।

मानव प्रकृति की सबसे श्रेष्ठ कृति है उसमें विवेक, बुद्धि, दया, समर्पण तथा सभी प्रकार के अच्छे और बुरे भाव होते हैं। प्राकृतिक बनावट के आधार पर भी देखा जाए तो मानव का आहार मांसाहार नहीं है क्योंकि मांसाहारी पशुओं के अंग, व्यवहार और दिनचर्या मानव से बिल्कुल अलग है मांसाहारी प्राणी जीभ की सहायता से पानी पीते हैं उनके नाखून बड़े होते हैं और उनमें बुद्धि नहीं होती है जबकी मानव जो चाहे वैसा व्यवहार कर सकता है उसके पास विवेक और बुद्धि होती है। मानव एक समय में केवल एक ही बच्चे को जन्म देते हैं और उनका लालन-पालन ठीक प्रकार से करते हैं और अपने बच्चों के जीवन के लिए मानव अपना जीवन समर्पित कर देता है परन्तु जानवरों में ऐसा नहीं है भूख

लगने पर जानवर अपने ही बच्चों को मार के खा जाते हैं।

मांसाहार के संस्कार शरीर की आवश्यकता, परिस्थिति के आधार पर मानव या पशु-पक्षियों में आ जाते हैं। अगर धार्मिक नजरिये से देखा जाए तो मांसाहार घोर नरक एवं धार्मिक पतन का कारण है। किसी भी धर्म में हिंसा का समर्थन नहीं किया गया है। श्रीराम भगवान 14 वर्षों के अपने कठिन वनवास के दौरान वनों में भटकते रहे। परन्तु कभी भी उन्होंने अपनी भूख मिटाने के लिए किसी जानवर या पशु-पक्षियों का शिकार नहीं किया। वे अपने कष्टमय जीवन में भी उबले और फल-फूलों का सेवन कर शाकाहार की सात्विक परम्परा के निर्वाहक रहे। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए शाकाहार एक श्रेष्ठ आहार है जबकि मांसाहार हमारे शरीर के लिए हानिकारक है। मांस में यूरिक एसिड होने से मांस भक्षण करने वाले मानव की पेशाब तेजाब युक्त होती है और अण्डों में व्याप्त (डी.डी.टी.) डाईक्लोरोडाई फैनिल ट्राई क्लोरो ऐथेन से आंते विषैली हो जाती हैं। जिससे कैंसर, हाई-ब्लड प्रेशर और त्वचा की बीमारियाँ हो जाती हैं। मांसाहार बीमारियों का घर है क्योंकि पशुओं की सैकड़ों बीमारियां मांसाहार सेवन से हमारे शरीर में प्रवेश कर जाती हैं मांस का सेवन करने वाले प्राणी अक्सर यही सोचते है कि इससे वे ताकतवर और शक्तिशाली हो जाएंगे जबकि वे यह भूल जाते हैं कि सबसे ज्यादा ताकतवर हाथी है जो शाकाहारी है। अण्डा पूर्णतः मांसाहारी है क्योंकि उसमें जीव का वास होता है। मांस प्राप्त करने के लिए शाकाहार की आवश्यकता होती है। आज जितने रुपयों में एक किलो मांस आता है उतने ही रूपयों में 10 किलो अनाज आ जाता है अतः हमें शाकाहार का सेवन कर इस पृथ्वी को विनाश के गर्त से बाहर निकालना होगा। (क्रमशः)

हम जैसे भी हैं उसका कारण स्वयं ही हैं। यदि हम सुखी है तो उस सुख का आधार-स्तंभ ही हम स्वयं हैं और यदि हम दुःखी हैं तो दुःख के काँटे स्वयं ही बोये हैं। प्रत्येक प्राणी स्वयं-ही-स्वयं के लिए उत्तरदायी है। हर वेदना, हर साता के लिए हमारे द्वारा किये गये कर्मों की ही भूमिका है। कर्मोदय को या तो भोगना पड़ता है या काटना पड़ता है। लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें उदय आने पर भोगना ही पड़ता है। आखिर कार्य ही तो वह देहरी है जहाँ विवश होकर व्यक्ति को अपना माथा झुका देना पड़ता है। यदि आत्मबल मजबूत है और साधना दृढ़ हो, सोच सम्यक् हो तो दृढ़ - से - दृढ़ कर्मों के बंधन से हम मुक्त हो सकते हैं।

अध्यक्षीय पाती

अपनी अस्मिता की रक्षा करें

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जैन समाज के सम्बन्ध में यह तथ्य सर्व प्रचारित है कि यह समाज धनाड्य वर्ग है। इस कारण इसे धर्म के आधार पर देश में अल्पसंख्यक घोषित किया हुआ होने पर भी तत्सम्बन्धी लाभ प्राप्त नहीं हो रहे हैं। कुछ राज्यों में यह अल्पसंख्यक घोषित भी नहीं है, न ऐसे राज्यों में अल्पसंख्यक घोषित करवाने हेतु कोई गंभीर प्रयत्न है। जिन राज्यों में यह अल्पसंख्यक घोषित है, वहाँ उसे राज्य सरकार से अल्पसंख्यक होने के प्रमाणपत्र भी प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। जैन समाज की जनसंख्या के एक बड़े हिस्से को शासकीय तौर से प्राप्त होने वाली सुविधाओं की जानकारी भी नहीं है।

हकीकत यह है कि संपूर्ण भारत देश में रहने वाली जैन जनसंख्या की बहुमत संख्या आज भी ग्रामीण परिवेश में है। यों ग्रामों की तरक्की हमारे यहाँ हुई है जिसका सुप्रभाव ग्रामीण जैन आबादी पर भी है लेकिन शहरी जैन आबादी से यह आबादी सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी हुई है। इनकी समस्याओं के अध्ययन तथा उनके समाधान की महती आवश्यकता है। इस ओर ध्यान देकर प्रगति के कदम उठाये जाने आवश्यक हैं। शासन द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों को ग्रामीण जैन संख्या तक पहुंचाये जाने से इनके स्तर में सुधार संभव है।

श्रीसंघ के ग्रामीण क्षेत्रों में फैले हुए विस्तार को इस दिशा में कदम उठाने चाहिये। शहरी श्री संघों को इनकी समस्याएँ हल करने में रूचि लेनी चाहिये जैसे ग्रामीण क्षेत्र के जैन छात्र-छात्राएँ उच्च शैक्षिक अध्ययन हेतु बड़े शहरों में जाते हैं लेकिन उनके लिये शहरों में छात्रावास की अच्छी व्यवस्था नहीं होने के कारण उन्हें परेशानी है। वैसे तो जैन समाज के धर्मस्थलों की समग्र रूप से असुरक्षा है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी स्थिति अधिक खराब है। इन धर्मस्थलों की सम्पत्ति पर अजैन लोग कब्जा कर लेते हैं। वे बहुमत के दबाव में जैनों के गिनती के परिवारों को अव्यक्त रखते हैं। जैनों के लिये भी परिस्थितियां ऐसी हो जाती हैं वे अपनी पहचान के चिन्हों को भी खो देते हैं। उनकी पारिवारिक गतिविधियाँ ईतर धर्मों में आना जाना बढ़ाने की हो जाती हैं तथा शनैःशनैः वे उसी धर्म के बन जाते हैं। श्री संघों का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि वे अपनी अस्मिता को बचाये रखें।

अध्यक्षीय संदेश

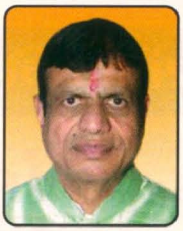

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

ज्ञानपीठ की अगली परीक्षा हेतु प्रक्रिया प्रारंभ करें

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के संचालन में स्व. परम पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वर म.सा. द्वारा स्थापित ज्ञानपीठ का उद्देश्य धार्मिक ज्ञान को घर-घर तक पहुंचाना है। वर्ष 2019 की परीक्षा आगामी जुलाई मास में होगी। इसके लिए जिन स्थानों पर कम से कम दस परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा केन्द्र स्थापित किये जाएंगे।

धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विगत तीन वर्षों से मैं (नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू) ने अपनी पूज्य मातुश्री विजयाबहन बचुभाई चिमनलाल धरू परिवार की स्मृति में श्री सम्यग ज्ञान अभिवृद्धि योजना लागू की है तथा धार्मिक पुरस्कारों का लाभ लिया है। इस वर्ष भी यह पुरस्कार योजना जारी रहेगी जो धरू परिवार का विनम्र कदम है। जहाँ परीक्षा केन्द्र नहीं है नया परीक्षा केन्द्र स्थापित किया जा सकता है। जहाँ भी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या दस या इससे अधिक होगी परीक्षा केन्द्र बना दिया जायेगा।

प्रत्येक कक्षा के लिये फार्म अलग-अलग भरा जाना है। परीक्षा प्रवेश पत्र मंदसौर से मंगवाये जा सकते हैं तथा मंदसौर भिजवाने की अंतिम तारीख 30 अप्रैल 2019 है। इस दिनांक तक प्रवेश पत्र आपको मंदसौर भेज देने हैं। आपको जितनी कक्षाओं के लिये प्रवेश पत्र आवश्यक हो कृपया अवगत करें ताकि आपको भिजवाये जा सकें। इस वर्ष कक्षा 1 से 6 तक की परीक्षाएँ होंगी।

धार्मिक शिक्षा के इस महायज्ञ में योगदान प्रदान करने हेतु सक्रियता से प्रयत्नशील हम सभी को होना है। परिषद् परिवार से आशा है कि सभी इकाइयां पूरे मनोयोग से इस सद्कार्य को सफल बनाने में जुट जाएंगी।

संपादकीय

जैनों के सन्मुख विकराल प्रश्न

भारत वर्ष हमारा देश है, यह हमारी मातृभूमि है । श्रमण संस्कृति का उद्भव यहीं हुआ है तथा यहीं की जलवायु में इसका पोषण हुआ है। यह सही है कि कुछ शताब्दियों पूर्व से जैन व्यापारी विदेशों में व्यवसायार्थ निर्गमित होते रहे हैं तथा आज भी जॉब या शिक्षा या वाणिज्य के उद्देश्य से कई देशों में जैन परिवार जाते रहते हैं । कई वहाँ बस भी गये हैं। अमेरिका में प्रवासी जैनों की संख्या काफी है तथा दिनोंदिन बढ़ रही है। एक आकलन के अनुसार अमेरिका में जैनों के निवास का आंकड़ा दो लाख भी पहुँच जाय तो आश्चर्य नहीं है। अमेरिका, कनाडा तथा इंग्लैण्ड के अतिरिक्त कई देशों में जैन कार्यरत हैं। फिर भी उनका देश भारत ही है। भारत की वर्तमान स्थिति यह है कि यहाँ जैनों की आबादी लगातार घट रही है तथा जैन संस्कृति कमजोर पड़ रही है। जो एक वास्तविकता है इस ओर ध्यान दिया जाना ज्वलंत प्रश्न है ।

भारत के कई क्षेत्रों में जैन धर्मावलम्बियों का अस्तित्व ह्रास की ओर है। केन्द्रीय मंत्रिमण्डल तथा विशेषतः मध्यप्रदेश के मंत्रिमण्डल में कोई जैन सदस्य नहीं है। लोकसभा में भी जैनों की संख्या नगण्यता को स्पर्श कर रही है। इसके तीन कारण हैं- प्रथम हमारे भारत देश में हर क्षेत्र में कट्टरता बढ़ रही है जिसके कारण बड़ी संख्या वाले जाति समूह संगठित गिरोह सरीखे बन कर देश की सत्ता तक को प्रभावित कर रहे हैं। फलतः सत्ता में जैनों की भागीदारी कम होती जा रही है। द्वितीय आधुनिक साधनों की आंधी ने सर्वाधिक क्षति जैनों को पहुंचाई है। इस कारण परिवारों के टूटने, छोटे होने, जैन संस्कारों की कमी होने तथा अन्य धर्मों के प्रति आकर्षित होने के दुष्परिणाम सामने हैं। कई जातियां ऐसी हैं जिनमें जैन तथा ईतर दोनों सम्मिलित हैं। इनमें युग के अनुसार जैन परिवारों का अजैन संस्कृति की ओर झुकाव बढ़ रहा है। ईतर धर्मस्थलों की ओर प्रवृत्ति भी हो रही है। तृतीय-राजनीति वोट

बैंकवाली बन गई है। जैनों की और संख्या इतनी नहीं है कि वह किसी वोट बैंक का आकार स्थापित कर सके। अब तो लोकसभा तथा विधानसभा में जैनों का विजयी होना भी कठिन होता जा रहा है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् गठित संविधान सभा में जैन सदस्यों की संख्या पांच थी तथा उपरांत चुनाव में लोकसभा में चालीस पचास जैन थे लेकिन अब जैनों का विजयी होकर आना दुष्कर हो गया है। किसी समय मध्यप्रदेश में इंदौर और सागर, राजस्थान में पाली और बाड़मेर, उत्तरप्रदेश में आगरा, दिल्ली में चांदनी चौक लोकसभा की दृष्टि से जैन सीट कहे जाते थे लेकिन अब इन सभी से जैन प्रतिनिधि पाले से बाहर हो चुके हैं। परिवर्तित ऐसी सभी स्थितियों पर जैनों का कोई चिन्तन नहीं है।

यदि राजनीति में जातिगत कट्टरता की यही हालत चलती रही तो लोकसभा तथा विधानसभा तो ठीक किसी पंचायत का सरपंच बनने या नगरपालिका का पार्षद निर्वाचित होने के लिए जैन तरस जायेंगे। पूरे देश में एक वार्ड भी ऐसा नहीं है जहाँ जैनों को बहुमत प्राप्त हो। इस तरह देश में जैनों की पहचान पर खतरा मंडराने लगा है।

इन वर्षों में एक दूसरे से अभिवादन करने के लिये 'जय जिनेन्द्र' उच्चारण किये जाने की आदत में अवश्य ईजाफा हुआ है। जैसे मुसलमानों के लिये 'अस्सलामवालेकुम' सिखों में 'संतश्री अकाल', इसाइयों में 'गुड मार्निंग' प्रचलित है वैसे ही जैनों के लिये 'जय जिनेन्द्र' का प्रचलन होता जा रहा है लेकिन यह समस्या का हल नहीं है। जैन धर्मावलम्बियों की संख्या घट रही है। अनोप मंडल जैसे जैन विरोधी संगठनों का विस्तार हो रहा है तथा जैन समाज उनका मुकाबला करने में भी विफल रही है। इसका कारण जैनों की घटती हुई जनसंख्या है।

तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के युग में उनके पुत्र भरत ने चक्रवर्ती पद प्राप्त करने के लिये छह खंडों के राज्य पर आधिपत्य स्थापित किया था। उसके पश्चात् दस लाख वर्षों का समय व्यतीत हो चुका है। सैंकड़ों जैन राजा हुए हैं जिनने युद्ध कर अपना साम्राज्य स्थापित किया है। क्या ये हमारे आदर्श नहीं हैं? जैनों के लिये आदर्श केवल धनशक्ति सम्पन्न ही हैं, यह सोच हमारा त्रुटी पूर्ण है।

-सुरेन्द्र लोढ़ा
सम्पादक

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

अभयकुमार ने गुप्तचरों के खाने के लिये मीठे जामु नीचे गिराए गुप्तचर जामुन साफ कर खाने लगे। अभय ने कहा कि ध्यान से खाना कहीं इनकी गरमाहट से मुंह न जल जाए। गुप्तचर कुछ विचलित हुए फिर जामुन खाकर राजगृह चले गये और राजा से सारी बात बताई कि एक बुद्धिमान बालक गाँव में रह रहा है जो गाँववालों की सहायता कर रहा है और उसी बच्चे की बुद्धि के बल पर गाँववाले सवासेर बने हुए हैं। राजा श्रेणिक सोचने लगा कि ऐसा बुद्धिमान बालक कौन है जो मेरी सारी योजनाओं को विफल कर देता है ? श्रेणिक उस बालक से मिलना चाहते थे उनके मन में उस बालक से मिलने की उत्सुकता थी। उस बालक से मिलने के लिए श्रेणिक ने तुरन्त एक योजना बनाई। उद्घोषकों (ढोल नगाड़े बजाने वाले) से कहा कि जाओ और नगरों और उपनगरों में यह घोषणा कर दो कि महाराज श्रेणिक की बहुत कीमती मुद्रिका (अंगूठी) नगर स्थित कुएं में गिर गई है और कुआं बिल्कुल सूखा (खाली) है और जो व्यक्ति किनारे पर खड़ा होकर उस मुद्रिका को निकाल देगा उसे राजकीय सम्मान से नवाजा जाएगा और पाँच सौ मन्त्रियों के ऊपर महामंत्री पद से अलंकृत किया जाएगा। यही नहीं राज्य की कन्या भेंट की जाएगी। सारे नगर और उपनगरों में खबर फैल गई। प्रतियोगिता वाले दिन सब नगर/उपनगर के लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। बहुत से विद्वान लोग प्रतियोगिता में भाग लेने आए पर किसी को भी इसका उपाय नहीं सूझ रहा था। सब एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे और पूछ रहे थे कि यह मुद्रिका कैसे बाहर निकलेगी, परन्तु किसी के भी पास इसका उपाय नहीं था तभी लोगों की भीड़ में से एक छोटा बालक (अभयकुमार) निकलकर राजा के सामने आकर खड़ा हो गया लोगों के समझ में नहीं आ रहा था कि यह बालक कौन है यहाँ क्यों आया है ? दिखने में तो चतुर और बुद्धिमान दिखाई पड़ता है। लोगों की उत्सुकता देख अभयकुमार ने कहा कि क्या आपके नगर में ऐसा कोई चतुर या बुद्धिमान व्यक्ति नहीं है जो इस मुद्रिका को बाहर निकालकर नगर का नाम रोशन कर

सके ? तब वहाँ इकट्ठा लोगों ने जवाब दिया कि आकाश के तारे तोड़ना क्या सरल है ? क्या तुम इस असंभव कार्य को संभव बना सकोगे ? तब अभयकुमार ने शांत स्वभाव से कहा कि यह तो छोटा सा काम है और इसके लिये साहस की जरूरत नहीं है। यह छोटा सा कार्य है और मैं इसे बड़ी आसानी से कर सकता हूँ।

अभयकुमार की बातें सुनकर लोगों को लगा कि यह छोटा मुँह और बड़ी बात कर रहा है। जिस काम को मगध के बड़े तेजस्वी प्रतापी और विद्वान नहीं कर पाए उस कार्य को यह छोटा-सा बालक चुटकियों का काम बता रहा है। लोगों की भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें सुन अभयकुमार हँसने लगा और कहा मगध बड़े-बड़े तेजस्वी और प्रतापी वीरों की भूमि रही है। ऐसे छोटे से कार्य के लिए मगध का अपमान मत कीजिए। मैं अपने मुँह मिया मिट्ठू नहीं बनना चाहता पर अगर आप और महाराज आज्ञा दें तो मैं इस कार्य को सरलता और सफलतापूर्वक कर सकता हूँ। महाराज आश्चर्य चकित होकर ये सब देख व सुन रहे थे। महाराजा ने कहा कि ठीक है हम तुम्हें इस कार्य को करने की आज्ञा देते हैं और तुम्हें जिस किसी वस्तु या साधन की आवश्यकता होगी उसकी तुरन्त व्यवस्था की जाएगी। बालक ने राजा की बात का सम्मान कर अपना कार्य प्रारंभ किया। सर्वप्रथम उसने गोबर मंगवाकर मुद्रिका के ऊपर डाल दिया जिससे मुद्रिका गोबर में धंस गईं फिर गोबर के ऊपर घास-फूंस डालकर उसमें आग लगा दी, आग के कारण गोबर सूख गया और मुद्रिका उसमें धंस गई।

(क्रमशः)

चिन्तन नवकार का

चिन्तन नवकार का - पूर्वा जैन 'जोबटकर', प्रकाशक, श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद, प्रथमावृत्ति-1000, मूल्य-पंद्रह रूपये, पृष्ठ संख्या 86, प्राप्ति स्थान- श्री जयंतसेन म्युजियम, मोहनखेड़ा तीर्थ रोड़, पो. राजगढ़, जि. धार, म.प्र., कव्हर पृष्ठ-बहुरंगी आकर्षक, छपाई-सफाई-उत्तम।

लेखक ने नवकार मंत्र पर अपनी शैली में चिन्तन कर उसकी व्याख्या युवाओं के मनोविज्ञान को दृष्टिगत कर स्पष्ट की है। इससे श्री नवकार मंत्र की साधना श्रद्धापूत तथा आस्था का विषय बनती है। पुस्तक पठनीय है। इससे जीवन के रहस्य की समझ उत्पन्न होती है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

ये उस समय की बात है जब पांचाल (वर्तमान में पंजाब नाम से जाना जाता है) जनपद पर जितशत्रु नाम के राजा का आधिपत्य था और पांचाल (पंजाब) जनपद की राजधानी काम्पिल्यपुर नगर में थी काम्पिल्यपुर नगर बहुत ही विशाल, वैभव और समृद्ध था अर्थात नगर में किसी प्रकार कि कोई कमी नहीं थी। जनता अपने दैनिक कार्यों को आसानी से करती और सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी। चूंकि पांचाल (पंजाब) नगर राजधानी होने के कारण व्यापार-व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र था और बड़े-बड़े व्यापारी नगर में व्यापार करने के लिये आते-जाते रहते थे अतः नगर में धन-सम्पदा की कोई कमी नहीं थी।

राजधानी में वहाँ के राजा जितशत्रु का विशाल और भव्य महल बना हुआ था उस महल में राजा जितशत्रु की लगभग 1000 रानियाँ थीं जो अनुपम सौन्दर्य और गुणों की धनी थीं। इसी समय भारतीय संस्कृतियों के आदर्श चार वेद ऋषिवेद, सामवेद, यजुर्वेद और अर्थवेद की धनी और ज्ञाता चोक्षा नाम की एक विदुषी संन्यासिनी मिथिला नगरी में रहती थी और अपने आसपास के गाँवों, नगरों और दूसरे राज्यों में जाकर अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाती और लोगों को धर्म, दानपुण्य और सत्कर्मों का पाठ पढ़ाती थी। एक दिन चोक्षा गेरूए (भगवां) रंग के कपड़े पहनकर हाथ में त्रिशूल और कमण्डल लेकर अनेक संन्यासियों के साथ अपने मठ से मिथिला के राजा के महल की ओर प्रविष्ठ हुई। वहाँ जाकर चोक्षा एवं उसकी साथी अन्य संन्यासियों ने भूमि पर कुछ जल की बूंदे डाली और आसन बिछाकर बैठ गई और धर्म और दानपुण्य की शिक्षा और प्रवचन देने लगी, इन प्रवचनों को मिथिला की राजकुमारी भगवती मल्ली ध्यानपूर्वक सुन रही

थी।

इन दानधर्म, पाप-पुण्य के प्रवचनों को सुनकर राजकुमारी मल्ली ने चोक्षा (सन्यासिन) से प्रश्न पूछा कि 'आदरणीय संन्यासिन !

तुम्हारे संन्यासिन जीवन में' धर्म का मूल क्या है ? तब चोक्षा ने भगवती मल्ली के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि हमारे धर्म को सुबोध, सरल और सोचमूलक बताया गया है और इसका उत्तर देते हुए चोक्षा ने कहा कि जब हमारे धर्मों (नियमों) में कोई वस्तु विशेष अगर मैली (अपवित्र) हो जाती है तो उसे मिट्टी और पानी से धोकर साफ कर लेते हैं और इस प्रकार वह वस्तु या व्यक्ति पवित्र हो जाता है और बिना किसी रुकावट के हम स्वर्ग में पहुँच जाते हैं और मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। (क्रमशः)

उत्तराध्ययन सूत्र

श्रमण प्रभु महावीर की अंतिम देशना

पावापुरी में भगवान महावीर अपनी मुक्ति के द्वार पर खड़े हैं और संपूर्ण चैतन्य जगत को अपना अंतिम सदेश दे रहे हैं। भगवान महावीर की यह अंतिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र में संकलित है।

उत्तराध्ययन सूत्र जैन धर्म की गीता है। इसका वैसा ही महत्व है, जैसा ईसाइयों के लिए बाइबल का, मुस्लिमों के लिए कुरान का, सिक्खों के लिए गुरूग्रंथ साहब का और बौद्धों के लिए त्रिपिटक का है। यदि उत्तराध्ययन सूत्र समझ लिया और अपना लिया तो मानो पूरा जैनत्व समझ और अपना लिया। जैन दर्शन के लगभग हर विद्वान थे, हर लेखक चिंतक महामुनि और महासती ने उत्तराध्ययन सूत्र का प्राकृत भाषा से अन्य भाषाओं में अनुवाद किया है, इसकी व्याख्या की है और टीकाएं लिखी हैं। जैन दर्शन में उत्तराध्ययन सूत्र का महत्व, गरिमा और प्रासंगिकता इसी तथ्य से रेखांकित है कि दीपावली महापर्व के पावन अवसर पर इसकी सर्वत्र वांचना होती है। यह भगवान महावीर की मानवता के नाम वसीयत है। जैसे व्यक्ति अपने जीवन की अंतिम वेला पर शुद्ध मन से वो उद्घाटित करता है, जो वह जीवन भर नहीं कर पाता, जिसे वह सबसे ज्यादा उपयोगी और अपनी भावी पीढ़ी के लिए सार्थक और मागदर्शक समझता है। उसी रूप में उत्तराध्ययन सूत्र, श्रमण प्रभु महावीर की अंतिम वाणी, उनकी साधना, उनके तप और उनके ज्ञान का मानवता के लिए अमर अनुदान है। ज्ञान के इस एवरेस्ट को निहारने का प्रयास करें, ज्ञान की इस गंगा में उतरने का साहस करें।

– प्रो. रतन जैन

प्रासंगिकम्

सर्वधर्मशिरोमणिः - 10 यति धर्म

(पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी)

व्यवहार जगत में भी यह स्पष्ट दिखता है कि बिना प्रयोजन कोई प्रवृति नही करता। लेकिन प्रवृति की सफलता-निष्फलता का आधार परिणाम पर होता है। जैसे भोजन की प्रवृत्ति से भूख मिटती है, पानी पीने की प्रवृत्ति से प्यास मिटती है, दवाई लेने से व्याधि मिटती है। परिणाम नही मिलने पर प्रवृत्ति सफल नहीं कही जाती है। आध्यात्मिक जगत में भी यही विधान है। आत्मिक शुद्धि के लिये अनेकविध धर्म क्रियाओं का विधान शास्त्रों में किया गया है। जिसे 'धर्म' कहा जाता है।

आभ्यन्तर शुद्धि होने पर ही धर्म सफल है, ऐसा कह सकते हैं। धर्म से हमें क्या फल प्राप्त होता है, यह बताते हुए योगसार ग्रन्थ में लिखा है -

यत्र साम्यं, तत्र धर्म। जहा साम्य है, वहा धर्म है।।

अर्थात् साम्य ही धर्म का फल है। समभाव की प्राप्ति धर्म की सफलता है। धर्म का परिणाम समता है।

समता-समभाव-साम्यता का विस्तृत स्वरुप योगसार, अध्यात्मकल्पद्रुम प्रशमरति, ज्ञानसार, अध्यात्मसार, योगशास्त्र आदि अनेक ग्रन्थों में लिखा गया है। जैसे मान-अपमान, निंदा-प्रशंसा,मिट्टी-स्वर्ण, जन्म-मरण, लाभ-नुकसान, दरिद्र-अमीर, शत्रु-मित्र, सुख-दुःख, इष्ट-अनिष्ट, आदि विषयों में समभाव रखना श्रेष्ठ तत्व है। हर स्थिति को प्रसन्नता से स्वीकार करना चाहिये।

ऐसा 'समभाव' जहाँ है, वहा ही धर्म है। धर्म क्रियाओं से समता की प्राप्ति न हो तो समझना लेना कि वह धर्माभास है। राग-द्वेष की विषमता से मुक्ति के लिये 'समता' श्रेष्ठ उपाय है।

'समता' प्रदान करनेवाला धर्म अनेक प्रकार का है, जिसमें मुख्य 'क्षमा' आदि 10 प्रकार का धर्म श्रेष्ठ है।

1. **क्षमा** – अपराधी पर द्वेष न करना। क्रोध त्याग करना।
2. **मार्दव** – नम्रता धारण करना, अहंकार त्याग करना।
3. **आर्जव** – सरल बनना, माया का त्याग करना।
4. **मुक्ति** – संतोष रखना, लोभ का त्याग करना।
5. **तप** – इच्छा का निरोध करना।
6. **संयम** – 5 महाव्रत, कषायजय आदि 17 प्रकार के संयम का पालन करना ।
7. **सत्य** – झूठ का त्याग करना।
8. **शौच** – मन, वचन-काया की पवित्रता रखना।
9. **आकिन्चन्य** – सर्व पदार्थों की ममता का त्याग करना।
10. **ब्रह्मचर्य** – चतुर्थव्रत का पालन करना।

10 यति धर्म की विशद विवेचना एवं स्वरुप नवतत्व, योगशास्त्र, द्वादश भावना आदि ग्रन्थों में लिखा गया है। यह यति धर्म सर्व विरति जीवन में सम्पूर्ण रूप से पालन हो सकता है। इसीलिये इसे 'यति धर्म' कहते हैं। क्षमादि धर्म फूल जैसे हैं, वो समतारुपी उद्यान में ही खिलते हैं। रागादिभाव कचरे का ढेर है, जिसमें फूल नही खिलते। अतः समतारुपी चित्त की प्राप्ति करना ही धर्म की सफलता है।

साम्यं समस्तधर्माणां, सारं ज्ञात्वा ततो बुधाः ।
बाह्यं दृष्टिग्रहं मुक्त्वा, चित्तं कुरुत निर्मलम् ।।

(योगसार)

हे सुज्ञजनों ! अतः सभी धर्मों का सार समता है, ऐसा जानकर बाह्य दर्शनों का कदाग्रह त्याग कर चित्त को निर्मल करो।

।। शास्त्रवचनम् ।।

श्रमणः किं स्वरूपम् ?

(पुण्यसम्राट् ज्ञानञ्जनम् पर्व–पाटण)

संजोगा विप्पमुक्कस्स	–	द्रव्य एवं भाव संयोगो से सर्वथा रहित
उज्जुदंसिणो	–	संयमधर्म में प्रतिबद्ध
पंच निग्गहणा	–	पांचों इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाले
परिसहरिऊदंता	–	परिषहरूपी शत्रुओं का दमन करने वाले
लहुभूयविहारिणं	–	वायु की तरह अप्रतिबद्ध विहार करने वाले
णिअत्तग्गदुक्खे	–	आग्रहदुःखों से निवृत्त
पसंतगंभीरासया	–	प्रशांत एवं गंभीर चित्तवाले
सावज्जजोगविरया	–	सावद्ययोगो से रहित
पंचविहायारजाणगा	–	पंचाचार का पालन करने वाले
परोवयारनिरया	–	परोपकार करने में सदा तत्पर
पउमाइनिदंसणा	–	पद्मकमल की तरह निर्लेप रहने वाले
झाणज्झयणसंगया	–	ध्यान एवं स्वाध्याय में मग्न रहने वाले
समलेटठुहुकचणे	–	मिट्टी एवं स्वर्ण को समान गिनने वाले
समसुत्तमित्ते	–	मित्र एवं शत्रु के प्रति समान चित्तवाले
परमसुहसभए	–	प्रशमसुखों से युक्त
विदितसंसारस्वभावाः	–	संसार के स्वभाव को समझने वाले
परित्यक्तसमस्तसङ्गा	–	सर्व सङ्ग का त्याग करने वाले
लोकव्यापाररहितस्य	–	लोक व्यापार से दूर रहने वाले
साम्यामृतविनिर्मग्नो	–	समता रूपी अमृत में मग्न रहने वाले
मुणिणो सययं जागरंति	–	मुनि सदा जागृत होते हैं ।

आधार – पंचसूत्र, दशवैकालिक सूत्र, प्रशमरति, योगसार, उत्तराध्ययन सूत्र, आचारांग सूत्र आदि

कालचक्र तथा उसके आरे

(मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

वर्ग	मेष	9 महिने 19 दिन	गर्भकाल
कुमारावस्था	5 लाख पूर्व	14 लाख पूर्व 20 पूर्वांग	राज्यावस्था
गृहस्थ काल	19 लाख पूर्व 20 पूर्वांग	राजा	पद
पत्नी का नाम	प्रियदर्शना	18 –	पुत्र पुत्री
दीक्षा तिथि	ज्येष्ठ सुदि 13	बनारस सहसाम्रवन	दीक्षा भूमि
दीक्षा शिबिका	मनोहरा	1000 के साथ	कितने मनुष्यों के साथ दीक्षा ली
दीक्षा के दिन तप	2 उपवास	2 दिन बाद	कितने दिन बाद पारणा किया
प्रथम पारणे का स्थान	पाटलीपुर	महेन्द्र	प्रथम पारणा किसके घर किया

दीक्षा बाद प्रथम पारणे में मिला	खीर	9 मास	छद्मावस्था
केवल ज्ञान तिथि	फाल्गुन वदि 6	बनारस	केवल ज्ञान भूमि
जिस वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ	सरीस वृक्ष	विशाखा	केवल ज्ञान नक्षत्र
केवल ज्ञान के दिन तप	2 उपवास	फाल्गुन वदी 6	शासन स्थापना
शासन यक्ष	मातंग	शांतादेवी	शासन यक्षिणी
केवल ज्ञान पर्याय	9 मास 20 पूर्वांगन्यून 1 लाख पूर्व	95 गणधर	गणधरों की संख्या
प्रथम गणधर	विदभ	3 लाख	साधुओं की संख्या
साध्वियों की संख्या	4 लाख 30 हजार	विदर्भ	प्रथम शिष्य

प्रतिक्रमण

(संकलन – श्री सुरेन्द्र गंग)

84 लाख जीव योनी में भ्रमण करता हुआ एक जीव जब मानव योनी में जन्म लेता है तब आता अकेला ही है लेकिन इस जगत में उसके साथ नाना सम्बन्ध स्वतः जुड़ जाते हैं यानी मानव योनि में आते ही जीव किसी का पुत्र, भाई, काका, मामा, काका हो तो पुत्री, बहन आदि सम्बन्ध जुड़ जाते हैं। जन्म देने वाले के सम्बन्ध भी बढ़ जाते हैं। पिता-माता, दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची स्वतः ही जुड़ जाते हैं यानी उस जीव का उस परिवार से कर्म बन्धन स्वतः जुड़ जाता है। इसके साथ ही अष्टकर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, नाम, गौत्र, आयुष्य, अंतराय, से जुड़ाव भी हो जाता है। इन अष्टकर्मों के कारण ही शरीर, रंग, रूप, गुण, बुद्धि, दृष्टि, आवाज, मोह, राग, द्वेष आदि जो पूर्व जन्म में बंध किए गए थे वे दृष्टि गोचर होने लगते हैं। पुराने बंध किए हुए कर्म समय के हिसाब से प्रगट होते हैं। अज्ञान भावदशा (0-8 या 10 वर्ष) तक पूर्व रोपित कर्म ही कार्य करते हैं परन्तु ज्ञानदशा (10 वर्ष से अंतिम समय तक) आयुष्य कर्म को छोड़कर सभी कर्म का बंधन हर पल होता रहता है। आयुष्य कर्म का बंध एक बार होता है एवं उसकी विधी का प्रकार अलग है। परन्तु इन सात कर्मों को यदि क्षमा भाव से रोज प्रतिक्रमण कर लेते हैं तो वे बंध में न बंधकर नष्ट हो सकते हैं, क्षीण हो सकते हैं व उदय में नहीं आ सकते हैं इसके लिए हमारे ज्ञानी भगंवत ने आचार्य भगवंत ने एक विधि बताई है वह है प्रतिक्रमण, जो सिर्फ हमारे जैनधर्म में प्रतिपादित होती है इन सात कर्म में जो रोज अनजाने में बंध जाते हैं । इससे कुछ कर्म, हलके व कुछ भारी होते हैं। इन कर्मों को अगर रोज प्रतिक्रमण करते हैं तो बंध की श्रेणी में नहीं आते हैं, रोज न कर सके तो पाक्षिक प्रतिक्रमण करने से 15 दिवस में बंध होते हैं वे बंधते नहीं व क्षीण हो जाते हैं. अगर क्षणिक न कर सके तो चौमासी (चारमाह) प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिए व चौमासी न कर सके तो निर्विकार भाव से संवत्सरी (साल में एक बार) प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिए। जिससे आगामी भव में हमें भुगतना नहीं पड़ें। अगर साल में एक बार प्रतिक्रमण न कर पाए तो ये सातों कर्म दोषानुबंध में परिवर्तित हो जाते हैं जिनका भुगतान हमें आगामी भव-भव में करना पड़ता है। इसके

अनेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। जैसे महाराज श्रेणिक व उनके पुत्र कुणाल का अनुबंध सात-सात भव तक चला।

गज सुकुमाल मुनि, मरिची भव में एक लाख भव पूर्व बंधा हुआ (नीच गौत्र कर्म का बंध) भगवान महावीर के समय में भुगतान हुआ।

प्रतिक्रमण सूत्र कंठस्थ न होने पर भी या अर्थ का ज्ञान न होने पर भी विनय और बहुमान पूर्वक अत्यंत श्रद्धा भाव से हाथ जोड़कर हर सूत्र की मुद्राएं, वांदणा आर्वज विधि इत्यादि का पालन करते हुए जीव बहुत से कर्म की निर्जरा की साधना कर लेता है।

27 दिवसीय आत्मोद्धार आयंबिल यात्रा सफल बनाएं

पुण्य सम्राट, लोकसंत, युग प्रभावक स्व. जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. के पट्टधर धर्म दिवाकर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा सूरिमंत्र आराधक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के पवित्र सान्निध्य में आगामी 23 मई 2019 को राजनगर (अहमदाबाद) में सम्पन्न होने जा रहे आत्मोद्धार 3 की सफलता के लिये अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा दि. 27 अप्रैल से प्रारंभ की जा रही 27 दिवसीय आत्मोद्धार आयंबिल यात्रा में समस्त श्रीसंघों से निवेदन है कि वे इसमें पूरे उत्साह से भाग लेते हुए अपने श्रीसंघ का नाम लिखावें तथा निश्चित दिनांक को अधिकाधिक आयंबिल अपने यहाँ सम्पन्न करवाएं। जय जिनेन्द्र! जय राजेन्द्र ! जय जयवंत !

चैतन्य काश्यप
(राष्ट्रीय परामर्शदाता)

वाघजी भाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

शांतिलाल रामानी
(राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष)

सुरेन्द्र लोढ़ा
(राष्ट्रीय महामंत्री)

अ.भा. श्री सौधर्मबृत्योपगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ

मांसाहार सबसे बड़ा पाप

(जैन जसराज देवड़ा, धोका)

भारतीय संस्कृति आर्य संस्कृति की आधार शिला है। आर्य संस्कृति का आहार भोजन शुद्ध शाकाहार ही रहा तभी हजारों वर्षों बाद भी जन मानस श्रमण संस्कृति के संस्थापक ऋषभ देव व चौबीस तीर्थंकर, गणधर चक्रवर्ती, राम, श्री कृष्ण, बुद्ध, जीसस आदि महापुरुषों ने इस भोजन से जीवन निर्माण कर स्व पर का कल्याण किया । लेकिन दुर्भाग्य से आज मानव अपनी करूणा भावना छोड़कर तेजी से हिंसा की दिशा में प्रवृत्त होते जा रहा है। मांसाहार एक तामसिक आहार है। मांसाहार से मनुष्य क्रूर, करूणाहीन, हिंसक, कामी, क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है। वैज्ञानिक परीक्षणों और निष्कर्षो से भी यह सिद्ध हो चुका है कि मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार अधिक उत्तम पौष्टिक, सुपाच्य और स्वास्थ्य प्रद होता है। जैसा खावे, अन्न, वैसा होवे मन उक्ति के अनुसार आहार का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। मांसाहार मनुष्य को हिंसक बनाता है। अपना पेट भरने के लिए किसी बेकसूर प्राणी का पेट काटना सबसे बड़ा पाप है। बूचडंखाने और मांस निर्यात की नीति ने भारत की प्रतिष्ठा, अस्मिता व मूल्यों को तहस-नहस कर दिया है। देश में सर्वत्र प्रदूषण फैल गया है अमूल्य जल की कमी हो रही है। शाकाहार को बढ़ावा देकर हमें भगवान महावीर का अमर संदेश- 'जीओ और जीने दो' को सारी दुनिया में पहुंचाना है। भारतीय संस्कृति में जो महत्व गंगा नदी का है, वही महत्व जीवन में अहिंसा का है। मांसाहार धार्मिक और नैतिक दृष्टि से न्यायोचित नहीं, स्वास्थ्य की दृष्टि में भी हितकर नहीं और आर्थिक दृष्टि से शाकाहार की अपेक्षा मँहगा पड़ता है। मांसाहार मानवता के नाम पर एक कलंक है। कलंक कर्क बाइड ने अपनी पुस्तक

'हमारा भोजन और विश्व शान्ति' में ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि मांस भक्षण में शरीर बलवान होने की बजाय रोगी होता है। ख्याति प्राप्त चिकित्सकों का यह मानना है कि कैंसर, ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, हार्ट अटैक आदि घातक बीमारियां मांसाहारियों को अधिक होती हैं। कारण कि मांस में चर्बी अधिक होती है। मांसाहार से ही पाशविक प्रवृत्तियाँ काम, वासना, व्यभिचार व नशाखोरी (शराब आदि) बढ़ती है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था - 'यदि दुनिया में युद्धों को मिटाना है तो पहले मांसाहार को मिटाना होगा।' दुनिया के विद्वानों ने मांसाहार के बुरे परिणामों के कारण अब पश्चिमी देशों में भी हजारों शाकाहार सोसायटियों की स्थापना हो गई है।

मैं यहाँ पर विश्व के प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों का विवरण दे रहा हूँ जो पूर्ण शाकाहारी थे और हैं। अमेरिका लेखिका एलनजी व्हाएट, जार्ज बर्नाड, शो सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, मदर टेरेसा, स्वामी विष्णु देवानंद, धर्मगुरु, जनेश्वर, नागौर के सूफी हमीदुद्दीन, अमिताभ बच्चन, विद्या बालन, अनिल कुंबले, ऐशा देओल, शाहिद कपूर, करीना कपूर, जान अब्राहम, मल्लिका शैरावत, मदिरा बेदी, आर माधवन, चेकोस्लोवाकिया की अभिनेत्री यात्रा गुप्ता, लक्ष्मी मित्तल, अनिल धीरू भाई अंबानी, यश बिरला, अनिल अग्रवाल, गौतम अदानी, कुमार मंगलम बिड़ला, सुनील शेट्टी, रिषा शर्मा, मेहर भषात, पंकज ओसवाल, रूस की 19 वर्षीय नताल्या कांतेम्यूसेवा मिस रूस, श्रीमान व श्रीमती आदि पुरुषों व महिलाओं से हम प्रेरणा लेकर शाकाहार मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं।

संवत् 2007 के एक सर्वेषेण के अनुसार भारत में कुल 40 प्रतिशत व्यक्ति ही शाकाहारी हैं। राष्ट्रीय शाकाहार व जीवदया सम्मेलन 2019 रविन्द्र भारती है द्रावाद के इस महान कृत्य पर हम शाकाहारी सभी जन यह प्रण करें कि हम ज्यादा से ज्यादा मानव समाज को इस आयोजन से जोड़ेंगे।

इस कार्य में काफी लम्बे समय से प्रयत्नशील जैन रत्न, अहिंसा, प्रेमी सी.ए. जसराज श्रीश्रीमाल के प्रयास भी प्रशंसनीय हैं।

शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव

(धीमी गतिवाला)

घाणेराव इत्र विवाद ! मुनिराज रत्नविजयजी के प्रति श्रीपूज्य धरणेंद्रसूरिजी को रोष और अप्रीति। मुनिराज रत्नविजयजी का क्रांतिकारी कदम, चातुर्मास में घाणेराव से प्रस्थान/प्रभु महावीर का साधनाकाल याद आता है। महावीर के प्रति आश्रम के कुलपति को अप्रीति हुई थी, क्योंकि महावीर जिस घास की कुटिया में ठहराये गये थे, उस कुटिया का घास चरने से वे पशुओं को नहीं रोकते थे। अप्रीति देखकर महावीर उस स्थान का त्याग कर चातुर्मास में ही प्रस्थान कर गये थे। मुनिराज रत्नविजयजी घाणेराव से विहार करके नाडोल आ जाते हैं। वहाँ शेष चातुर्मास में स्थिरता करके अपने गुरुदेव आचार्यश्री प्रमोद सूरीश्वरजी के पास, जो कि वृद्धावस्था के कारण आहोर में स्थिरवास किये हुए थे, आ जाते हैं।

मुनिराज रत्नविजयजी अपने गुरुदेव को सारी आप बीती बताते हैं और कहते हैं कि शिथिलाचार का तांडव नृत्य अब अपना विकराल रूप धारण करने की तैयारी कर रहा है। मुनिराज रत्नविजयजी की यह आगाही चारों ओर वायुवेग से फैल जाती है, सभी यह मत प्रगट करते हैं कि इस तांडव नृत्य पर अंकुश लगाना अत्यावश्यक है। अनेक शुद्धाचारी यतिओं के पत्र भी आते हैं कि आप सुधार और शुद्धाचार के लिए कुछ कीजिए, हम आपके साथ हैं। कार्य बहुत दुष्कर था और मुनिराज रत्नविजयजी को अपने क्रांतिकारी बलबूते पर यह करना था। मुनिराज रत्नविजयजी के पास दुष्कर को सुकर बनाने की दो शांतिकारी शक्तियां थी 'नवकार' और 'तप'। मुनिराज आत्मबल की वृद्धि और कार्य की सफलता को दृष्टिगत रखते हुए नवकार जाप के साथ अट्ठम तप करते हैं और अलौकिक आत्मशांति को प्राप्त करते हैं।

अट्ठम का पारणा हो जाने के बाद आचार्यश्री प्रमोद सूरीश्वरजी मुनिराज से कहते हैं कि हालात भयावह हैं और शिथिलाचार के फोड़ों का शीघ्र

ईलाज आवश्यक है। श्री प्रमोदसूरिजी ने उत्तर दिया तुमने क्रियोद्धार का निश्चय किया है, वह अच्छा है पर उसके लिए अभी ठहरो। पहले फोड़े के ईलाज की रीति-नीति तैयार करो, श्रीपूज्यजी व शिथिलयतिओं के त्रास से श्रीसंघ को उबारने का कार्य करो । इसी बीच मोतीविजयजी आदि प्रमुख यतिओं का पत्र आता है कि आप आगे बढ़ें पर सावधानी के साथ। कुछ यतिओं ने मंत्र शक्ति से आपको परेशान करने की योजना बनाई है। मुनिराज रत्नविजयजी ने प्रमुख यतिओं को संदेश भेज दिया व भक्तजनों को भी कह दिया कि किसी को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है यह तो शरद के बादलों की गर्जना है, उससे कुछ होने वाला नहीं है। जैसी सूचना मिली थी, वैसा ही हुआ। खटपटी यतिओं ने मुनिराज के ऊपर मारण मंत्र का उपयोग किया लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। क्योंकि मुनिराज के पास तो सर्वोच्च तारणमंत्र की शक्ति थी। यह बात सत्य सिद्ध हुई कि ' जिसके हृदय में नवकार, क्या बिगाड़ेगा उसका संसार ?'

आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रमोद सूरीश्वरजी दीर्घ दृष्टि से विचार करके मुनिराज रत्नविजयजी से कहते हैं कि रत्न, अब मेरी तो उम्र हो चुकी है। तुम्हें बड़े-बड़े कार्य करना है, अब गच्छ का भार भी तुम्हें सम्हालना है, तुम सर्वथा सुयोग्य हो, मैं तुम्हें आचार्य पद प्रदान करना चाहता हूँ। मुनिराज रत्नविजयजी को आचार्य पद प्राप्ति की कोई इच्छा नहीं थी लेकिन उनके हृदय में गुरु आज्ञा के लिए हमेशा 'तहत्ति' यानी 'स्वीकृति' ही रहती थी, वे मौन रह जाते हैं। आचार्य भगवंत श्रीसंघ को एकत्र करते हैं और मुनिराज रत्नविजयजी को आचार्य पद पर आरूढ़ करने का प्रस्ताव रखते हैं। श्रीसंघ इस प्रस्ताव का भावपूर्वक अनुमोदन करता है, सभी के हृदय में मुनिराज को आचार्य बनाने की बात से प्रसन्नता होती है। सभी का मत यही रहता है कि इनका चारित्र उत्कृष्ट है, विमल है। इनका उचित सम्मान होना ही चाहिए। ये निश्चय ही अपने कर्त्तव्य से आचार्य पद को सार्थक सिद्ध करेंगे।

विक्रम् संवत् 1924 वैशाख शुक्ल पंचमी को शुभ मुहूर्त में महोत्सव पूर्वक मुनिराज रत्नविजयजी को आचार्य पद से अलंकृत किया जाता है। समारोह में भक्तों की विराट जनमेदिनी का मेला लग जाता है। आहोर के राणा साहब श्री जसवंतसिंहजी भी इस समारोह को

गरिमा प्रदान करते हैं। मुनिराज रत्नविजयजी को गुणगर्भित नया नाम दिया जाता है 'राजेन्द्र सूरि'। इसका गर्भित अर्थ है सूरि यानी आचार्य, आचार्य के राजा गणधर, गणधर के इन्द्र यानी अरिहंत परमात्मा । जिनके रोम- रोम में अरिहंत भक्ति बसी थी, उनके लिए यह नाम सर्वथा संगत था। नाम की महिमा अपार है। नाम में प्रेरणा अपार है। नाम की घोषणा होते ही जयजयकार का घोष गगन मंडल में गूंज उठता है।

आचार्य पद अलंकरण होते ही ठाकुर साहब श्री जसवंतसिंहजी खड़े होते हैं और भक्तिभाव पूर्वक राज्य की ओर से आचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी को छड़ी, चामर, सूर्यमुखी, सुवर्णदंड, पालकी आदि राजसी भेंट प्रदान करते हैं। राज्य की ओर से श्रीपूज्य के योग्य भेंट प्राप्त हो जाने पर आचार्यश्री प्रमोदसूरिजी श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी को आचार्य पद के उपरांत श्रीपूज्य पद भी प्रदान कर देते हैं। इस अवसर पर अनेक नगरों के श्रीसंघों द्वारा श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. को अपने यहाँ चातुर्मास करने की विनतियाँ रखी जाती हैं। यहाँ पर यह रेखांकित करना आवश्यक है कि पदोत्सव में विघ्न डालने के लिए छली यतिओं द्वारा प्रयत्न किये गये थे, लेकिन वे असफल रहे।

आचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी अपनी मुनि अवस्था में दफ्तरी पद पर आसीन रहे थे लेकिन उन्होंने कभी भी चारित्र की दृष्टि से दफ्तरी पद को उचित नहीं माना था। जब दफ्तरी पद ही उन्हें स्वीकृत नहीं था तो श्रीपूज्य पद तो चारित्र की दृष्टि से और भी अधिक अनुचित था। वे उसे कैसे स्वीकार कर सकते थे ? वे तो क्रियोद्धार करके इन सब जंजालों से मुक्त होकर शुद्ध चारित्र पालते हुए मुक्त गगन में उड़ान भरना चाहते थे। परन्तु समय कुछ और चाहता था। जिस श्रीपूज्य पद को उन्हें आगे जाकर त्यागना ही था, उसे इस समय स्वीकार करना पड़ा। श्रीपूज्य धरणेंद्रसूरिजी को उन्हें कड़वी दवाई भेजनी थी, 'श्री पूज्य पद पर आसीन होकर दिखाइये।' इस चुनौती का जवाब भी देना था। उन्होंने अपने अंतःकरण की अस्वीकृति को नजर अंदाज करते हुए दुखते हृदय से श्री पूज्य पद प्राप्ति के सम्मान को निस्पृहता के साथ स्वीकार कर लिया था।

आचार्य पद प्राप्ति के तुरन्त बाद अपने गुरुदेव की आज्ञा से हमारे दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी ने

विहार करके ग्राम नगरों में महावीर के सिद्धान्तों का अलख जगाना प्रारंभ कर दिया। राणकपुर तीर्थ में 5 दिन की स्थिरता करके प्रभु आदिनाथ के चरणों में अपने भक्ति पुष्प समर्पित किये। अपने सुयोग्य यति मंडल के साथ मेवाड़ में विचरण करते हुए वे शम्भुगढ़ पधारते हैं। शम्भुगढ़ में बिराजमान यति श्री फतेहसागरजी आपसे प्रभावित होकर नगर प्रवेश के समय महोत्सव करवाते हैं। इस उत्सव के अवसर पर मेवाड़ के राणाजी अपने मंत्री महोदय को भेजते हैं, वे मेवाड़ राज्य की ओर से इन्हें श्रीपूज्य के योग्य उपकरण ससम्मान भेंट में देते हैं। वहाँ से विहार करके मालवा प्रवेश कर वे नीमच पधारते हैं। चातुर्मास निकट था मालवा के अनेक नगरों से चातुर्मास करने की विनतियां आती हैं। जावरा श्रीसंघ की भी अत्याग्रह भरी चातुर्मास की विनति होती है। क्षेत्र स्पर्शना योग भी जावरा का था, अतः उन्हें चातुर्मास की स्वीकृति प्राप्त होती है।

मुनिराज रत्नविजयजी से आचार्यश्री और श्रीपूज्य बने श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी की प्रभावकता और अत्यधिक सम्मान की बातें जब श्रीपूज्य धरणेंद्र सूरिजी तक पहुंचती है तो उन्हें पछतावा होता है पर 'चिड़िया चुग गई खेत, अब पछताने से क्या ? वाली बात थी।

(क्रमशः)

प्रकृति ने 'तीन' विशेष रचना की ...

1. अनाज में 'कीड़े' पैदा कर दिए, वरना लोग इसका सोने और चाँदी की तरह संग्रह करते।
2. मृत्यु के बाद देह (शरीर) में 'दुर्गन्ध' उत्पन्न कर दी, वरना कोई अपने प्यारों को कभी भी जलाता या दफन नहीं करता।
3. जीवन में किसी भी प्रकार के संकट या अनहोनी के साथ 'धैर्य और साहस' दिया, वरना जीवन में निराशा और अंधकार ही रह जाता, कभी भी आशा, प्रसन्नता या जीने की इच्छा नहीं होती।

जीना 'सरल' है...
प्यार करना 'सरल' है...
हारना और जीतना भी 'सरल' है...
तो फिर 'कठिन' क्या है ?
'सरल' होना बहुत 'कठिन' है

निश्चय बुद्धि से देवार्पित है- देवद्रव्य

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

ओहारणबुद्धीए दैवाइणं पकप्पियं च जया ।
जं घणधन्नप्प मुहं, तं तद्दव्वं इहंणेयं ।। - द्रव्यसप्ततिका

जिस धन-धान्य प्रमुख वस्तु को जब निश्चयबुद्धि से देवादि के लिये अर्पण कर दी जाती है, तब वह संसार में देवादि द्रव्य माना जाता है। आदि शब्द से साधारण ज्ञान और गुरुद्रव्य के विषय में भी यही बात समझना है।

1. देव-भण्डार में अच्छे व्यवसाय से देववृद्धि करना चाहिये । निंद्य व्यापार से नहीं 2. माला ग्रहण करना इन्द्रमाला पहनना, पहरामणी वस्त्र, पूजा योग्य धोती आदि चढ़ाने और यथाशक्ति द्रव्य डालकर आरती उतारने आदि से श्रावक को देवद्रव्य में वृद्धि करना चाहिये।

असहाय श्रावक-श्राविका को मदद करना, यात्रा करना अनुकम्पा दान देना, हिंसकों से बकरा, बैल आदि छुड़वाना, कबूतरों को धान डालना, पशुओं को घास डालना, उपाश्रय या धर्मशाला बनवाना और अन्य कार्यों में देवद्रव्य की रकम लगाना देवद्रव्य का विनाश है। जिन द्रव्य जिनालय और प्रभु प्रतिमा के निर्वाह सिवाय अन्य किसी कार्य में खर्च नहीं करना चाहिये।

आयाणं जो भैजइ पण्डिवंतं धणं न दैइ दैवस्य ।
नस्संतं समुवैक्खइ सौवि हु परिभमइ संसारे ।।

आदानम्- जिनालयों हेतु दान में प्राप्त गांव, खेत आदि से हुई आप का विनाश करने वाले। प्रतिपन्नम- पालकों द्वारा या स्वयं के द्वारा स्वीकृत द्रव्य न देना । उपेक्षा- आदान की हुई वस्तुओं का भक्षण करना, जिनालयों के हितार्थ व्यय करने वालों को रोकना। ये तीनों संसार में भ्रमण करके दुःख भोगते हैं।

भक्खणे दैवदैवस्य, परत्थी गमणे या ।
सप्तमं नरयं जति, सत्तवारा य गोयमा ।।

देवद्रव्य का भक्षण करने, दुरूपयोग करने, परस्त्रीगमन करने से हे गौतम ! सात बार सातवीं नरक में महावेदनाएं प्राप्त होती हैं ।

समाज में उपधान, उद्यापन, प्रतिष्ठा आदि के उत्पन्न द्रव्य को देवद्रव्य मानकर 'देवद्रव्य खाना, देवलोक में जाना' यदि इस उक्ति को चरितार्थ करते हैं तो सातवीं नरक में दुःख भोगने की तैयारी रखना होगी।

वास्तव में जिनप्रतिमा स्थापना, जिनाभिषेक, प्रभुपूजा, आरती की बोली से प्राप्त देवद्रव्य में ज्ञानपूजा, ज्ञान आरती, कल्पसूत्र या अन्य ज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला द्रव्य ज्ञान द्रव्य में, पालना, स्वप्न वरघोड़े में घोड़ा, रथ आदि की बोली का उत्पन्न द्रव्य साधारण द्रव्य में और दीक्षा के समय उपकरण की बोली तथा गुरुगुंहली का द्रव्य गुरु द्रव्य में खाते वार जमा होना चाहिये। अपने -अपने खाते की रकम उन्हीं खातों में खर्च करने से द्रव्य का सदुपयोग हुआ, कहा जायेगा।

सबसे श्रेष्ठ मार्ग तो यह है कि साधारण और ज्ञान दोनों खाने परिपुष्ठ किये जावें क्योंकि साधारण द्रव्य सभी धार्मिक कार्यों में और ज्ञान द्रव्य उसके साधक कार्यों में छूट से लग सकता है।

देवादि देव की वृद्धि करना लाभदायक है, लेकिन उसका हिसाब अलग रखना और उसके चेप से सर्वथाबच कर रहना चाहिये। (वैसे यह अपवादिक कथन है)

मंच पट्टक आदि ग्रन्थों में उल्लेख है कि विवेक प्रियता से जिनालय में रात्रि को दर्शन या जागरण नहीं करना ही अच्छा है। यह कार्य प्रकाश रहते ही कर लेना चाहिये।

प्रभु प्रतिमा के आगे चढ़ाने के उद्देश्य से बनाया या लाया गया अथवा चढ़ावे की भावना भाया हुआ नैवेद्य साधु, श्रावक या जैन पुजारी को खाना नहीं चाहिये क्योंकि वह देवद्रव्य और निर्मात्य ही माना गया है। उसके लेने या भक्षण करने को दोषपूर्ण माना गया है। जिनभवनादि के निर्वाह के लिये संघ अपने विवेकानुसार स्वप्न और पालने की बोली की रकम जिनभवन आदि चाहे जिस खाते में ले जाकर खर्च कर सकता है। लेकिन अकबर- प्रतिबोधक सुविहिताचार्य श्रीमद् विजय हरिसूरीश्वरजी महाराज के तृतीय प्रकाश में जगमाल ऋषि के 'तेलादिमानने प्रतिक्रमणाधादेशप्रदानंन शुध्यति न वा' कहकर बताया कि तेल आदि की बोली से प्रतिक्रमण प्रमुख में आदेश देना यह सुविहाचार्य आचारित नहीं है।

श्राद्धविधिटी में लिखा है कि- श्रावक, साधारण के घर, हाट, जमीन बर्तन आदि को अपने उपयोग में नहीं ले सकता। यदि लेना पड़े तो उसका किराया या भाड़ा देना चाहिये। यही बात देवद्रव्य ज्ञान और गुरु द्रव्य के विषय में समझना चाहिये।

यात्रागमन, संघ सेवा, उचित कार्यों में साधारण खाते की आवश्यक रकम देना पड़े तो सब में जाहिर करके साधारण के नाम से देना चाहिये, अपने नाम से नहीं। साधारण खाते की रकम को भी अपने गृह कार्य में वापरना कई गुना ऋण अपने पल्ले बाधना है, जिसे चुकाने से कहीं मुक्ति नहीं है। इसके स्थान पर जो साधारण द्रव्य की रक्षा, वृद्धि और सर्वसम्मति से उचित कार्यों में सावधानी से व्यय करते हैं वह अक्षम्यपुण्योपार्जन करते हैं।

* चढ़ावे के पैसे देने के बाद पानी पीना चाहिये। पेथड़जी इसके उदाहरण हैं।
* आरती उतारने का समय दो घणी सूर्यास्त के पूर्व का है।
* ठाणांग सूत्र के दशमे ठाणे में स्वामीवात्सल्य हेतु टीप मंडवाना निषेध है।
* रथयात्रा में भगवंत की विशाल प्रतिमा और नारे लगाना निषेध है।

देवार्पण खाद्य चीजों को खाने का आदेश देवें तो चढ़ाने वाला पाप का भागी होता है, अन्यथा नहीं अगर पुजारी अपनी अज्ञानता से या अपना हक समझता है और देवार्पण वस्तु खाता है अथवा लेता है तो उसका पाप उसी को लगता है, चढ़ाने वाले को नहीं। देवार्पित चीजों को नहीं लेना दोष से बचने का यही उपाय है।

- 'समाधान प्रदीप' यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रश्न क्रमांक 149 पृष्ठ 83

नये वर्ष की परम्पराएँ

* हिन्दू धर्मावलंबी चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को।
* सिंधी धर्मावलंबी नववर्ष को चैत्र शुक्ल द्वितीया को (भगवान झुलेलाल)
* जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के अगले दिन को
* पारसी धर्मावलंबी नवरोज को
* इस्लाम धर्मावलंबी मोहर्रम को
* पंजाब में नया साल बैसाखी के नाम से नव वर्ष के रूप में मनाते है।

गुरु कृपा

(श्री जयवंतराज पुकराजजी वाणीगोता)

मानव जीवन में ज्ञान का प्रमुख स्थान है। ज्ञान के बिना कोई भी मनुष्य अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता। वह पशु की तरह भटकते जीवनयापन करता है। उसके जीवन का कोई लक्ष्य भी नहीं बन पाता। इसलिये मनुष्य के लिये 'गुरु' का अत्यधिक महत्व है। 'गुरु' वह है जो जीने की कला सिखाता है। मनुष्य के अंदर विवेक का बीज बोता है और उसके आध्यामिक जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

'गुरु' मानव का वह संरक्षक है जो उसके कार्यों, मनोरथों और विद्या को पूर्णता प्रदान करता है और उसे प्रतिष्ठा योग्य बनाता है। जीवन के विभिन्न पक्षों के रहस्यों का बोध कराता है। गुरु के उपदेश को सुनकर, उसके आचरण को आत्मसात् करके हम उदात्त से उदात्तर बनते हैं। वह हमें सफलता के सोपान पर आरूढ़ करता है हमारे पापों को दूर करते हुए हमारे लिए कल्याण के उपाय रचता है। भारत में गुरु-शिष्य के संबंधों की विरासत वैदिक काल से ही प्राप्त होती है. गुरु अपने ज्ञान को शिष्य में उतारता है, उसे आत्मस्वरूप देता है और उसके स्वरूप का ज्ञान बड़ी सरलता से करा देता है। गुरु ही कल्याणकारक और सच्चे मार्गदर्शक हैं।

गुरु की महिमा समझाते हुए कबीरदासजी कहते हैं 'गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है। कुम्हार जब धड़े को गढ़ता है तो वह उसके अंदर हाथ का सहारा देकर ऊपर से चोट देता है। इस प्रक्रिया से घड़ा अपना वास्तविक स्वरूप प्राप्त कर लेता है। शिष्य घड़े की तरह होता है जो गुरु के द्वारा उनके उपायों से संवारा जाता है। जिनके ऊपर 'गुरु कृपा' बरसती है उनका जीवन सफल हो जाता है। गुरु महीमा अपरंपार है। गुरुकृपा से ही संभव है मानव जीवन का उद्धार । गुरु की इन्हीं विशेषताओं को स्मरण करने, उन्हें अपने में उतारने का पर्व है । गुरु की दीक्षा के अनुरूप आचरण और व्यवहार हमारे जीवन को आगे बढ़ाता है। गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिल सकता।

(क्रमशः)

अनेक रोगों की कारगर चिकित्सा

उपवास

(श्री गौरीशंकर शर्मा)

यों तो रोगों को दूर करने के लिए एलोपैथी, आयुर्वेदिक होम्योपैथी, यूनानी आदि अनेक चिकित्सा प्रणालियां प्रचलित हैं तथापि निदान के लिए उपवास एक जबरदस्त प्राकृतिक साधन है। प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत उपवास द्वारा रोगों की सफल चिकित्सा की जाती है। वस्तुतः इसमें उपवास द्वारा शरीर के रोग निवारण तंत्र को सहयोग प्रदान करके शरीर की बीमारियों को दूर किया जाता है।

रोगग्रस्त होते ही प्रकृति हमें उपवास की प्रेरणा देती है। शरीर में रूग्णता बढ़ने पर हमें जरा भी भूख नहीं लगती। लेकिन हम प्रकृति से इतना दूर हो गये हैं कि उसके संकेतों को समझने की क्षमता खो बैठे हैं। बीमारी की अवस्था में खाने की इच्छा न होते हुए भी पेट में थोड़ी-थोड़ी देर में कुछ न कुछ ठूंसते रहते हैं, इस भ्रम में कि कहीं 'कमजोरी' न आ जाय। वास्तव में यह भ्रान्ति अत्यंत ही अवैज्ञानिक है। बीमारी के समय शरीर में अनेक विजातीय पदार्थ इकट्ठे हो जाते हैं। जुकाम, बुखार, दर्द, दस्त आदि के माध्यम से प्रकृति अंदर के विष को शरीर से बाहर निकालती है। ऐसे समय में कुछ न कुछ खाते रहना इस प्राकृतिक चिकित्सा में रुकावट डालना है।

आमतौर से सभी जीव-जन्तु प्रकृति के आहार-विहार नियमों की अवहेलना नहीं करते इसलिए वे स्वस्थ बने रहते हैं। कदाचित ही ये बीमारियों से पीड़ित होते हों। अगर पारस्परिक झगड़ों में वे कोई चोट खा जाएं या संक्रामक रोग लग भी जाए तो वे फौरन खाना बंद कर देते हैं और शीघ्र ही निरोगी हो जाते हैं। घर में पालतू पशुओं-कुत्ता, बकरी, घोड़ा आदि में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। बीमारी की अवस्था में चाहे हम उन्हें खिलाने का कितना ही प्रयास करें वे भोजन की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते। पूरी तरह निरोगी होने पर ही आहार लेना शुरू करते हैं।

इन दिनों प्रकृति की ओर लौटने की चर्चाएं चली हैं और विचारकों ने इससे रोगों के निदान में भी सफलता पाई है। अमेरिका के विख्यात प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. एरनाल्ड टुरहिट ने अपने अनुसंधान

के आधार पर यह सिद्ध कर दिखाया कि उपवास करने से चोट तथा घाव बहुत तेजी से भरते हैं। डॉ. एरनाल्ड ने इसका कारण स्पष्ट करते हुए बताया कि उपवास की अवधि में पाचन से अवकाश पाकर शरीर की सारी शक्ति घाव ठीक करने में लग जाती है। इसलिए वह जल्दी अच्छा हो जाता है। इसके साथ ही यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि जैसा हम भोजन करते हैं वैसे ही तत्व शरीर को मिलते हैं । अमरीका के प्राकृतिक चिकित्सा एडवर्ड डेवी ने अपने कई मरीजों को मात्र नाश्ते व उपवास से ठीक किया है। डॉ. डेवी के अनुसार 50 प्रतिशत रोग और खासकर पेट की बीमारियां सुबह के नाश्ते से ही होती हैं। वस्तुतः रात्रि में पाचन तंत्र बहुत मंद गति से कार्य करता है। सुबह तक कार्य पूरा भी नहीं हो पाता कि उस पर फिर से बोझ लाद दिया जाता है। सुबह के नाश्ते से दोपहर के भोजन तक भूख नहीं रहती। बिना पूरी तरह भूख लगे, भोजन करने से अपच, कब्ज जैसी अनेक बीमारियां पैदा होने लगती हैं। जब 'नाश्ते का उपवास' ही इतना कारगर है तो 'पूर्ण उपवास' की उपयोगिता तो और भी अधिक लाभप्रद है।

इससे दमा, बवासीर, रक्तचाप, एग्जीमा, मधुमेह जैसे रोग जड़ से ठीक हो सकते हैं। बुखार, चेचक, खसरा, दस्त, सर्दी-जुकाम आदि की चिकित्सा में उपवास से तुरंत लाभ होता है। उपवास काल में अधिक आवश्यकता अनुभव होने पर फलों का रस या कोई अन्य तरल पदार्थ लिया जा सकता है। इस दौरान अधिक पानी का सेवन करना चाहिए जिससे कि अधिक मूत्र विसर्जन के द्वारा शरीर से अधिक गंदगी बाहर निकल जाये। इस काल में प्रायः शरीर का वजन तो कम हो जाता है लेकिन मस्तिष्क या ज्ञान तन्तुओं में जरा भी तनाव नहीं होता अतएव मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है। नींद गहरी आने लगती है। विचारों में सात्विकता आती है तथा शरीर विकारों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। लम्बी अवधि के उपवास, योग्य चिकित्सा के परामर्श से ही किये जाने चाहिए।

प्रश्न – णमोकार मंत्र 9 या 108 बार क्यों जपते हैं ?

उत्तर – 9 का अंक शाश्वत है उसमें कितनी भी संख्या का गुणा करें और गुणनफल को आपस में जोड़ने पर 9 ही रहता है ।

जैसे– 9 x 3 = 27 = 9

कर्मों का आस्रव 108 द्वारों से होता है, उसको रोकने हेतु 108 बार णमोकार मंत्र जपते हैं। प्रायश्चित में 27 या 108 श्वासोच्छवास के विकल्प में 9 या 27 बार णमोकार मंत्र पढ़ सकते हैं ।

जैन धर्म के जाने-अनजाने तथ्य

अष्टमंगल जैन मंगल चिह्न

मांगलिकता भारतीय जीवन का अविभाज्य अंग रही है और आज भी है। गांवों-कस्बों से लेकर नगरों और महानगरों तक फैले जन-जीवन में मांगलिक भावना भरी हुई है। सुख सम्पन्नता, सौभाग्य, शांति, सौंदर्य और मोक्ष की अभिलाषा इन्हीं मांगलिक भावनाओं के माध्यम से फलीभूत होती है। भरे भाव से तथा नाना प्रकार के मंगल चिह्नों से पूरा वातावरण निर्मल और शोभायमान हो जाता है। इसीलिए मंदिर में प्रवेश करते ही हमारे मन के विकार दूर हो जाते हैं, क्योंकि मंदिर स्वयंमेव एक मंगल भवन होता है। हमारे घरों में पुत्र जन्म अथवा विवाहोत्सव के अवसर पर रंगोली या अल्पना, झालरें और बंदनवारें भी मांगलिक वातावरण का सृजन करती हैं। इनके पीछे भी शुभ कार्य के निर्विघ्न सम्पन्न होने की ललाम लालसा ही तो है। 'अष्टमंगल' के नाम से मंगल चिह्नों का उल्लेख जैन साहित्य में मिलता है।

औपपातिक सूत्र (31) में वे नाम इस प्रकार हैं- (1) सोवत्थिय (स्वास्तिक), 2. सिरिबच्छ (श्रीवत्स), (3) नन्दियावत्त (नन्द्यावर्त), (4) वद्धमान (वर्धमान), (5) भद्दासना (भद्रासन), (6) कलस (कलश), (7) मसोह (मत्स्ययुग्म), (8) दप्पण (दर्पण)।

आचार दिनकर (भाग 2 प्रत्येक 4-11) में अष्टमंगल चिह्नों का महत्व प्रतिपादित किया गया है। तदनुसार कलश जिन का बिम्ब है। दर्पण स्वयं का साक्षात्कार करने के लिए है, जिन पदों के स्पर्श से पवित्र होने के कारण भद्रासन पूजनीय है, जिन (तीर्थंकर) के सम्यक् ज्ञान का प्रतिरूप श्रीवत्स है, जो उनके वक्ष पर विराजमान है। स्वास्तिक शांति का प्रतीक है। नंद्यावर्त अपने 9 कोणों के कारण 9 निधियों का प्रतीक है तथा मत्स्य-युग्म (मीन-मिथुन) काम - हेतु का चिह्न है, जो पराजित होने से तीर्थंकर की सेवा में है। ये अष्टमंगल जैन कला में भी रूपायित हुए हैं।

(साभारः स्थुलिभद्र संदेश)

* सत्य धर्म पर अडिग रहा- वरुण नाम नतुये का मित्र – **भगवती**
* सत्य कथन निःशंक होकर कहा- आनन्द श्रावक ने –**उपासकदशा**
* सदैव अनित्य भावना भाता था **– भरत चक्रवर्ती**
* सदा सत्य ज्ञान पर श्रद्धा थी। **– ज्ञातासूत्र**

जयंतगिरी सिद्धाचल चैत्री पूनम

(संकलन– मनोहरलाल पुराणिक, कुक्षी)

शंत्रुजयसमो तीर्थ, नमस्कार समो मंत्र
वीतराग समो देव, न भूतो न भविष्यति

जैन धर्म में जयंतगिरी तीर्थ के नवाणु नाम में 32 वां पालीताना (सिद्धाचल) को नमस्कार महामंत्र के समान ही शाश्वत बताया गया है, इसका मान प्रणाम प्रथम आरा में अस्सी, दूसरे आरे में सत्तर, तीसरे में साठ, चौथे में पचास, पाँचवे में बारह योजन का बताया गया है जो छठे आरे में मात्र सात हाथ का रह जाएगा किन्तु कभी भी लुप्त नहीं होना है।

सिद्धक्षेत्र फरसयो नहीं, जप्यो न अरिहंत जाप।
शील सुरंग न धारियो, दुखियो थासे आप ...।।

कलिकाल कल्पतरू श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने दुख के स्वस्फूर्त तीन कारण बताए हैं जिसमें से पहला ही सिद्धक्षेत्र फरस्यो नहीं बताया है जो जयंतगिरी का महात्म्य दर्शित करता है।

फाल्गुन चौमासी के साथ ही प्रत्येक तीर्थभक्त के मन में चैत्री पूनम प्रवेश कर जाती है, भले ही पालीताना जाना हो या नहीं आखिर कारण क्या ? सिद्धाचल व चैत्री पूनम के बीच अटूट रिश्ते का कारण ढूंढने के लिए इतिहास के पन्नों में झांकें तो कुछ तथ्य हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं।

इस अवसर्पिणी के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने पूर्व नवाणु बार (कुल 69, कोड़ाकोड़ी 85 लाख कोड़ी, 44 हजार कोड़ी बार) इस तीर्थ की स्पर्शना करके इसे पावन किया है। ऋषभ के वंश में पौत्र सूर्ययश राजा, सागर चक्रवर्ती तक असंख्यात वंशजों ने मुक्ति इस तीर्थ पर पाई है। प्रथम तीर्थंकर के जीवनकाल में ही प्रथम गणधर श्री पुंडरीक स्वामी ने सवा लाख श्लोक में महावीर प्रभु के गणधर श्री सुधर्मा स्वामी ने साठ हजार श्लोक में इस तीर्थ की महिमा का बखान किया था।

सौराष्ट्र के अधिपति महाराज शिलादित्य के शासन काल में श्री धनेश्वर सूरिजी म.सा. ने वर्तमान काल में इस तीर्थ के लिए शत्रुंजय महात्म्य नामक ग्रन्थ की रचना की। इन सूरिजी की प्रतिमा दो सौ वर्ष पूर्व तीर्थ में बिराजमान की हुई थी।

प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक स्वामीजी ने इस तीर्थ पर चैत्री पूर्णिमा के शुभ दिन पंचम, केवल ज्ञान प्राप्त किया था। इसी तिथि को पांच कोड़ मुनिवर के साथ निर्वाण भी प्राप्त किया। शाश्वत सुख पाया।

इस तीर्थ का पुण्डरीक गिरी नाम इस कारण से है। बड़ी संख्या में सिद्धि हुई होने के कारण से इस तीर्थ क्षेत्र की ऊर्जा में अत्यधिक वृद्धि हुई। महात्म्य में कहा गया है कि चैत्री पूर्णिमा के दिन पुण्डरीक गिरी पर पुण्डरीकस्वामी की सेवा पूजा करने वाले व्यक्ति लोकोत्तर स्थिति का वरण करते हैं।

सामान्य स्थिति में पूजा आदि क्रियाओं के करने से जो फल प्राप्त होता है इन्हीं क्रियाओं को चैत्री पूर्णिमा के दिन करने पर करोड़ गुना हो जाता है। अजितनाथ प्रभु के शासन में दस सहस्त्र मुनिभागवंतों ने इस तीर्थ पर चैत्री पूनम के दिन सिद्धि पाई थी। नवाणु प्रकारी पूजा में श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. लिखते हैं।

साधु सहस्त्र दस अजित शासन था
पूनम मधु सुख लहयु शिव जाय के
सिद्धाचल ध्यावो रे नर तन पाय के...

श्री महाविदेह क्षेत्र में विवरण कर रहे श्री सीमंधर स्वामी भगवान इस तीर्थ की भारत क्षेत्र में विद्यमानता के कारण भारत क्षेत्र को धन्य बताते हुए इस तीर्थ की महिमा का विस्तार करते हैं ।

चरम तीर्थकर श्री महावीर प्रभु सौधर्मेन्द्र के समक्ष इस तीर्थ की महिमा का वर्णन देशना में करते हुए बताते हैं कि पुण्डरीक पर्वत, प्रथम प्रभु, पात्र व्यक्ति, पंच परमेष्टि, पर्युषणपर्व के पांच पाकर दुनिया में दुर्लभ हैं।

पुण्डरीक पर्यायवाची है कमल का । महावीर प्रभु बताते हैं कि पुण्डरीक गिरी व पुण्डरीक स्वामी का आश्रम लेने वाले भ्रमर नहीं होते हैं। कमल में बंद होकर भ्रमण प्राण गंवाता है किन्तु गिरी व गणधर का आश्रम पाने वाला सिद्धि पद पाता है।

इतना महात्म्य होने पर भी 'पापी नर नजरें नहीं देखे' की स्थिति वालों के लिए श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. बताते हैं कि

करी चित संवर दिशा वंदन भविक विधि कड़ी जे
सहज भावे तीर्थ यात्रा कारण फल साहू ते वरे...

चैत्री पूनम के महत्व को समझने जानने के बाद भी जो लोग तीर्थ की यात्रा की अनुकूलता नहीं बना पाते हैं वे श्री तालनपुर, श्री मोहनखेड़ा जैसे तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं वहीं लाभ प्राप्त करते हैं। जैसा श्री धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. ने तालनपुर तीर्थ के स्तवन में लिखा है –

चैत्री पूनम दिन सिद्ध अनन्ता, शिवसुन्दरी वरी सारी
तालनपुर दिशा यात्रा करीने, मानवी चार निवारी....
विमलगिरी पूजो रे सुखकारी

मोहनखेड़ा तीर्थ प्रतिष्ठा विक्रम संवत् 1940 के समय लिखे स्तवन में ये ही आचार्य भगवंत लिखते हैं।

चैत्य मनोहर चंग के सोहे सुंहकरु रे लोल
जिनवर सिद्धाचल की यात्रा के दरस सुहंकरु रे लोल
जिनवर सुविहित श्रावक सार के लूणा लेखिये रे लोल
जिनवर राजगढ़ शहर मझार के शोभा सागरु रे लोल
जिनवर पोरवाड़ सुखकार के वंश उजाग रे लोल

इस तरह हम पाते हैं कि चैत्री पूर्णिमा का दिन अनन्त व्यक्तियों के सिद्धि प्राप्ति करने का दिन है। इस दिन जयंतगिरी तीर्थ की यात्रा का अनूठा फल प्राप्त करने की भावना रखकर आगे बढ़ना हितकारी है।

- आजाद हिन्द फौज की 'झांसी की रानी रेजीमेन्ट' की सदस्या श्रीमती लीलावती जैन तथा रमा बहिन जैन थी। जिनका काम क्रमशः सशस्त्र होकर केम्प की रक्षा करना तथा घायलों की सेवा सुश्रुषा करना।
- श्री मिश्रीलाल गंगवाल जैन ने मध्यभारत के मुख्यमंत्री होने पर भी राजकीय अतिथि को मांसाहार कराने के लिए प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को मना कर दिया था।
- अमेरिका के शिकागो शहर में सितम्बर 1893 में प्रथम विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ था, जिसमें वीरचन्द गांधी जैन ने जैनधर्म का प्रतिनिधित्व किया था।
- जैन धर्म एक विशुद्ध आध्यात्मिक धर्म है, इस शाश्वत धर्म का संबंध किसी जाति विशेष से कभी नहीं रहा, सभी लोगों ने इस धर्म का पालन करते हुए आत्मकल्याण एवं आत्मशांति को प्राप्त किया।

क्रियोद्धार- एक नजर में

(श्री जे.के. संघवी, ठाणे)

जिस प्रकार जीर्ण मंदिर का उद्धार होने पर जिर्णोद्धार कहा जाता है, उसी प्रकार क्रिया-आचरण की शिथिलता को दूर करना 'क्रियोद्धार' कहा जाता है। अर्थात् शुद्ध संयम पालन में आयी हुई अशुद्धियों-शिथिलताओं को दूर कर पुनः मूलमार्ग की आराधना-साधना प्रारंभ करने की प्रक्रिया को क्रियोद्धार कहा जाता है। काल के प्रभाव से श्रवण संघ में प्रवेश हुई अशुद्धियों को जानकर धर्ममार्ग को यथासंभव निर्मल करने का युग धर्म निभाने वाले महाश्रमणों को 'क्रियोद्धारक' कहा जाता है। जैन श्रमणों के जीवन का उनकी अपरिग्रह, करूणा एवं अंतर्मुख साधना की गुणसमृद्धि से विश्व के संत समुदाय में अग्रणीय, आदर भरा स्थान है। फिर भी मानव सहज दुर्बलता, प्रमाद एवं काल के प्रभाव से जैन श्रमणों में आचार - शैथिल्यता का आगमन हुआ है। शिथिलाचार का ऐसा प्रथम युग श्रमण भगवान महावीर के बाद 800-1000 वर्ष में आया था। साधु संयम मर्यादाओं के पालन में शिथिल बनकर मंदिर-उपाश्रयों में कायम निवास करने लगे। परिग्रह एवं सुख-सुविधाओं का उपयोग करने लगे। उस स्थिति का उल्लेख पुराने ग्रंथों में 'चैत्यवास' के नाम से हुआ है, ऐसे साधु चैत्यवासी कहलाते थे। फिर ऐसे शिथिलाचारी साधु 'यति' या 'गौरजी' कहलाये।

संघ शासन की निर्मलता/पवित्रता श्रमणवर्ग से अनुबंधित रहती है। जब श्रमण संघ में शिथिलाचार प्रवेश हो जायेगा, वह मार्ग से विचलित हो जायेगा तो शुद्ध मोक्षमार्ग प्ररूपणा की सारी व्यवस्था ही डगमगा जायेगी, इसी वस्तु स्थिति को ध्यान में लेकर समय-समय पर हमारे पूर्व सुविहत आचार्यों ने तत्कालीन समस्याओं को ध्यान में रखकर आचारमार्ग की सुरक्षा हेतु नियम -उपनियमों में उपरी फेरफार कर बोलपट्टक, समाचारी, मर्यादा पट्टक का निर्माण किया एवं मर्यादाओं के प्रवर्तन द्वारा श्रमणवर्ग को पुनः सही मार्ग में स्थित किया।

बारहवीं शताब्दी के आसपास में मुख्य क्रियोद्धारक थे- श्री जिन वल्लभसूरि (खरतरगच्छ), श्री जगच्चंद्रसूरि (तपागच्छ), श्री जयशेखरसूरि (नागोरी तपागच्छ) एवं श्री आर्यरक्षित सूरि (विधिपक्ष)।

क्रियोद्धार का दूसरा दौर सोलहवीं सदी में आया। श्री पार्श्वचंद्रसूरि (वि.सं. 1564) श्री आनंदविमलसूरि

(वि.सं. 1582), श्री धर्मकीर्तिसूरि (वि.सं. 1602), श्री जिनचंद्रसूरि (वि.सं. 1614) सोलहवीं सदी के महान् क्रियोद्धारक हुए। अठारहवीं शताब्दी में श्री सत्यविजय गणि एवं श्री ज्ञान विमल सूरि आदि ने क्रियोद्धार का कार्य किया।

बीसवीं सदी भी ऐसे क्रियोद्धार की साक्षी बनी। पार्श्वचंद्र गच्छ के श्री कुशलचंद्र गणि, श्री भातृचंद्रसूरि, खरतरगच्छ के श्री मोहनलालजी महाराज, अचलगच्छ के श्री गौतमसागरजी, तपागच्छ में श्री बुटेरायजी, श्री मूलचंदजी, श्री वियकमलसूरि, विमलगच्छ में श्री शान्तिविमलसूरि ने क्रियोद्धार का योगदान दिया। इसी क्रम में कलिकाल कल्पतरू दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी जैन श्रमण संघ की काया पलटकर उज्जवल परम्परा को कायम रखने वाले समर्थ सूत्रधार थे। उन्होंने जावरा में सन् 1869 (वि.सं. 1925) आषाढ़ शुक्ला 10 की शुभ बेला में 'श्री पूज्य' पद का सर्वथा त्यागकर क्रियोद्धार किया। नौ सूत्री योजना में नवकलमों को यतियों में मंजूर करवाकर उनमें सुधार लाया व स्वगच्छीय मर्यादा पट्टक द्वारा साधु समाचारी बनायी।

मर्यादा/अनुशासन के बल पर ही संघ-समाज चिरकाल/स्थायी जीवित रह सकता है। आज शैथिल्यता का काला साया पुनः नजर आने लगा है। मर्यादाओं के पालन में प्रमाद का संचार शुरू हो गया है। यद्यपि आज भी शुद्ध भाव से यथा शक्ति संयम को अनुपालना करने वाले श्रमण-श्रमणी विद्यमान हैं, किन्तु जहाँ शिथिलता आयी है, उसे नजर अंदाज नहीं करते हुए दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। मंत्र-तंत्र-डोरे-धागों, ताबीजों द्वारा जनता को मूर्ख बनाने का धंधा अमुक साधुओं द्वारा पुनः शुरू हो गया है। सरागी देव-देवियों की आराधना, उपासना का उपदेश भौतिक कामनाओं की पूर्ति हेतु देना या उनके पूजन अपनी निश्रा में पढ़ाना, यावज्जीव सावद्य कर्म मन-वचन-काया से न करने, न करवाने व न अनुमोदन करने का प्रत्याख्यान लेकर साधु जीवन में प्रवेश कर किसी ट्रस्ट का अध्यक्ष बनना, चोरी-छिपे वाहन का प्रयोग, युवामुनियों द्वारा भी व्हीलचेयर का उपयोग, अनावश्यक परिग्रह की बढ़ौत्तरी के कारण विहार में वाहन का साथ में चलना, सेलफोन का स्वयं द्वारा उपयोग, शिष्ट बढ़ाने के मोह में अयोग्य दीक्षायें, स्वयं की प्रेरणा से बने धाम या पीठ पर अपना वर्चस्व कायम रखने हेतु सर्वेसर्वा बनकर अधिकारों का उपयोग करना आदि कई प्रकार की शैथिल्यता पुनः अपने पैर जमाने लगी है। कम या ज्यादा प्रमाण में लगभग हर समुदाय-गच्छ में इसका आगमन हुआ है।

दर्द को छुपाने से तो रोग और बढ़ता जायेगा। उसका इलाज किये बिना वह शांत नहीं होगा। संघ के चारों वर्गों को हिम्मत कर ईमानदारी से वर्तमान स्थिति पर विचार करने का समय आ गया है। हम कब तक शुतुरमुर्ग की तरह आँखें मूंदकर अनदेखी करते रहेंगे ? जिस प्रकार एक सड़े आम से दूसरे आमों को बिगड़ते देर नहीं लगती, उसी प्रकार यदि हम मात्र दृष्टा बनकर देखते रहे तो श्रीमद् के समय जो स्थिति यतियों की थी, उससे भी बदतर होने में देर नहीं लगेगी। श्रीमद् द्वारा नव कलमनामे की ओर नजर करें एवं आज की स्थिति की ओर देखें तो यह बात सहज रूप से समझ में आ सकती है। श्री संघ के जागरूक, शासन प्रेमी इन सभी बातों पर गंभीरता से विचार करें एवं संयमशील श्रमण-श्रमणी भी पहलकर शिथिलाचार के नासूर को दूर करने हेतु प्रयत्नशील बनें। यदि ईमानदारी, निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास से इस ओर कदम उठाये जायें तो जैन शासन के अध्याय में एक नया स्वर्ण इतिहास जुड़ जायेगा। फिर तो जैनम् जयति शासनम् का नाद विश्व में गूंजते देर नहीं लगेगी, जरूरत है पहल करने की। पुनः क्रियोद्धार या नियमावली बनाने की।

आचरण

यदि हम अपना पतन नहीं होने देना चाहते हैं तो हमें अपना उद्धार अपने आप करना है। वस्तुतः हम ही अपने शत्रु और मित्र हैं। अतः जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इसके लिए शास्त्र ही प्रमाण है। यथेच्छ आचरण मानव का महान पतन है। जो मानव शास्त्रोक्त विधि को तिलांजलि देकर मनमाना आचरण करता है उसे न सफलता मिलती है न सुख प्राप्त होता है और न ही परमगति ही मिलती है। विवेक से मन पराकाष्ठा को पहुंचता है और इस अवस्था में उसका संतुलन बना रहता है। यदि मनुष्य कल्पवृक्ष बनकर अपनी छाया में मानवता को राहत देना चाहता है, फलफूल देकर तुष्ट करना चाहता है तो उसे पुरुषार्थ करना चाहिए।

कर्म जहां शरीर है वहीं धर्म आत्मा है। धर्म मानव को दिशा प्रदान करता है। हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए धर्म वैसा ही आवश्यक है जैसा पार्थिव अस्तित्व के लिए कर्म। मानव समाज जिसकी सहायता से एक सूत्र में बंधता है वही धर्म है और जिससे मानव समाज का विघटन होता है वही अधर्म है।

महामंगलकारी है- अक्षतृतीया

(श्री अचलचन्द जैन, सायला)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सालभर में केवल 1-2 दिन ही बिना पूछे मुहूर्त वाले दिन होते हैं। अक्षतृतीया उनमें से एक है। वैदिक और जैन परम्पराओं में अक्षतृतीया का विशेष महत्व है। 'अक्षय' का अर्थ है जिसका क्षय नहीं हो। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया जिसे अक्षतृतीया अथवा आखातीज कहते हैं का कभी क्षय नहीं होता।

हमारे धर्म ग्रन्थों के अनुसार अक्षतृतीया के दिन जो दान, पुण्य, तपस्या आदि कार्य किये जाते हैं उनका फल कई गुणा एवं विशेष होता है। यही कारण है कि विवाह, गृहप्रवेश एवं नये व्यावसायिक कार्यों का शुभारम्भ अक्षय तृतीया के दिन ही किया जाता है। यह दिन सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त वाला दिन माना जाता है। गाँवों में तो अक्षतृतीया के दिन खूब शादियाँ होती हैं। इस दिन सोना खरीदना भी शुभ माना जाता है। जिसमें लक्ष्मी माँ की कृपा बनी रहे। अक्षतृतीया के महत्त्व के कुछ और कारण इस प्रकार हैं -

1. माँ गंगा का धरती पर अवतरण अक्षतृतीया के दिन हुआ था।

2. जैनों के प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव की 400 दिनों की तपस्या का पारणा इक्षुरस से भगवान श्री ऋषभदेव के प्रपौत्र श्रेयांसकुमार ने अक्षतृतीया के दिन ही करवाया था। इसी का अनुकरण करते हुए आज भी जैन साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका 1 दिन उपवास और दूसरे दिन बियासणा की 400 दिनों तक की तपस्या कर अक्षतृतीया के दिन गन्ने के रस से पारणा करते हैं। इस तपस्या को वर्षीतप कहते हैं।

3. सतयुग एवं त्रेतायुग का प्रारम्भ अक्षतृतीया के दिन हुआ था। इसलिये इसे युगादि तिथि भी कहा जाता है।

4. कृष्ण और सुदामा का मिलन भी इसी अक्षतृतीया के दिन हुआ था।

5. महर्षि परशुराम का जन्म भी इसी शुभदिन में हुआ था।

6. कहते हैं कि महाभारत का युद्ध अक्षतृतीया के दिन ही समाप्त हुआ था।

7. वृंदावन के बांके विहारी मन्दिर में कृष्ण भगवान के श्री विग्रह चरणों के दर्शन अक्षतृतीया के दिन होते हैं, अन्यथा सालभर तो वे वस्त्रों से ढ़के

रहते हैं।

8. प्रसिद्ध तीर्थ श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट अक्षतृतीया के दिन ही खुलते हैं।

9. प्रसिद्ध तीर्थ श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट अक्षतृतीया के दिन ही खुलते हैं।

10. ऐसी मान्यता है कि कुबेर को अक्षतृतीया के दिन ही खजाना मिला था। अतः इस दिन सोना खरीदना शुभ माना जाता है।

11. अक्षतृतीया के मंगलकारी होने के कारण इस दिन मन्दिरों में गुड़ चढ़ाया जाता है एवं घरों में गुड़ की राब बनाई जाती है। इस तरह अक्षतृतीया एक ऐसा त्यौहार है जिसका महात्मय बहुत बड़ा और व्यापक है। इस दिन तप और दान करने वाला अक्षय पद प्राप्त करता है। यह त्यौहार हमें यह संदेश देता है कि अपनी जरूरतों को सीमित रखकर जरूरत मन्दों की सहायता करें एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त को जीवन में अपनाये अर्थात् आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ और धन अपने पास न रखें।

अक्षय तृतीया का सम्बन्ध दान और तप से होने के कारण त्यौहार महान् बन गया। अक्षतृतीया का दिन अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहूर्त है। इस दिन कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है। दान, तप और अखण्डता का संदेश देने वाला यह त्यौहार सभी दृष्टियों से महामंगलकारी है।

मैं सबसे पहली और बड़ी अविद्या है 'मैं'। जीवात्मा के विराट रूप में 'मैं' का कहीं स्थान है ही नहीं। या तो 'मैं' ब्रह्मरूप में होता है या शून्यरूप में (भगवत् रूप)। 'मैं' का साथ जितना बढ़ता जाता है, कालिख उतनी ही बढ़ती जाती है। हम चाहते हैं कि 'मेरेपन' का विस्तार हो। मैं-मेरा हमें विकल कर देता है। जैसे शरीर के साथ रोएं होते हैं, वैसे ही 'मैं' के साथ 'मेरा' होता है। शरीर का एक रोआं भी टूटता है तो कष्ट होता है। ऐसे ही मेरापन टूटता है तो बड़ी कष्टकारी पीड़ा होती है। मेरा मकान, मेरी पत्नी, मेरे पत्नी, मेरे बच्चे, मेरी कार, मेरा कुत्ता, मेरी बिल्ली, स यह मेरेपन का अंतहीन विस्तार है। 'मेरे' में हमें बढ़ोत्तरी अच्छी लगती है, घटोत्तरी नहीं। 'मैं' के साथ 'मेरा' हटा दें तो हमारा अस्तित्व प्रभु में विलीन हो जाएगा। हम आसक्ति से, अविद्या से मुक्त हो जायेंगे।

श्री भक्ताम्बर स्त्रोत
मंत्र-यंत्र-साधना विधान

(श्री विनय कुमार छिपानी)

सर्वविघ्न-विनाशक

श्लोक – भक्तामर प्रणत मौलि मीण प्रभाणा मुद्योतकम् दलित पापतमो वितानाम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपाद युगं युगादा वालम्बनं भजवलेपततां जनानाम् ।।1 ।।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हणमो अरिहंताणं णमो जिणाणं
ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रों ह्रः असि आनुसा अप्रति चक्रे
फट् विचक्राय झ्रों झ्रॉं नमः स्वाहा :

साधन विधि – पवित्रता पूर्वक नित्य 108 बार ऋद्धि – मंत्र का जप करने तथा यंत्र को अपने पास रखने से सब प्रकार के विघ्न तथा उपद्रव दूर होते हैं ।

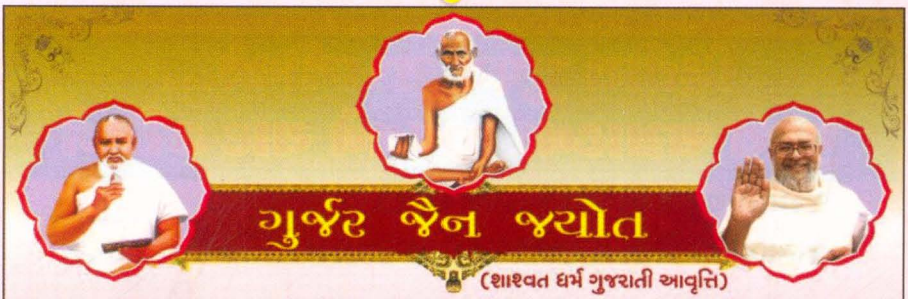

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,
ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૩૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અદત્તાદાન અને લોભ

લોભાવિલે આયયઈ અદત્તં ।

(લોભથી ક્લુષિત જીવ ચોરી કરે છે)

જે વસ્તુ દઈ દેવામાં આવે છે તે દત્ત છે, અને જે નથી દેવાતી તે અદત્ત છે. સજ્જનો ફક્ત દત્ત વસ્તુનું જ ગ્રહણ કરે છે - અદત્ત વસ્તુનું નહીં.

અદત્ત વસ્તુ ઉપર એ વસ્તુના માલિકનો જ અધિકાર રહે છે, કોઈ બીજી વ્યક્તિનો નહીં. એટલા માટે અદત્તનું ગ્રહણ કરવું એ અપરાધ છે.

જો આપણને અદત્ત વસ્તુની ખૂબ જરુર હોય તો આપણે તેના માલિક પાસે માગીને લઈ શકીએ છીએ. વગર પૂછ્યે કોઈની પણ વસ્તુ-ભલે તે ગમે તેવી સામાન્ય હોય, લેવી એ અયોગ્ય છે - અન્યાયપૂર્ણ છે.

અદત્ત વસ્તુ લેવી તેને વ્યાવહારિક ભાષામાં ચોરી કહે છે. આપણે નથી ઈચ્છતા કે કોઈ આપણી વસ્તુ આપણને પૂછ્યા વિના ઉઠાવી જાય અથવા ચોરી જાય. એ જ પ્રમાણે બીજાઓ પણ પોતાની વસ્તુ કોઈ ચોરી જાય તે પસંદ કરતાં નથી. એટલા માટે સૌ ઈમાનદારીથી રહે તેને જ સજ્જનતા કહેવાય. કોઈ ક્યારેય કોઈની વસ્તુ ચોરી જવાનો પ્રયત્ન ન કરે.

એ એવો પ્રયાસ કરે છે, તેનો આત્મા લોભથી ક્લુષિત થાય છે. અર્થાત્ જે લોભી છે તે જ અદત્તાદાન લે છે - ચોરી કરે છે.

ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૩૨/૨૯ (ક્રમશઃ)

દ્વિતીય પુણ્ય સપ્તમીએ...
પુણ્ય સમ્રાટના જીવનને યાદ કરીએ

- **જન્મતિથિ :** સંવત ૧૯૯૩ કારતક વદ ૧૩
- **જન્મભૂમિ :** પેપરાલ (થરાદ) જી. બનાસકાંઠા (ઉ.ગુ.)
- **પિતા :** શ્રેષ્ઠીવર્ય શ્રી સ્વરૂપંચદજી
- **માતા :** રત્નકુક્ષી પાર્વતીબાઈ
- **જન્મ નામ :** પુનમચંદ
- **કુળ :** ધરૂવંશ
- **દીક્ષા તિથિ :** વિક્રમ સંવત ૨૦૧૦ મહા સુદ ૪
- **દીક્ષા ભૂમિ :** સિયાણા, જિલ્લો - જાલોર (રાજ.)
- **દીક્ષા પ્રદાતા :** પિતાંબર વિજેતા આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.
- **દીક્ષા નામકરણ :** મુનિરાજ જયંતવિજયજી મ.સા. ઉપનામ : મધુકર
- **મનોનિત આચાર્ય :** વિક્રમ સંવત ૨૦૩૯ કુલપાકજીતીર્થ (આંધ્ર)
- **આચાર્યપદ તિથિ :** વિક્રમ સંવત ૨૦૪૦, મહા સુદ ૧૩
- **આચાર્યપદ ભૂમિ :** ભાંડવપુર તીર્થ, જિલ્લો - જાલોર (રાજ.)
- **આચાર્યપદ નામકરણ :** પરમપૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.
- **પ્રથમ શિષ્ય :** મુનિરાજશ્રી નિત્યાનંદવિજયજી મ.સા.
- **વિહારયાત્રા :** ૧૫ પ્રદેશોમાં વિચરણ, ૧ લાખ ૪૦ હજાર કિ.મી.
- **સાહિત્ય યાત્રા :** અનેક વિષયો પર આધારિત ૨૦૦થી અધિક સાહિત્ય (અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષનું ૩ વાર પ્રકાશન)
- **સંયમ પ્રદાન :** ૨૦૦થી અધિક મુમુક્ષુ ભાઈ-બહેનોને દીક્ષા પ્રદાન, ૫ વાર સામુહિક દીક્ષા પ્રદાન, શિષ્ય સંપદા - ૪૦
- **પ્રતિષ્ઠાચાર્ય :** ૨૫૦થી અધિક જિનાલય - ગુરુમંદિરોની પ્રતિષ્ઠા -

અંજનશલાકા

- **ગુરૂમંદિર પ્રણેતા :** ૨૦૦થી અધિક શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિજી ગુરૂમંદિર નિર્માણ પ્રેરણા અને પ્રતિષ્ઠા
- **નવકાર નિષ્ઠા :** ૫૫ વર્ષથી અખંડ નવદિવસીય નવકાર આરાધનાનું આયોજન
- **તીર્થ પ્રેરણા :** ભારતભરમાં ૨૫ ભવ્ય તીર્થોનું નિર્માણ
- **સંસ્થાપક :** અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તરૂણ પરિષદ, મહિલા પરિષદ, શ્રી રાજરાજેન્દ્ર ધર્મોત્તેજક પરિષદ, મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન
- **પદપ્રાપ્તિ :** સંઘ એકતા શિલ્પી, સંયમદાનેશ્વરી, યુગ પ્રભાવક, જિનશાસન સમ્રાટ, પ્રતિષ્ઠા શિરોમણી, રાષ્ટ્રસંત, લોકસંત, પુણ્ય સમ્રાટ.
- **શ્રેષ્ઠ માર્ગદર્શન :** અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર, શાશ્વત ધર્મ (માસિક), યતિન્દ્ર જયંત જ્ઞાનપીઠ
- **પ્રેરણા પ્રદાન :** ગૌશાળા, હોસ્પિટલ, સ્કુલોનું નિર્માણ
- **પટ્ટધર :** ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.
- **શતાવધાની શિષ્ય :** મુનિરાજ શ્રી પ્રત્યક્ષરત્નવિજયજી મ.સા.
- **કાવ્ય રચના નિપુણ :** ૨૦૦૦થી અધિક સ્તવન, ૨૦૦થી અદ્દિક સઝ્ઝાય, ચૈત્યવંદન સ્તુતિ વિગેરે
- **ગુણનિધાન :** ગંભીરતા, સરળતા, સહનશીલતા, વાત્સલ્ય, પ્રસન્નતા, ગીતાર્થતા.
- **તપસ્યા :** અઠ્ઠાઈ તપ – ૩ વાર, સન ૨૦૦૪, બાગ ચાતુર્માસમાં ૧ માસની મૌન સાધના
- **દીક્ષાપર્યાય :** ૬૩ વર્ષ (ત્રિસ્તુતિક પરંપરામાં સર્વાધિક)
- **આચાર્ય પર્યાય :** ૩૪ વર્ષ
- **આયુષ્ય :** ૮૧ વર્ષ
- **ચાતુર્માસ :** ૬૩
- **દેવલોક ગમન :** સંવત ૨૦૭૩, ચૈત્ર વદ ૫ રાત્રે ૧૧.૩૦, ભાંડવપુર તીર્થ
- **અગ્નિસંસ્કાર :** સંવત ૨૦૭૩ ચૈત્રવદ ૭ વિજય મુહુર્ત, ભાંડવપુર તીર્થ

ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની નિશ્રામાં ઓળી આરાધના - મુમુક્ષુરત્નોનો બહુમાન અને ચાતુર્માસ ઘોષણા કાર્યક્રમ સંપન્ન

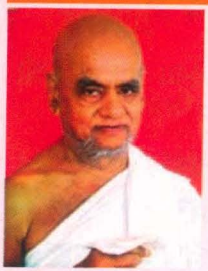

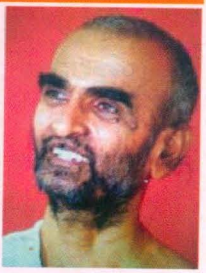

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ સંખ્યામાં શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં પૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવની પુણ્યભૂમિ શ્રી મોહનખેડા તીર્થ મધ્યે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમના પાવન પરિસરમાં ચૈત્ર માસની શ્રી નવપદજી આરાધના સ્વરૂપ આયંબિલ ઓળીનું શ્રી રાજ રાજેન્દ્ર જૈન શ્વે. તીર્થદર્શન પબ્લિક ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ દ્વારા ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. આ ઓળી આરાધનામાં ૩૫૦થી અધિક આરાધકો જોડાયા હતા. નવેય દિવસ આરાધકોની સુંદર ભક્તિ કરાઈ હતી અને આરાધનાની પૂર્ણાહૂતિએ આરાધકોની અનુમોદના કરી બહુમાન કરાયું હતું. સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર સુદ ૬ ને ગુરુવાર તા. ૧૧-૪-૨૦૧૯ના રોજથી સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૪-૨૦૧૯ના રોજ સુધી ચાલી રહેલ ઓળી આરાધના દરમ્યાન તા. ૧૯-૪-૨૦૧૯ના રોજ માળવા- ગુજરાત - રાજસ્થાન - દક્ષિણ ભારત વિગેરે સ્થળોએથી ઉમટી પડેલ શ્રદ્ધાવંતગુરૂ ભક્તોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે આગામી તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ (રાજનગર) અમદાવાદ ખાતે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૩ (સામુહિક દિક્ષા)ના મુમુક્ષુરત્નોની શોભાયાત્રાનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. આ શોભાયાત્રામાં શણગારેલી બગીઓમાં ગુર્વાચાર્યોના ફોટા લઈ મુમુક્ષુરત્નો બેઠા હતા અને પૂજ્યશ્રીઓના આશીર્વાદ લઈ શ્રી જયંતસેનસૂરિ મ્યુઝીયમથી સવારે ૧૦ કલાકે વાજતે-ગાજતે શોભાયાત્રાએ પ્રસ્થાન કર્યું હતું અને શ્રી મોહનખેડા તીર્થ ખાતે પહોંચી દેવાધિદેવ શ્રી આદિનાથ ભગવાન આદિ જિનબિંબો તેમજ દાદા ગુરૂદેવના સમાધિ મંદિરના દર્શન - વંદન કરી મ્યુઝીયમ ખાતે પરત ફરી હતી. તમામ મુમુક્ષુરત્નોનું બહુમાન કરાયું હતું. બપોર બાદ ચાતુર્માસ ઘોષણાનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

આ અવસરે ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના પ્રમુખશ્રીઓ, પ્રતિનિધિઓ, અને શ્રદ્ધાવંત ગુરુભક્તો બપોરે ૨ કલાકે ધર્મસભા ખંડમાં ગોઠવાઈ ગયા હતા. બપોરે ૨-૩૦ કલાકે પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ - આચાર્યશ્રી અને શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદે ધર્મ સભા ખંડમાં પ્રવેશ કર્યો હતો. ત્યારે જયજયકારના નારાઓથી ધર્મસભા ખંડ ગુંજી ઉઠ્યો હતો.

પૂજ્યશ્રીના મંગલાચરણથી ચાતુર્માસ ઘોષણા કાર્યક્રમનો શુભારંભ થયો હતો. પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો તેમજ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનું પોતાના સંઘમાં સંવત ૨૦૭૫ના વર્ષનું ચાતુર્માસ કરાવવાના અરમાનો સાથે દરેક સંઘના પ્રતિનિધિશ્રીઓએ ક્રમવાર પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો અને શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના ચાતુર્માસ માટે વિનંતી કરી હતી. દરમ્યાન (રાજનગર) અમદાવાદ ખાતે પંચદિવસીય મહોત્સવ સાથે આત્મોદ્ધાર-૩ના યોજાનાર પ્રસંગને દિપાવવા પધારવા અ.ભા. સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ તેમજ સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ વતી રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ અને ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈએ ભાવભર્યું સકળ સંઘને આમંત્રણ આપ્યું હતું. જ્યારે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીશ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા હયાત ન હોય તો પરિવારના વડીલોના વધામણા અને બહુમાન કરવાનું સૌભાગ્ય શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદને પ્રાપ્ત થતાં અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તથા શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના અધ્યક્ષ સમાજ ભૂષણ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ પુણ્ય સમ્રાટ સંપ્રદાયના સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા અથવા પરિવારના વડીલોને તા. ૨૧-૫-૨૦૧૯ની સાંજ સુધી અમદાવાદ ખાતે પધારવા આમંત્રણ આપ્યું હતું.

જ્યારે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા)ના અધ્યક્ષ શ્રી નિતીનભાઈ અદાણીએ શ્રમણ-શ્રમણી તેમજ મુમુક્ષુરત્નોને ધાર્મિક અભ્યાસ માટે સુરત ખાતે મોકલવા પૂજ્યશ્રીને ભારપૂર્વક વિનંતી કરી હતી અને કહ્યું હતું કે, રહેવા તથા જમવાની તમામ સગવડ મુમુક્ષુરત્નો માટે સુરત સંઘ કરશે.

આગળ ચાલતા કાર્યક્રમમાં દરેક સંઘોની વિનંતીને ધ્યાનગ્રસ્ત કરી શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના ચાતુર્માસ માટે સ્વીકૃતિ આપી હતી. ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, સ્પષ્ટવક્તા આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ને ધાનેરા ખાતે ચાતુર્માસ માટે સ્વીકૃતિ આપી હતી. અને ગચ્છાધિપતિ ચાતુર્માસ છેલ્લી ઘડીએ પેપરાલ ખાતે થશે તેવું જણાઈ રહ્યું હતું. પણ પૂજ્યશ્રીને ઉચિત જણાતા મ.પ્ર. ના પીપલોદા ખાતે ચાતુર્માસ કરશે તે માટે ઘોષણા કરતાં જય બોલાઈ હતી.

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા સંવત ૨૦૭૫ના વર્ષના ચાતુર્માસની ઘોષણા

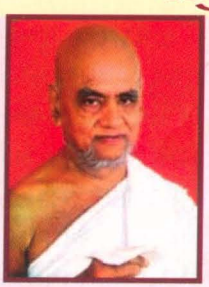

પીપલોદા (મ.પ્ર.)

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ
શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી
મ.સા. આદિ ઠાણા.

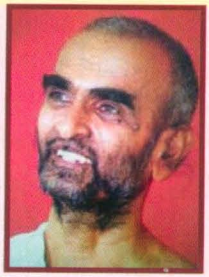

ધાનેરા (ગુજરાત)

ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય
શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી
મ.સા. આદિ ઠાણા.

- **અમરનગર જોધપુર (રાજ.) :** મુનિરાજશ્રી વીરરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા
- **પાલિતાણા (ગુજરાત) :** મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્નવિજયજી, મુનિરાજશ્રી વિનયરત્નવિજયજી., મુનિરાજશ્રી અજિતસેન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **પાટણ (ગુજરાત) :** મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **બીજાપુર (કર્ણાટક) :** મુનિરાજશ્રી વૈભરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **અમદાવાદ (ગુજરાત) :** મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા

શ્રમણીવૃંદ

- **સાબરમતી (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **નવા વાડજ (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **પાલડી (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકીરણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **ખાનપુર (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા.
- **મીઠાખળી (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી રંજનમાલાશ્રીજી મ.સા.
- **મોટેરા (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **મીઠાખળી (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **અમરાઇવાડી (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

- **ખાનપુર (અમદાવાદ) :** સાધ્વીજીશ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **ધાનેરા (ગુજરાત) :** સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **બેંગ્લોર (કર્ણાટક) :** સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **પાલિતાણા (ગુજરાત) :** સાધ્વીજીશ્રી ચંદ્રયશાશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી વિજ્ઞાનલતા શ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા – ૫
- **સુરત (ગુજરાત) :** સાધ્વીજીશ્રી શશિપ્રભાશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી નિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **અંજડ (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **ધાર (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **જાવરા (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **ખેતવાડી (મુંબઈ) :** સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા.
- **આલોટ (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી વિદ્વદગુણાશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **જાલોર (રાજ.) :** સાધ્વીજીશ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **આહોર (રાજ.) :** સાધ્વીજીશ્રી શાસનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **પાટણ (ગુજરાત) :** સાધ્વીજીશ્રી તત્વલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **બડનગર (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી અનેકાંતલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **જ્ઞાનમંદિર જોધપુર (રાજ.) :** સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **નાગદા જં. (મ.પ્ર.) :** સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **દાઘાલ (રાજ.) :** સાધ્વીજીશ્રી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા
- **ડીસા (ગુજરાત) :** સાધ્વીજીશ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

શ્રી સ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર પુણ્ય સમ્રાટ સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતાના વધામણા અને સત્કારવાનું અનંત પુણ્ય ઉપાર્જન કરતું શ્રેષ્ઠ અનુમોદનીય સૌભાગ્ય શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘને સાંપડતા સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સહિત થરાદવાસીઓમાં હર્ષની હેલી વરસી ગઇ છે. શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત ઉક્ત કાર્યક્રમ તા. ૨૧-૫-૨૦૧૯ના રોજ સંપન્ન થનાર છે. આ કાર્યક્રમને નિહાળવો અને તેના સાક્ષી બનવું એ પણ લ્હાવો છે. તો યાદ રાખજો તા. ૨૧-૫-૨૦૧૯ની મંગલમય સલુણી સંધ્યા : સાંજે ૭.૩૦ કલાકે, વલ્લભસદન, રીવર ફ્રન્ટ, અમદાવાદ.

(રાજનગર) અમદાવાદના આંગણે આત્મોદ્ધાર પ્રસંગ નિમિત્તે પંચદિવસીય મહોત્સવ

અ.ભા. સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - પરિષદ પરિવાર સહ. સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત (રાજનગર) અમદાવાદના આંગણે આત્મોદ્ધાર પ્રસંગ નિમિત્તે પંચ દિવસીય મહોત્સવનું ભવ્ય આયોજન કરાયું છે. આ પાંચેય દિવસના કાર્યક્રમની વિગત અત્રે પ્રસ્તુત છે.

પ્રથમ દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ - ૧ ને રવિવાર તા. ૧૯-૫-૨૦૧૯

સવારે ૬-૦૦ કલાકે મહા માંગલિક નવસ્મરણ વંદના... સવારે ૮ કલાકે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્યશ્રી જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદ તેમજ મુમુક્ષુરત્નોનો (રાજનગર) અમદાવાદના આંગણે હાથીખાના ગુરૂમંદિરથી ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે વાજતે-ગાજતે પ્રવેશ સવારે ૮-૩૦ કલાકે સરદાર સેવા સમાજ, નવરંગપુરા ખાતે શ્રી સંઘ નવકારશી, સવારે ૯-૩૦ કલાકે પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા માંગલિક તથા રથયાત્રાની ઉછામણી, બપોરે ૧૨ કલાકથી આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ, બપોરે ૧૨.૩૯ કલાકે વિઘ્ननાશક શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન વિધિકારક શ્રી કૃણાલભાઈ સુરાણી ભણાવશે. લાભાર્થી- અદાણી કંચનબેન વાઘજીભાઈ પરિવાર, સાંજે ૫-૩૦ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ. સવાર-બપોર અને સાંજની સંપૂર્ણ સાધર્મિક ભક્તિના લાભાર્થીમોરખીયા ભીખીબેન હીરાલાલ ચુનીલાલ પરિવાર, સાંજે ૭ કલાકે મુમુક્ષુ સંગ જિનાલય જુહારીએ.. પાલડી ગુરૂમંદિર જિનાલય થઈ ચિંતામણી જિનાલય જુહારી સરદાર પટેલ સેવા સમાજ હોલ ખાતે પધરામણી.. લાભાર્થી દોશી ચંપાબેન મફતલાલ પરિવાર સાંજે ૮ કલાકે મેહુલભાઈ શાહ, શાલિન શાહના સ્વરોમાં પ્રભુ સંગ પ્રીત લગાઈ કાર્યક્રમ સંપન્ન થશે.

દ્વિતીય દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ - ૨ ને સોમવાર તા. ૨૦-૫-૨૦૧૯

સવારે ૫.૩૦ કલાકે મહા માંગલિક નવ સ્મરણ વંદના, સવારે ૬.૩૦ કલાકે પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય ધનચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની અદ્વિતીય રચના - અષ્ટ પ્રવચન માતા મહાપૂજન સ્વર આપશે સચીનભાઈ વિમય તથા સપ્ત સંગીતકારો - નંદપ્રભા. લાભાર્થી: બલ્લુ સેવંતીલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર, સવારે ૯ કલાકે સરદાર પટેલ સેવા સમાજ હોલ નવરંગપુરા ખાતે આમંત્રિત મહેમાનોની નવકારશી, બપોરે ૧૨ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ, બપોરે ૨ કલાકે, આધ્યાત્મિક ધુળોટી, કેસર છાંટણા સ્વર આપશે કેતનભાઈ દેઢિયા. સાંજે ૫.૩૦ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ, સવાર, બપોર અને સાંજની સંપૂર્ણ સાધર્મિક ભક્તિના લાભાર્થી: વોહેરા વીરચંદભાઈ રીખવચંદભાઈ પરિવાર, સાંજે ૭ કલાકે મુમુક્ષુરત્નોની રાજપથ પર રાજ સવારી, મીઠાખળી જિનાલય ગુરૂમંદિર થઈ મુમુક્ષુરત્નો રાજપથ પર સરદાર પટેલ સેવા સમાજ હોલ પધારશે, સાંજે ૮ કલાકે ''તું પ્રભુ મુજને મળ્યો'' સ્વર આપશે અભિષેક જૈન - ભવ્ય ભણસાળી.

તૃતીય દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ ૩ ને મંગળવાર તા. ૨૧-૫-૨૦૧૯

સવારે ૫.૩૦ કલાકે મહા માંગલિક નવસ્મરણ વંદના, સવારે ૬.૧૫ કલાકે મુમુક્ષુરત્નોની છાબના વધામણા સ્વર આપશે શાલિન શાહ, અમન જૈન, સવારે ૮.૩૦ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની નવકારશી લાભાર્થી : વોહેરા શાંતિલાલ વીરચંદભાઈ પરિવાર, બપોરે ૧૨ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ, લાભાર્થી : દોશી ગગલદાસ નાગરદાસભાઈ પરિવાર, બપોરે ૨ કલાકે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ અષ્ટપ્રકારી મહાપૂજા, લાભાર્થીઃ દોશી નરપતલાલ ટીલચંદભાઈ પરિવાર, સાંજે ૫.૩૦ કલાકે આમંત્રિત મહેમાનોની સાધર્મિક ભક્તિ, લાભાર્થીઃ શેઠ ધાપુબેન વાઘજીભાઈ બાદરમલ પરિવાર, સાંજે ૭-૩૦ કલાકે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયના ૨૫૦થી અધિક સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના માતા-પિતાના વધામણા અને સત્કારવાનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થશે. તેમજ ૨૦થી અધિક દીક્ષાર્થીઓના માતા-પિતાનું બહુમાન કરવામાં આવશે. સ્વર આપશે પ્રશાંત શાહ, ભાવિક શાહ, સંવેદના : સ્મિત શાહ, સ્થળ : વલ્લભસદન રિવરફ્રન્ટ, લાભાર્થીઃ વીરવાડીયા બાબુલાલ વીરચંદભાઈ પરિવાર.

ચતુર્થ દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ ૪ ને બુધવાર, તા. ૨૨-૫-૨૦૧૯.

સવારે ૫.૩૦ કલાકે મહા માંગલિક નવસ્મરણ વંદના, સવારે ૬.૨૦ કલાકે ભવ્યાતિભવ્ય રથયાત્રા, સવારે ૮-૩૦ કલાકે નવકારશી, લાભાર્થી : રાંકા સુખીદેવી કેસરીમલજી પરિવાર, બપોરે ૧૨ કલાકે સંઘ સ્વામીવાત્સલ્ય, લાભાર્થી : વોહેરા હિંમતલાલ ચીમનલાલ પરિવાર, બપોરે ૨ કલાકે અદ્ભુત શાસ્ત્રીય ત્રિવિભાગીય દાનશાળા, સાંજે ૫.૩૦ કલાકે સાધર્મિક ભક્તિ, લાભાર્થીઃ ભણસાળી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર, સાંજે ૭.૩૦ કલાકે ભવ્યાતિભવ્ય ભાવપૂજા ઉત્સવ, સ્વર આપશે પારસ ગડા, દેવાંશી દોશી, સંવેદના પ્રતિકભાઈ શાહ. વિજય યાત્રા : લાભાર્થી : વોહેરા બબલદાસ દલછાચંદભાઈ પરિવાર.

પંચમ દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ ૫ ને ગુરુવાર તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯

આત્મોદ્ધાર-૩

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં વલ્લભ સદન રીવરફ્રન્ટ, આશ્રમ રોડ, અમદાવાદ (રાજનગર) ખાતે ૧૯ મુમુક્ષુરત્નો બંને આચાર્ય ભગવંતોના વરદ્હસ્તે સામુહિક દીક્ષા અંગિકાર કરી શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના આંગણે એક નવો ઈતિહાસ સ્થાપિત કરશે. સવારની નવકારશી, લાભાર્થીઃ વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવાર, બપોરના સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યના લાભાર્થીઃ શેઠ જેઠીબેન ચીમનલાલ મુળચંદભાઈ પરિવાર (દૈયપવાળા), સાંજના ચૌવિહારના લાભાર્થીઃ વોહેરા ભુદરમલ ખેતશીભાઈ પરિવાર

આત્મોદ્ધાર- ૩ આયોજક : સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - અમદાવાદ, મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન

सद्‌गुरु समर्पणम्

મારા ગુરુ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

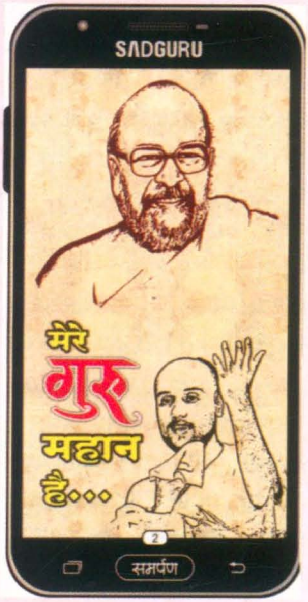

૩૭. ગુરુ આપણી આસ-પાસ છે એવો આપણને વિશ્વાસ હોવો જોઇએ.

૩૮. ગુરુ એ જહાજ છે જેમને લાખોને ડૂબતા બચાવ્યા છે અને કિનારે પહોંચાડ્યા છે.

૩૯. ગુરુએ જ હિંમત આપી આગળ વધવાની આપણને તો ચાલતાં પણ નતું આવડતું.

૪૦. ગુરુ પ્રભુની છાયા છે, આવ્યા જે ગુરુ શરણમાં એમને આનંદ અને આનંદ જ મેળવ્યો છે.

૪૧. ગુરુના દિલને જીતવા વાળા સહુથી મોટા વિજેતા છે.

૪૨. ગુરુ વિના પરમાત્મા સુધી પહોંચવું અસંભવ છે. જેમ કે, સાધન વિના સાધ્ય પામવું અસંભવ છે.

૪૩. ગુરુ નું હૃદય ઘણું મોટું હોય છે. પરંતુ એમાં વસવાવાળા ઘણા ઓછા હોય છે.

૪૪. ગુરુની પાછળ-પાછળ જે ચાલે છે તે ક્યારેય ભટકતા નથી.

૪૫. ગુરુ પર જેને અતૂટ વિશ્વાસ હોય છે એના હર શ્વાસ પર ગુરુનું નામ હોય છે.

૪૬. ગુરુ એ સૂરજ છે જેમના આવવા પર જીવનમાં સવાર છે, જેમના જવા પર જીવનમાં અંધારુ છે.

૪૭. ગુરુ જેના પર પ્રસન્ન છે તે હંમેશાં ઉન્નતિ કરે છે.

૪૮. ગુરુ અપેક્ષા વિના ઉપકાર કરે છે.

(ક્રમશઃ)

અ.ભા. સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અને પરિષદ પરિવાર દ્વારા આયોજિત પુણ્ય સપ્તમી પર્વ પ્રસંગે ભારતભરના સંઘોમાં પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક, રાષ્ટ્ર સંત, લોક સંત, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની દ્વિતીય વાર્ષિક સ્વાર્ગારોહણ તિથિ પુણ્ય સપ્તમી પર્વ પ્રસંગે અ.ભા. સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અને પરિષદ પરિવાર દ્વારા આયોજિત ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાનુસાર શ્રી જયંતસેનસૂરિ મ્યુઝિયમ મોહનખેડા, ભાંડવપુર તીર્થ સહિત ભારતભરના ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર વદ ૭ ને શુક્રવાર તા. ૨૬-૪-૨૦૧૯ના રોજ દરેક સંઘોમાં અવનવા કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. જેવા કે જિનાલયમાં પ્રભુજીની ભવ્ય અંગરચના, પ્રભુ પંચકલ્યાણક પૂજનો, ગુરુપૂજનો, ગુણાનુવાદ, આયંબિલ તપશ્ચર્યા, નવકાર જાપ, જીવદયા, અનુકંપાદાન, ભિક્ષુક ભોજન, સાધર્મિક ભક્તિ, દાદા ગુરુદેવ તેમજ પુણ્ય સમ્રાટની આરતી વિગેરે ધર્મ પ્રભાવક અને માનવતાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. આ અવસરે પુણ્યસમ્રાટ સમુદાયના સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદે, મુમુક્ષુરત્નોએ તેમજ લાખો ગુરુભક્તોએ પુણ્ય સમ્રાટને શ્રદ્ધાસુમન સમર્પણ કર્યા હતા.

પુણ્ય સપ્તમી પ્રસંગે પાટણમાં ત્રિદિવસીય મહોત્સવ સંપન્ન

ગુજરાતના પાટણ નગરમાં સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈનાચાર્ય ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પ્રશિષ્ય યુગપ્રભાવક પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મહારાજાના દેવલોક ગમનની દ્વિતીય વાર્ષિક પુણ્યતિથિ નિમિત્તે પુણ્ય સપ્તમી મહોત્સવ પ્રસંગે ત્રિદિવસીય કાર્યક્રમનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન અને ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીમુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા તા. ૨૫-૪-૨૦૧૯થી તા. ૨૭-૪-૨૦૧૯ દરમ્યાન પુણ્ય સપ્તમી મહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું.

મહોત્સવના પ્રથમ દિવસે (રાજનગર) અમદાવાદ ખાતે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર (સામુહિક દીક્ષા)ના મુમુક્ષુરત્નોની ભવ્ય શોભાયાત્રા, મુમુક્ષુરત્નોનું બહુમાન, પાર્શ્વનાથ પંચકલ્યાણક પૂજા, પરમાત્માને અંગ રચના તથા ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. દ્વિતીય દિવસે ભક્તામ્બર સ્ત્રોત સહિત ગુરૂ સ્મરણ પાઠ, ગુરૂગુણાનુવાદ, જયંતસેનસૂરિ

અષ્ટ પ્રકારી પૂજન, પરમાત્માને અંગરચના અને ભક્તિ ભાવના સાથે પુણ્ય સમ્રાટની ભવ્ય આરતી કરાઈ હતી. તૃતિય દિવસે સામુહિક સામાયિક, રાજેન્દ્રસૂરિ અષ્ટપ્રકારી પૂજન, પરમાત્માને અંગરચના અને ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

પુણ્ય સમ્રમીના ત્રિદિવસીય કાર્યક્રમમાં જનસેવા, જીવદયા અને અનુકંપા કાર્યા સાથે પાટણનગરના ૧૦૭ જિનાલયના પુજારી અને કર્મચારીઓને સીધુ સામાન આપી બહુમાન કરાયું હતું. જિનાલય અને ગુરૂમંદિરમાં સવારે-સાંજે શહનાઈવાદક અને સુપ્રસિદ્ધ સંગીત પાર્ટી મનમધુકર ગૃપ દ્વારા સંગીતના સૂરોથી વાતાવરણ ભક્તિમય બની ગયું હતું. આ પુણ્ય સમ્રમી મહોત્સવને અવિસ્મરણીય બનાવવા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણના ભક્તોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

આત્મોદ્ધાર : શુભ પળોમાં થયું છે ગુરુમુખેથી નામકરણ

અધ્યાત્મક્ષેત્રમાં નામના-કામનાને મોહના પર્યાયો કહ્યા છે. જેનાથી રાગ-દ્વેષના પોષણ થાય છે. નામ કોઈનું અમર રહેતું નથી. તો પણ વ્યક્તિ નામ માટે જીવનભર મથે છે. અનામી સ્વરૂપના સ્વામીને નામનું કેવું ઘેલું લગાવ્યું છે. આ મોહનીય કર્મોએ... પણ આ બધી વાત અજ્ઞાની જીવોને આશ્રયીને કરી છે.

આપણે વાત કંઈક જુદી જ કરવી છે...

સકલાર્હત્ સ્તોત્રમાં પ્રભુના ૪ નિક્ષેપનો સુંદર મહિમા વર્ણવ્યો છે. તેમાં સર્વપ્રથમ નામ નિક્ષેપ કહ્યો છે. પરમાત્માના નામ સ્મરણથી જગત પવિત્ર બને છે. નામ સ્મરણનો મહિમા શાસ્ત્રોમાં મન ભરીને ગવાયો છે. જેમ કે,

- ભક્તામર સ્તોત્ર — **ત્વન્નામ કીર્તન જલં શમયત્ય શેષમ્ ।**
- કલ્યાણમંદિર સ્તોત્ર — **નામાપિ પાતિ ભવતો ભવતો જગન્તિ ।**
- ભરદેસર સજઝાય — **જેસિં નામગહણે પાવપ્પબંધા વિલયં જન્તિ ।**
- અજિતશાંતિ — **તવ પુરિસત્તમ ! નામ-કિત્તર્ણમ્ ।**

''યથા નામ તથા ગુણ'' આ કહેવત પાછળ પણ કંઈક રહસ્ય તો હશે જ.... બાકી નામ શાંતિલાલ હોય અને જીવન અશાંતિ અશાંતિથી ભરેલું હોય. નામ લક્ષ્મીચંદ હોય અને લક્ષ્મી માટે જ તરસતો હોય.... આવું જોવા મળે છે.. સંસારી જીવો નામનાની કામના પાછળ મૂલ્યવાન માનવજન્મને હારી જાય છે. શુભ સંયોગે ''સદ્‌ગુરુનો યોગ'' થાય, તેમને મુખે ''ધર્મોપદેશ'' સંભળાય, સન્માર્ગ પ્રાપ્ત થાય, તત્વની પીછાણ થાય, હેય, જ્ઞેય, ઉપાદેયનું ભાન થાય, આત્માની ઓળખ થાય અને જીવન પરિવર્તનની શરૂઆત પણ થાય. એક ધૂન લાગે, હવે તો અરૂપી બનવું છે,

અનામી બનવું છે, અનાદિ ભવભ્રમણે વિરામ આપવો છે. હૈયામાં પ્રગટેલ વૈરાગ્ય દીવડાના અજવાળે-અજવાળે મોક્ષ ભણી આગળ વધવું છે. વર્તમાનના વિષમ વાતાવરણ દિવસે-દિવસે મોજ-શોખના સાધનો વધી રહ્યા છે. આવા સમયમાં પણ પદ, પદાર્થ, પરિજનોનો મોહત્યાગી ઘણા ભવ્યાત્માઓ સાધનાના પંથે પ્રસ્થાન કરી રહ્યા છે, જે દશ્યો જોતા સાધનોની દુનિયામાં ગળાડૂબ જીવોના મસ્તકો ઝૂકી જાય છે. ચારેબાજુ ''સામુહિક દીક્ષા''ના પડઘમો વાગે છે. જિનશાસનનો જયકાર વર્તે છે, વિરતિધર્મના વધામણા કરતા સહુ કોઈ લાલાયિત બને છે, અનુમોદના કરીને પણ જીવનને ધન્ય બનાવે છે. આવો જ એક અદકેરો પ્રસંગ બે વર્ષ પૂર્વે વીરભૂમિ થરાદ નગરે ''આત્મોદ્ધાર''ના નામે યોજાયો હતો. જે સર્વત્ર વખણાયો હતો, સવાયો હતો, ગવાયો હતો. ''આત્મોદ્ધારક'' હતા યુગ પ્રભાવક, ધર્મ પ્રભાવક, અજોડ શાસન પ્રભાવક પ.પૂ. ત્રિસ્તુતિક સંઘના સમર્થનાયક પૂજ્યપાદ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પૂજ્યશ્રીએ ૬૩ વર્ષના સંયમ પર્યાય અને ૫૬ વર્ષના આચાર્ય પર્યાયમાં ૨૦૦ જેટલા પુણ્યાત્માઓને રજોહરણ આપી નવપદના પંચમપદે આશીન કર્યા. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં એક નહિં અનેકવાર સામૂહિક દીક્ષાનું આયોજિત થઈ હતી. પણ તેનું કોઈ ''નામકરણપૂર્વક'' આયોજન થયું ન હતું. આ સમયે ૧૧ થી પ્રારંભ થયેલ મુમુક્ષુઓનો આંક ૨૫ સુધી પહોંચી ગયો. આવો વિશાળ પ્રસંગ પ્રથમવાર હોઈ ત્રિસ્તુતિક શ્રી સંઘમા અપાર ઉલ્લાસ જામ્યો હતો. સહુનો હૈયે હર્ષ સમાતો ન હતો. પૂજ્યશ્રી પણ માળવાથી વિહાર કરી થરાદ ભણી પધારી રહ્યા હતા. વિહારના એક નાનકડા ગામમાં અમે રોકાયેલ હતા. પત્રિકાનું આલેખનકાર્ય ચાલતુંહતું. મારા અને જિનાગમરત્ન વિ. મ.સા. વડે વિચારણા કરાઈ કે આટલો મોટો દીક્ષા પ્રસંગ છે તેનું કોઈક નામકરણ ''ગુરૂમુખેથી'' થઈ જાય તો કેવું રહે ? પછી જ્યારે જ્યારે ત્રિસ્તુતિક સંઘમાં દીક્ષા પ્રસંગ થાય તો આ જ નામપૂર્વક થાય. એવો વિચાર કરી અમારા ભાવોના પુષ્પ પ્રસન્નચિત્, લેખનરત્ પૂ. ગુરૂદેવશ્રીના ચરણકમળોમાં અર્પયા. તે જ સમયે પૂ. ગુરૂદેવશ્રીના મુખકમળોથી સહજમાં ''આત્મોદ્ધાર'' શબ્દનાદ થયો. અમે ખૂબ અહોભાવે તેના વધામણા કર્યા. એ પછી થરાદનો દીક્ષા પ્રસંગ ''આત્મોદ્ધાર''ના નામે ખૂબ ભવ્યતાથી - દિવ્યતાથી આયોજિત થયો. દશે દિશામાં તેની સુવાસ પ્રસરી. પૂ. ગુરૂદેવશ્રી એ અપાર પ્રસન્નતાને અનુભવી હતી. પણ એ પ્રસન્નતાને જાણે કોઈની નજર લાગી હોય તેમ માત્ર ૨ મહિના પછી ''પૂ. ગુરૂદેવશ્રીએ સકળશ્રી સંઘને છોડી દેવલોક ભણી પ્રસ્થાન કર્યું, ગુરૂવિયોગથી ચતુર્વિધ શ્રી સંઘ શોકમગ્ન બન્યો. વાત્સલ્યના મહાસાગર સમા ગુરૂદેવશ્રીના સ્મરણમાં રહી સહુ કોઈ એમના ગુણોનું અનુશરણ કરી રહ્યા છે.''

સહુ કોઈ પૂજ્યશ્રીને જીવંત રાખવાનો જ પુરૂષાર્થ કરી રહ્યા છે. પુણ્ય સમ્રાટ

ગુરૂદેવશ્રી પટ્ટધર રૂપે બંને આચાર્ય ભગવંતો પૂજ્યશ્રીના શાસન પ્રભાવક કાર્યોના પ્રવાહને આગળ વધારી રહ્યા છે. એ જ રૂપમાં આત્મોદ્ધાર-૨ ગત વર્ષે શ્રી શેત્રુંજ્ય મહાતીર્થમાં થયો હતો. જેમાં ૧૦ વીર બહેનોએ સર્વવિરતિનો સ્વીકાર કર્યો. ફરી એકવાર આત્મોદ્ધારના મંગળ પડઘમ થવા જઈ રહ્યો છે. રાજનગરના આંગણે... જેમાં ૧૯ મુમુક્ષુઓ મુહુર્ત સ્વીકારી સંયમ સાધક બનવા સજ્જ બન્યા છે. સર્વત્ર આત્મોદ્ધાર... આત્મોદ્ધારની જ અનુમોદના થઈ રહી છે. આ સર્વે જોતા રહી-રહીને દીર્ઘદષ્ટા, વચનસિદ્ધ ગુરૂદેવશ્રીની યાદ આવવી સહજ છે. કારણ કે કોઈક શુભ પળે ''ગુરૂમુખેથી આત્મોદ્ધાર''નું નામકરણ થયું છે. તેથી જ માત્ર ૨૮ મહિનાના ટૂંકા સમયમાં જ ૫૫ જેટલી દીક્ષા સંપન્ન થશે. આ પણ ગુરૂકૃપાનું જ બળ છે. આવી ગુરૂકૃપા સતત વરસતી રહે.. એ જ કામના. - મુનિ નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.નો સંદેશો...

જૈન શ્વેતાંબર શ્રી સંઘ સુશ્રાવક સા. ધર્મલાભ

ઉજ્જૈન ચાતુર્માસ બાદ મોહનખેડા જિનદર્શન ગુરૂવંદન કરી કુક્ષી શ્રી તાલનપુર તીર્થ પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા અંજનશલાકાનો કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાવી રાજસ્થાન તરફ પ્રસ્થાન કર્યું. રાજસ્થાનમાં પ્રાચીન તીર્થ કોરંટ (કોરટાજી) તીર્થમાં ગુરૂ સપ્તમીનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાવી સિયાણામાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા અંજનશલાકા સંપન્ન કરાવી સરત (અમરસર)માં ભવ્ય ગુરૂમંદિરની પ્રતિષ્ઠા અને આચાર્ય પ્રવર શ્રી જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં ગોલ ઉમેદાબાદ ગુરૂમંદિરની પ્રતિષ્ઠા બાદ બંને આચાર્ય ભગવંતો દ્વારા ફતાપુરામાં ભવ્ય પ્રાણ પ્રતિષ્ઠામાં નિશ્રા પ્રદાન કરી આચાર્ય પ્રવરશ્રીએ ડોરડા પ્રતિષ્ઠામાં નિશ્રા પ્રદાન કરી. રાણી સ્ટેશન દાદાવાડીમાં ગુરૂમંદિરની પ્રતિષ્ઠા, સિરોહી મીરપુર નજીક વાડેલી નદી કિનારે શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ રાજેન્દ્રધામમાં ભવ્ય પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા અંજનશલાકા સંપન્ન કરાવી મધ્યપ્રદેશ તરફ પ્રસ્થાન કર્યું. ક્રમશઃ વિહાર કરતાં કરતાં દાહોદ, ભાભરા, અલિ રાજપુર પ્રવેશ, પારા થઈ શ્રી મોહનખેડા તીર્થ ૮ એપ્રિલના રોજ જયંતસેન મ્યુઝીયમ પહોંચ્યા. ગુરૂકૃપાથી બધા જ મુનિ ભગવંતોનું સ્વાસ્થ્ય સ્વસ્થ રહ્યું છે.

શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમમાં ઓળી આરાધના રાજગઢમાં પ્રતિષ્ઠા, મુમુક્ષુરત્નોનું બહુમાન, ચાતુર્માસ ઘોષણા, તા. ૨૬-૪-૨૦૧૯ના રોજ ગુરૂદેવની દ્વિતીય વાર્ષિક સ્વર્ગારોહણ તિથિ પુણ્ય સપ્તમીએ ધર્મકાર્યો સંપન્ન કરાવી ગુરૂદેવ પુણ્ય સમ્રાટના ચરણોમાં વંદન કરી શ્રદ્ધાસુમન સમર્પણ કરી માળવાના બાકી ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન કરાવી મુમુક્ષુરત્નોને આત્મોદ્ધાર (સામુહિક દીક્ષા) આપવા રાજનગર તરફ આવવા પ્રસ્થાન કરશું.

સકળશ્રી સંઘ, ગુરૂભક્તોને ધર્મ લાભ.

कुमकुम सने पगलिये

चातुर्मास गच्छाधिपतिजी का पिपलौदा में तथा आचार्यश्री का धानेरा में घोषित

श्री मोहनखेड़ातीर्थ । यहाँ स्थित श्री जयंतसेन म्यूजियम परिसर के विशाल सभागृह में विगत 19 अप्रैल शुक्रवार को आयोजित धर्मसभा में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के गच्छाधिपति धर्म दिवाकर जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी महाराज तथा सूरिमंत्र आराधक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज ने समाज को दृढ़ एकता तथा पुण्य सम्राट स्व. श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के उपदिष्ट मार्ग का नैष्ठिक अनुसरण करने का आह्वान किया। साथ ही दोपहर बाद दोनों आचार्य भगवन्तों सहित गच्छ के साधु तथा साध्वी समुदायों के इस वर्ष चातुर्मास स्थलों की घोषणा भी की।

प्रातः एक विशाल वरघोड़ा 'आत्मोद्धार-3 के अन्तर्गत संयम मार्ग की ओर अग्रसर उन्नीस मुमुक्षुओं का श्री आदिनाथ प्रभु जिनालय एवं गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के समाधि मंदिर पर दर्शनार्थ रवाना हुआ। भारी संख्या में स्त्री - पुरुष जुलूस में सम्मिलित थे।

वरघोड़े में प्रभु शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं पुण्य सम्राट की फोटो रथ में विराजमान कर नाचते गाते श्रीसंघ एवं परिषद परिवार के सदस्य नजर आये। वहाँ से वरघोड़ा म्युजियम पहुंचा।

श्री जयन्तसेन म्यूजियम स्थित सभागृह में दोनों आचार्य भगवन्तों के सान्निध्य में एकत्र हुए । समारोह में श्री राजराजेन्द्र तीर्थ दर्शन ट्रस्ट मंडल, श्री जयंतसेन म्यूजियम की ओर से मुमुक्षुओं का बहुमान आयोजित किया गया।

मुमुक्षुओं के आगमन पर अक्षत की उछाल से उनकी अगवानी की गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मिलापचंद्रजी चौधरी, ट्रस्टीगण श्री मुकेश जैन आदि प्रबंधक श्री विनोद मेहता के अतिरिक्त बाहर से पधारे समाज अग्रणीय श्री वाघजीभाई वोरा (अहमदाबाद), श्री रमेशभाई धरू (मुंबई), सुरेन्द्रजी लोढ़ा (मंदसौर), श्री रमेशभाई वोरा (नड़ियाद), श्री सुरेशजी तांतेड़ (राजगढ़), श्री

बाबुलालजी संघवी (दिल्ली), श्री रमेशजी धारीवाल (कुक्षी), श्री सोहनलालजी पारख (इंदौर) आदि ने मुमुक्षुओं का अभिनंदन पत्र, तिलक, शाल, माला द्वारा बहुमान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री नीरजजी सुराणा ने किया। प्रारंभ में श्री संघ प्रमुख एवं राष्ट्रीय, प्रांतीय परिषद कार्यकारीणी ने आचार्यद्वय श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. को सामूहिक गुरुवंदना की।

तत्पश्चात समस्त अतिथियों ने शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान एवं दादा गुरुदेव व पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के फोटो पर दीप प्रज्ज्वलित व माला अर्पित कर आयोजन का विधिवत शुभारम्भ किया।

जैन समाज के गौरव एवं पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की पाट परम्परा को आगे बढ़ाते हुए संयम के पथ पर चलने वाला दीक्षार्थी भाई विशेषजी अहमदाबाद, मिली बहन अहमदाबाद, संयम भाई सूरत, मीना बहन सूरत, निषी बहन अहमदाबाद, नियती बहन मुंबई, रोशनी बहन हैदराबाद, आंगी बहन सूरत, क्रिना बहन अहमदाबाद, मितल बहन अहमदाबाद, रिद्धी बहन अहमदाबाद, पूजा बहन उटाला, मोक्षाली बहन सूरत, बैरागी बहन सूरत, झील बहन सूरत, रिंकल बहन, सिल्की बहन सूरत, निराली बहन सूरत, पूजा बहन लाखणी का बहुमान किया साथ ही समस्त गुरुभक्तों ने पूरे हॉल में दीक्षार्थी अमर रहें व अनुमोदना बारंबार की जयघोष लगाई। तत्पश्चात् उद्घोषणा पर्व में संपूर्ण आयोजन के लाभार्थी परिवार का भी ट्रस्ट की ओर से बहुमान किया गया।

दोपहर को पुनः धर्मसभा प्रारंभ हुई। देशभर से पधारे समस्त श्रीसंघों ने आचार्यद्वय, साध्वी मण्डल, मुनि मण्डल के वर्षावास हेतु अपने-अपने स्थान पर चातुर्मास करने की विनती की। जिसके चलते आचार्यद्वय ने समस्त श्रीसंघों की विनती स्वीकारते हुए चातुर्मास की घोषणा की।

जिसमें गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास पिपलौदा (जि. रतलाम) एवं आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास धानेरा (मारवाड़) फरमाया। इसके साथ-साथ समस्त मुनिमण्डल एवं साध्वीमण्डल का भी श्रीसंघों की विनति अनुसार चातुर्मास फरमाया। चातुर्मास घोषणा होते ही संपूर्ण चातुर्मास उद्घोषणा हाल जय-जयकार, जय-जयकार राष्ट्र संत की जय-जयकार से गूंज उठा।

श्रमण- श्रमणीवृन्द

1.	पिपलोदा, रतलाम (म.प्र.)	गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.	ठाणा -6
2.	धानेरा (गुज.)	आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.	ठाणा -4
3.	अमरनगर, जोधपुर (राजस्थान)	मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा.	ठाणा -2
4.	पालिताना (गुज.)	मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी म.सा.	ठाणा -3
5.	पाटण (गुज.)	मुनिराज श्री चरित्ररत्नविजयजी म.सा.	ठाणा -6
6.	बीजापुर (कर्नाटक)	मुनिराज श्री वैभवरत्नविजयजी म.सा.	ठाणा -3
7.	मीठाखली अहमदाबाद (गुज.)	मुनिराज श्री जीनागमरत्नविजयजी म.सा.	ठाणा -4
8.	साबरमती अहमदाबाद (गुज.)	साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा.	ठाणा -13
9.	पालड़ी अहमदाबाद (गुज.)	साध्वी श्री पूर्णकिरणाश्रीजी म.सा.	ठाणा -16
10.	नवावाडज अहमदाबाद (गुज.)	साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा.	ठाणा -
11.	धानेरा (गुज.)	साध्वी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा.	ठाणा -6
12.	बैंगलोर (कर्नाटक)	साध्वीजी श्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा.	ठाणा -4

13	पालिताना (गुज.)	साध्वीजी श्री चन्द्रयशाश्रीजी म.सा.	ठाणा -5
14	सूरत (गुज.)	साध्वीजी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.	ठाणा -1
15	सूरत (गुज.)	साध्वीजी श्री निधिश्रीजी म.सा.	ठाणा -
16	अंजड, धार (म.प्र.)	साध्वीजी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा.	ठाणा -3
17	खानपुर अहमदाबाद, (गुज.)	साध्वीजी श्री रत्नयशाश्रीजी म.सा.	ठाणा -1
18	धार (म.प्र.)	साध्वीजी श्री अविचल दृष्टाश्रीजी म.सा.	ठाणा -7
19	मोटेरा अहमदाबाद (गुज.)	साध्वीजी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म.सा.	ठाणा -7
20	जावरा (म.प्र.)	साध्वीजी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा.	ठाणा -7
21	खेतवाड़ी, मुंबई (महाराष्ट्र)	साध्वीजी श्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म.सा.	ठाणा -19
22	आलोट (म.प्र.)	साध्वीजी श्री विद्वदगुणाश्रीजी म.सा.	ठाणा -2
23	जालोर (राज.)	साध्वीजी श्री डॉ. श्री दर्शनकलाश्रीजी म.सा.	ठाणा -9
24	आहोर (राज.)	साध्वीजी श्री डॉ. श्री शासनलताश्रीजी म.सा.	ठाणा -4
25	पाटन (गुज.)	साध्वीजी श्री तत्वलताश्रीजी म.सा.	ठाणा -4
26	बड़नगर (म.प्र.)	डॉ. साध्वीजीश्री अनेकांतलताश्रीजी म.सा.	ठाणा -6
27	पालिताना (गुज.)	साध्वीजीश्री विज्ञानलताश्रीजी म.सा.	ठाणा -2
28	मीठाखली अहमदाबाद (गुज.)	साध्वीजीश्री चारित्रकलाश्रीजी म.सा.	ठाणा -6
29	ज्ञानमंदिर, जोधपुर (राज.)	साध्वीजीश्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा.	ठाणा -3

30	भीनमाल (राज.)	साध्वीजीश्री नयनप्रभाश्रीजी म.सा.	ठाणा -1
31	खानपुर अहमदाबाद (गुज.)	साध्वीजीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा.	ठाणा -4
32	दाधाल (राज.)	साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.	ठाणा -6
33	डीसा (गुज.)	साध्वीजी श्री संवेगप्रियाश्रीजी म.सा.	ठाणा -8
34	नागदा जंक्शन (म.प्र.)	साध्वीजी श्री अमृतसाश्रीजी म.सा.	ठाणा
35	मीठाखली अहमदाबाद (गुज.)	साध्वीजी श्री रंजनमालाश्रीजी म.सा.	ठाणा

पिपलौदा में भव्य तैयारियाँ

पिपलौदा । आचार्य देवेश नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व मुनि मंडल का आगामी 2019 का चातुर्मास पिपलौदा के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम में होगा। धाम के प्रचार संचिव प्रफुल जैन ने बताया कि पिपलौदा श्री संघ की ओर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम कोषाध्यक्ष राकेश जैन ने विनती की। सभी जगह की विनती को सुनकर आचार्यश्री ने पिपलोदा श्रीसंघ की प्रबल विनती को स्वीकार कर पिपलौदा में चातुर्मास हेतु अपनी सहमति प्रदान की ।

पिपलौदा में चातुर्मास की घोषणा होते ही नगर में खुशी की लहर दौड़ गई व सभी ने एक-दूसरे को बधाई दी। वहीं तरूण परिषद ने जैन मंदिर के सामने जमकर नृत्य कर खुशियाँ मनाई । पिपलौदा के इतिहास में पहली बार किसी जैन आचार्य का चातुर्मास होगा जो एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगा। चातुर्मास की घोषणा के बाद से ही पिपलौदा श्री संघ तैयारियों में जुट गया। 2019 के चातुर्मास को भव्यता प्रदान करने के प्रयास में लग गया। पिपलौदा से श्री संघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग, वाटिका अध्यक्ष शैलेन्द्र कटारिया, कैलाश नांदेचा, रमेशचन्द्र बाबेल, राकेश जैन इंदौर, जयंतीलाल गांधी, मोहनलाल जैन,

धीरज रूनवाल, जितेन्द्र बाबेल, जितेश नांदेचा, अशोक नांदेचा, मुकेश रॉयल, नितेश सुराणा, राजेश महावीर, लोकेश जैन, विनोद भंडारी, संजय बरमेचा, नीलेश नांदेचा आदि विनती हेतु मोहनखेड़ा पहुंचे थे।

बहुमान

रतलाम। गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व सूर्यमंत्र आराधक आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. कि निश्रा में 23.5.2019 अहमदाबाद में 'आत्मोद्धार 3' होने जा रहा है। उसी में से एक दीक्षार्थी रोशनी बहन रांका (हैदराबाद) नीमवाला उपाश्रय रतलाम पधारीं जहाँ त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व परिषद् परिवार द्वारा बहुमान व अनुमोदना की गई।

उनका चयन पैरामिलट्री फोर्स में हुआ था। ट्रेनिंग भी ली। साथियों ने रात्रि भोजन, कंदमूल नहीं खाते जैन के बारे में पूछा तो उत्तर नहीं दे पायी। उसी क्षण से जैनिज्म को अंतर से जानने की ललक से अब जैन धर्म वीतराग परमात्मा महावीर स्वामी के शासन की सैनिक बनने जा रही हैं। श्रीसंघ, नवयुवक, महिला, तरूण परिषद के सदस्यों ने आपका बहुमान कर बहुत ही हर्ष व्यक्त करते हुए संयम जीवन की मंगल कामना कर अनुमोदना की। सर्वश्री सुजानमल सोनी, गेंदालाल सकलेचा, सतीश खेड़ावाला, अभय सकलेचा, सुरेन्द्र गंग, देवेन्द्र मेहता, नितेश तलेरा, विपीन भंडारी, पंकज ओहरा, विकास गादिया, विनायक मूनत, अक्षतओहरा, महिला परिषद् से मंजू मेहता, ममता भंडारी, रामिला कोचर, शांता कटारिया, मधु लूनावत, सारिका लोढ़ा, पुष्पा घोचा, राजकुमारी सकलेचा, सारिका जैन, आशा कटलेचा आदि उपस्थित थे। संचालन प्रवीण संघवी ने किया। उक्त जानकारी नीलेश लोढ़ा व दीपक खेड़ावाला ने दी।

मालवा प्रवेश

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनि मंडल राजस्थान से उग्र विहार कर गुजरात से मध्यप्रदेश के अलीराजपुर, जोबट, बोरी, पारा होते हुए दिनांक 8 अप्रेल 2019 को तिरला होते हुए मोहनखेड़ा तीर्थ पहुंचे। जहाँ आचार्यश्री ने पूरे मुनिमण्डल,

साध्वी मण्डल के साथ मूलनायक भगवान एवं दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन कर बैंड-बाजों के साथ मोहनखेड़ा स्थित जयंतसेन म्यूजियम पर प्रवेश किया। जहाँ आचार्यश्री की महिला मंडल ने कलश एवं गहूंली से आगवानी की। जिसके बाद आचार्य श्री ने म्यूजियम में विराजित भगवान के दर्शन वंदन कर स्थानीय जयंत उपाश्रय में पहुँचे जहाँ उपस्थित समाजजनों को धर्मोपदेश दिया एवं मांगलिक का श्रवण करवाया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू (मुंबई), अशोकजी श्री श्रीमाल (इंदौर), बाबूलालजी मामा, कांतिलालजी भंडारी, मनोहरलालजी पुराणिक (कुक्षी), संतोषजी कांठेड़, रविजी मोदी, प्रणय भंडारी, हर्ष बाफना, कीर्ति भंडारी, सुधीर लोढ़ा, मनीष कुमट शाखा झकनावदा सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

मोहनखेड़ा पधारने पर आचार्य श्रीमद् विजयनित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की आगवानी श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढ़ी ट्रस्ट श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की ओर से मैनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ, ट्रस्टी संजय सर्राफ, ट्रस्टी साकलचंद तांतेड़ एवं तीर्थ के महाप्रबंधक अर्जुनप्रसाद मेहता आदि ने की।

आचार्यश्री ने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के जिन मंदिर में चैत्यवंदन किया तत्पश्चात् दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के समाधि मंदिर में गुरुवंदन किया साथ ही तीर्थ पर स्थित समस्त गुरु प्रतिमाओं का वंदन करने के पश्चात् आचार्य पाट कक्ष में आचार्य पाट पर दादा गुरुदेव के चित्र के समक्ष वंदन किया। आचार्यदेव श्रीमद् विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने परस्पर भेंटकर सुखशाता पृच्छा की।

पाटण नगर में पंचासरा जिनालय के समीप स्थित त्रिस्तुतिक उपाश्रय के राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि ज्ञान मंदिर में ऊंकार सूरि समुदाय के आचार्य श्री मुनिचन्द्रसूरि म.सा. एवं कलापूर्ण सूरि समुदाय के आचार्य श्री आनंदवर्धन सूरीश्वरजी म.सा.ओर उपाश्रय में बिराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी म.सा. का आत्मीय मिलन हुआ। इस पावन क्षण में 20 श्रवण भगवंत भी उपस्थित रहे। पाटण जैन संघ ओर पाटण में निवासरत वाव थराद पृथक ओर मारवाड़ी समाज के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गुरु भगवंतों के दर्शन

वंदन का लाभ लिया। स्मरण रहे कि करीबन 21 वर्ष पूर्व राजस्थान के आहोर नगर में शान्तिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. और आचार्य भगवंत श्री मुनिचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने मिलकर कराई थी। आचार्य भगवंतों ओर मुनिराज श्री के बीच हुई ज्ञान और धर्म चर्चा के समय दोनों आचार्य भगवंतों ने पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री को याद करते हुए उनके साथ पूर्व में हुए अनेक बार के मिलन के क्षणों का स्मरण किया। मुनिराज की विनंती पर दोनों आचार्य भगवंतों ने अपनी स्थिरता त्रिस्तुतिक उपाश्रय में की। दोनों आचार्य भगवंतों ने दोपहर में पुण्य सम्राट गुरुदेव के अध्यनरत शिष्यरत्नों को वाचना के रूप में हित शिक्षा दी और चल रहे अध्ययन में मार्गदर्शन प्रदान किया। मुनिराज श्री ने आचार्य भगवंतों को पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री रचित साहित्य अर्पण किया। मुनिराज श्री के दर्शनार्थ पाटण भाजपा जिलाध्यक्ष मोहनभाई पटेल पधारे।

जीवन निर्माण के 15 अमूल्य सूत्र

1) अनुशासन
2) समबद्धता
3) कठिन परिश्रम
4) दृढ़ संकल्प
5) नम्रता
6) ईमानदारी
7) सहनशीलता
8) सहयोग की भावना
9) वचन माधुर्यता
10) दूर दृष्टि
11) आत्मबल
12) शांति प्रियता
13) सादगी
14) उत्तर दायित्व
15) प्रेम भाव

* टेलीफोन में हैलो नहीं, जय - जिनेन्द्र बोले।
* हर घर में 10 मिनट सामूहिक प्रार्थना व स्वाध्याय हों।
* चौदह नियम का पालन करें।
* धार्मिक पाठशाला व धार्मिक शिविर हर गाँव नगर में हो।
* व्यसन मुक्ति व पटाखे त्याग का लक्ष्य रखें।

शूरवीर का अभिनन्द

अभिनन्द का अभिनन्द है ।
रक्त नहीं मुख पर जैन धर्म का चन्द है ।
मान बढ़ाया राष्ट्र और जैन धर्म का
ऐसे शूरवीर को हमार कोटी-कोटी नमन है ।
फंसा हुआ था दुश्मन के दल-दल में
जोश देख कर उस शूरवीर शेर का
कभी नहीं लगता है देव बलहीन है ।
रहे सलामत शूरवीर हमारा
कृपा करें श्री रघुनन्द है ।
अभिनन्द का अभिनन्द है ।
गगन भेज कर तुड़ दिया दुश्मन को
मार धाराया वाए मान को
उस वृधमार्न को मेरा कोटी-कोटी अभिनन्द है ।
अभी ना हिम्मत हारी उसने
साथ उसके देवकी नन्दन है ।
अभिनन्द का कोटी-कोटी अभिनन्द है ।
हमें गर्व है उस अभिनन्द पर
जीवन मूल्य अटल सत्य है ।
देखा जाता राष्ट्र का कृत्य है ।
मातृ भूमि हित की करे सुरक्षा
करते हैं भगवती उनकी रक्षा
वीर भारत का वीर सिपाही वंदनीय है ।
उस वीर की शौर्य गाथ हम कभी न भूला पायेंगे
ऐसे शूरवीर का अभिनन्द, अभिनन्द है ।

समाज सौरभ

गच्छाधिपतिजी के जन्म दिवस पर सर्वत्र आयोजन

राणापुर । गच्छाधिपति वर्तमान आचार्यश्री नित्यसेन सूरीश्वरजी के 70 वें जन्मोत्सव पर मंगलवार को श्रीसंघ की निश्रा में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा राणापुर द्वारा श्री राजराजेन्द्र गोपाल गौशाला में गौ स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वरिष्ठ पशु चिकित्सक के.एल. डामोर, पशु चिकित्सक प्रीति रावत, अंधारवड़ प्रभारी डावर, फील्ड ऑफिसर बी.एल. सेठिया, दीपसिंह नायक सहित 12 लोगों की टीम ने सभी गायों का परीक्षण किया, टीके लगाए, जिन्हें जो उपचार लग रहा था वो किया गया तथा विटामिन आदि की दवाइयां खिलाई गई।

इस अवसर पर परिषद द्वारा बहुमान कार्यक्रम भी आयोजित किया जिसमें अतिथियों ने गुरुदेव राजेन्द्र सूरिजी के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कार्यक्रम की शुरुआत की। स्वागत भाषण पवन नाहर ने दिया। इस अवसर पर डॉ. के.एल. डामोर ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज के युग में हमें आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान बनाना होगा तभी हम गौमाता की सेवा के महत्व को समझ पाएंगे। उन्होंने उपस्थित लोगों से गोसेवा कर गौशाला में अपना जन्मदिन, वर्षगाँठ आदि मनाने का आग्रह किया। उन्होंने शासन की योजनाओं की जानकारी देते हुए परिसर में नाडेम

निर्माण, गोबरगेस प्लांट, पौधरोपण आदि प्रोजेक्ट पर भी कार्य किया जा सकता है। गोग्रास के लिए शासन से फंड स्वीकृति की भी जानकारी उन्होंने दी। गौशाला अध्यक्ष हरिओम दवे, कोषाध्यक्ष गोपाल हरसोला, मुनिसुव्रत जिनालय अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, बी.एल. सेठिया ने अपने संबोधन में परिषद के कार्यों की प्रशंसा की और गोसेवा के कार्यों की सराहना की। सभी चिकित्सकों और उनकी टीम का श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की ओर से श्रीफल, प्रतीक चिन्ह, माला पहनाकर बहुमान किया गया। यतीन्द्र वी.सी. ग्रुप व श्री मुनिसुव्रत महिला परिषद की ओर से 1000-1000 रुपये घास हेतु एवम् 1-1 गाय दान देने की घोषणा की। नीलेश

सोहनलाल कटारिया की ओर से 10 क्विंटल गोग्रास गौशाला में देने की घोषणा की। संचालन ललित सालेचा ने व आभार विनय कटारिया ने माना। गौशाला में महिला परिषद ने गौपूजन भी किया। आचार्यश्री के जन्मदिन के अवसर पर सुबह भक्ताम्बर पाठ, गुरुगुण चालीसा पाठ किया गया व शाम को मुनिसुव्रत जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में गुरुगुणानुवाद का आयोजन भी हुआ। श्री यतीन्द्र जयंत पाठशाला के बच्चों को परिषद अध्यक्ष पवन नाहर की ओर से बेग बांटे गए। गौशाला पर नवकारसी का लाभ मनोहरलाल नाहर ने लिया।

---

* इंदौर। गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्य सेन सूरीश्वरजी महाराज साहब के 70 वें जन्मोत्सव पर शत्- शत् वंदन एवं शुभकामनाएँ अर्पित की गई। इस शुभ अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं इंदौर परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में परिषद् परिवार की सभी शाखाओं की उपस्थिति में राजेन्द्र उपाश्रय, जूनी

कसेरा बाखल स्थित मंदिर में सामूहिक नवकार मंत्र जाप, गुरुगुण इक्कीसा व जयन्तसेन इक्कीसा के पाठ व गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा जिसमें श्रीसंघ के अध्यक्ष शशिकान्तजी सकलेचा, परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोकजी श्रीश्रीमाल एवं संघ के प्रदेश महामंत्री नीरजजी सुराणा ने गच्छाधिपतिजी की अपने गुरू के प्रति प्रीत का उल्लेख करते हुए उनके साधु जीवन के अनेक प्रेरणादायी प्रसंगों से अवगत कराया। बहुतायत में गुरुभक्त उपस्थित थे।

*** गुजरात ।** के पाटण नगर में पंचासरा जिनालय के समीप स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा. की पावन निश्रा में गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. के 70 वें जन्मदिन पर सामूहिक सामायिक एवं पंचासरा पार्श्वनाथ भगवान की भव्य अंगरचना की गई। इस प्रसंग पर मुनिराज श्री के दर्शनार्थ पधारे प्रसिद्ध उद्योगपति एवं पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के परम गुरु भक्त और गुरु जन्म भूमि भरतपुर महातीर्थ के उपाध्यक्ष श्री बाबूलालजी संघवी (नेनावा वाले) ने गच्छाधिपति श्री के जन्मोत्सव निमित्त की गई परमात्मा की अंगरचना के दर्शन आदि का लाभ लिया।

*** पारा ।** गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 70 वाँ जन्मदिन मनाया गया। दोपहर में सामूहिक नवकार मंत्र के जाप व महिला मंडल ने सामूहिक सामायिक की । नित्यसेन सूरीश्वरजी के जीवन पर प्रश्नोत्तरी रखी गई। 'गुरुकृपा' प्राप्ति का उत्तम - उत्कृष्ट उदाहरण आचार्यश्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आजीवन गुरु चरण सेवा में अपना जीवन समर्पित किया दीक्षा के पश्चात् लगभग 53 वर्षों तक निरंतर अखंड गुरु निश्रा का 'परम सौभाग्य' आपके 'ललाट' पर 'शोभायमान' रहा। गुरुदेव की 'पवित्र सन्निधि' में रहना आपके जीवन का 'असीमानंद' रहा।

गुरु के रहते आपने एक भी शिष्य नहीं बनाया दीक्षार्थी को तैयार कर गुरु को समर्पित करते थे। 'गुरुसेवा, गुरुआज्ञा, गुरुनिश्रा' द्वारा आपने 'अद्भुत, अक्षुण्य गुरुकृपा' प्राप्त की।

गुरु के प्रति समर्पण गुरुदेव ने अपने प्रथम शिष्य और हमारे वर्तमानाचार्यजी को कहा कि आप नागदा जं. प्रतिष्ठा की तैयारी हेतु नागदा के लिए आगे विहार करें। हम तीन दिन पश्चात् नागदा में मिलेंगे। गुरु की आज्ञा स्वीकार कर अगले दिन प्रातः नवकारसी के समय गुरुदेव ने अपने प्रिय शिष्य को वापरने को कहा तो, विनयपूर्वक नित्यानंद विजयजी ने कहा गुरुदेव अठ्ठम तप का प्रत्याख्यान करवा

दीजिए। तीन दिन पश्चात् जब आपके दर्शन करूंगा तब ही आहार ग्रहण करूंगा। गुरुदेव की निश्रा के बिना रहना उन्हें कतई मंजूर नहीं था। गुरुदेव ने पूज्य श्री को कहा कि आपको कही नहीं जाना है। आप आनंद से वापरे।

'गुरु आज्ञा तहति ।' इस सूत्र को हृदयंगम करना तो कोई आपसे सीखे।

* **रतलाम ।** अ.भा. राजेन्द्र नवयुवक- महिला एवं परिषद् परिवार द्वारा 'गच्छाधिपति आचार्य श्री नित्यसेनसूरिजी म.सा. का 70 वां अवतरण दिवस उपाश्रय में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। काफी संख्या में समाजजन एवं महिलाएँ उपस्थित रहीं।

जनकल्याण मंत्री सुशीलजी छाजेड़, नवयुवक परिषद अध्यक्ष विनय सुराणा, सचिव प्रवीण संघवी, विपिन भंडारी, निलेश लोढ़ा, सनी पोरवाल, नयन मूणत देवेन्द्र मेहता आदि एवं महिला परिषद राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्ष सरोजबेन कासवा, पूर्वाध्यक्ष ममता भंडारी, रामिलाबेन सकलेचा, सारिका, डूंगरवाल, लेखनी पोरवाल, मधु गंग, शशि चौरड़िया, पुष्पा घोचा, मधु लुनावत आदि महिलाएँ उपस्थित रहीं।

तत्पश्चात् स्वल्पाहार कान्तिलाल राजकमल दुगड़ द्वारा व प्रभावना महिला परिषद द्वारा की गई। यह जानकारी महिला परिषद अध्यक्ष मंजू मेहता ने दी।

भावभरी श्रद्धांजलि

* **सूरत ।** अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और मुंबई सौधर्म बृहत तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के ट्रस्टी श्री नवीनभाई नरपतलाल बल्लु के पूज्य पिताजी सद्गत श्री नरपतलाल रामचंदभाई बल्लु (नरपत काका) का दिनांक 22.03.2019, फागण वद 2, को समाधिमय देवलोकगमन सूरत नगर में हुआ। सद्गत नरपत काका के अवसान से न केवल उनके परिवार ने स्वजन खोया है, परन्तु समस्त बल्लु परिवार अव थराद जैन समाज ने एक सेवाभावी, वैयावच्चधारी और अग्रणी वडील की छत्रछाया गंवाई है, मुंबई संघ में पच्चीस सालों से ट्रस्टी पद पर रह कर स्वर्गस्थ नरपतभाई फागण सुद तेरस के ऊपर पालीताणा शत्रुंजय महातीर्थ में तलेटी में पक्षाल पूजा केशर पूजा की और बोले मेरा जीवन धन्य हो गया, शत्रुंजय महायात्रा उनके जीवन की अंतिम यात्रा हो गई।

पिताजी को मृत्यु का संकेत हो चुका था, मोक्ष मार्ग के पथिक हो गये। एक घंटे के उतार-चढ़ाव को 2.22 के समय श्वास रुक जाने से अचानक देवलोक

गमन हो गया। आपकी आयु 89 वर्ष थी। इस वय में समाधि मरण देवलोक गमन हुआ। आप बाल्यकाल से ही राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराज के साथ जुड़े हुए थे। परिवार ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। शाश्वत धर्म की ओर से श्रद्धाजंलि ।

* **आलीराजपुर ।** अहिंसा परमो धर्म का नारा लेकर जोबट से लक्ष्मणी तीर्थ के लिए निकला छःरि पैदल यात्री संघ जैन तीर्थ लक्ष्मणी पहुंचा। संघ को साध्वी विद्वतगुणाश्री एवं रश्मि प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा प्राप्त हुई। यहाँ पर संघ का स्वागत किया गया। जिसके बाद सुबह से ही जैन मंदिर में धार्मिक कार्यक्रम शुरू हो गए। संघ में शामिल 70 से अधिक पैदल यात्रियों सहित अन्य यात्रियों ने लक्ष्मणी में मूल नायक भगवान पद्म प्रभु की पूजा, दर्शन व वंदन किया। दोपहर में साध्वी ने सुश्रावकों को व्याख्यान में जैन धर्म की महिमा बताते हुए धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। दोपहर में आलीराजपुर से आई महिला मंडल ने पूजा पढ़ाई। इसके बाद विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संघपति मोहित जैन ने बताया कि दोपहर में बड़ी खट्टाली में संघ का प्रवेश होने पर अगवानी की गई। यहाँ रात्रि में प्रभु की भक्ति व आराधना की गई। जैन श्रीसंघ अध्यक्ष कैलाश चंद्र डूंगरवाल ने बताया कि 70 से ज्यादा पैदल यात्री जोबट से लक्ष्मणी तीर्थ तक नियमों का पालन करते हुए पहुँचे। इस दौरान आलीराजपुर मव बड़ी खट्टाली से भी जैन समाजजन पहुंचे। तीर्थ में सुबह व शाम को भगवान की आरती का लाभ श्रद्धालुओं ने लेकर आरती उतारी । जोबट से छःरि पैदल यात्री संघ के आगमन को देखते हुए जैन तीर्थ लक्ष्मणी ट्रस्ट द्वारा तीर्त क्षेत्र में सारी तैयारियाँ पहले की पूर्ण कर ली गई थी।

* **पारा ।** प्रभु श्री ऋषभदेवजी के 400 उपवास की सुदीर्घ तपस्या की स्मृति में वर्षीतप की साधना की मंगल शुरुआत यहाँ की गई। सुबह भक्ताम्बर गुरुगुणं इक्कीसा, जयंतसूरी इक्कीसा का पाठ किया। परिषद की ओर से प्रभावना बाटी। फिर प्रभात फेरी भी निकाली। मन्दिरजी में मूलनायक भगवान श्री आदिनाथजी का प्रक्षाल व स्नात्र पूजन के साथ अष्टप्रकारी पूजन, शांति कलश चढ़ावे से लाभार्थियों ने लाभ लिया। सुबह 9.30 बजे आदिनाथ भगवान के फोटो को रथ में विराजमान करके बेंड-बाजे, ढोल - धमाकों से वरघोड़ा निकाला। भगवान के चित्र के सम्मुख समाज के हर घर से अक्षत, नैवेद्य फल से गहुंली की। पचरंगी ध्वज लेकर युवाओं ने जय-जय श्री आदिनाथजी के नारे लगाए । पुनः वरघोड़ा आदिनाथजी, शंखेश्वरजी, सीमंधर

धाम पर आया वहाँ मूलनायक आदेश्वर भगवान के सामने चैत्यवन्दन किया। फिर गुरुमन्दिर में धर्मसभा हुई। कविता नाहटा, चहेती कोठारी ने कविता के साथ प्रस्तुति दी। आशीष कोठारी ने आदीनाथ भगवान के जीवन पर विस्तृत वर्णन किया। जयंतीलाल छाजेड़ ने इस वर्ष पारा छाजेड़ कुल की बेटियाँ सुमनकला श्रीजी, सौरभकलाश्रीजी जिन्होंने संयम जीवन के लगभग 20 वर्ष पूर्ण किये हैं उनके चातुर्मास कराने का भाव रखा। श्रीसंघ अध्यक्ष श्री प्रकाश तलेरा ने कहा कि शोभायात्रा में चलने से तेले का लाभ मिलता है। मोतीलालजी पगारिया की ओर से भगवान को सोने की चेन भेंट की। संचालन श्रीसंघ महामंत्री प्रकाश छाजेड़ ने किया इसके पश्चात मूलनायक आदेश्वर की आरती उतारी जिसका लाभ राजेन्द्रजी पगारिया परिवार मंगल दिवो सुरेशजी छाजेड़ परिवार ने लिया। पंजेरी की प्रभावना प्रकाश छाजेड परिवार की ओर से बांटी गई। दोपहर में महिलाओं ने आदिनाथ पंच कल्याणक पूजन पढ़ाई और सामूहिक सामायिक की। बालिकाओं ने भगवान की आकर्षक अंगरचना की। सुबह का स्वामीवात्सल्य श्रीसंघ की ओर से शाम का स्वामीवात्सल्य प्रकाशजी तलेसरा परिवार की ओर से रखा गया। ज्योति प्रकाश जी रांका परिरार की ओर से संध्या को महिला चौबीसी व भक्ति की गई।

*** पारा ।** पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य आशीष से पारा संघ में वर्षीतप की दीर्घ तपस्या कर रहे सभी तपस्वी रत्नों का सामूहिक वर्षीतप का पारणा पुण्य सम्राट के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं 41 तपस्वियों ने पिछले वर्ष आदिनाथ भगवान के जन्म, दीक्षा कल्याणक महोत्सव के दिन सामूहिक वर्षीतप शुरू किये। जो 14 माह (420) दिनों तक चलेगा।

वर्षीतप के तपस्वियों की सामूहिक बियासने की संचालन की व्यवस्था वर्षीतप की कार्यकारणी समिति द्वारा की जा रही है।

*** पिपलौदा ।** श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम ट्रस्ट द्वारा लाभार्थी राकेश, योगेश लालसिंह जैन परिवार के सहयोग से मधुकर जल मंदिर का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल दसेड़ा (नगर परिषद अध्यक्ष), श्याम बिहारी पटेल व लाभार्थी परिवार द्वारा फीता काटकर जल मंदिर का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर पूर्व श्रीसंघ अध्यक्ष रमेशचन्द्र धींग, शैलेन्द्र कटारिया, राजेन्द्र कोठारी, नरेन्द्र जैन, अशोक बोहरा,

जीतेश बाबेल, लोकेश जैन, मुकेश रॉयल, अमन रूनवाल, सौरभ चंद्रावत, हर्ष कटारिया, हिमांशु पटवा आदि उपस्थित थे। संचालन वाटिका प्रचार सचिव प्रफुल जैन ने किया। आभार महेश बोहरा ने माना।

* **खाचरौद** । श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ के उन सभी छात्र-छात्राओं को जिन्होंने 2018-19 के शैक्षणिक सत्र में उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया उन्हें विद्यालय के समिति सदस्यगण एवं प्राचार्य द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सभी पालकगणों द्वारा सराहना की गई।

* **बैंगलूरू** । स्थित नेहरू नगर के शांतिनाथ जिनमंदिर के प्रांगण में 'अर्हम सम्यग ज्ञान शाला' का उद्घाटन अखिलभारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के धार्मिक प्रचार चेयरमेन श्री माँगीलाल भारतीजी वेदमुथा, परिषद अध्यक्ष डुंगरमल चोपड़ा, मंत्री नेमीचंद संघवी, भारती बेन आदि की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित कर किया। पाठशाला के बालक-बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। परिषद् द्वारा हर साल होने वाली 'श्री यतीन्द्र ज्ञान पीठ परीक्षा' का आवेदन पत्र का विमोचन परिषद के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। धार्मिक प्रचार मंत्री माँगीलाल वेदमुथा ने कहा 'धर्म ही जीवन की नींव है।' अध्यक्ष डुंगरमल चौपड़ा ने आवेदन पत्र भरवाकर कहा कि परीक्षा में भाग लेने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रचार करें।

दीक्षार्थी के अभिनंदन समारोह में मूक प्राणियों को जीवन दान

27 वर्षीय मयंक जैन बनेंगे जैन साधु, दीक्षार्थी की गुमास्तानगर क्षेत्र से निकली विशाल शोभा यात्रा

इंदौर । संसार की भौतिक चकाचौंध में देह की नश्वरता को गहराई से समझकर अपनी आत्मा को शुद्ध स्वरूप व मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करने हेतु थांदला निवासी 27 वर्षीय इंजीनियर मुमुक्षु श्री मयंक पावेचा अक्षय तृतीया को पूज्य

आचार्य श्री उमेशमुनीजी म.सा. के शिष्य श्री जिनेन्द्रमुनिजी म.सा. से जैन दीक्षा लेने जा रहे हैं। दीक्षा के अनुमोदनार्थ इंदौर में वर्धमान मेडिकोज नरेन्द्र तिवारी मार्ग, उषानगर, स्कीम 71 गुमास्तानगर क्षेत्र में मुमुक्षु श्री मयंक पावेचा एवम् वर्षीतप तपस्वी श्री अशोक श्रीश्रीमाल, दीपमाला श्रीश्रीमाल व श्रीमती माया वागरेचा की रथ बग्गियों में भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो श्री सीमंधर स्वामी जिनालय दर्शन करते हुए अणु स्वाध्याय पहुंची। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर दीक्षार्थी व तपस्वियों का अभिनंदन किया।

श्रीश्रीमाल परिवार टाण्डा वाला द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम दीक्षार्थी के पिता श्री प्रमोदजी व माता श्रीमती किरण पावेचा का अभिनंदन पत्र से सम्मान श्री सुनील कुमार, श्रीमती संध्या व परिवारजनों ने किया। माता-पिता ने अपने एक मात्र पुत्र को साधु बनने हेतु इस मार्ग पर जाने की अनुमति दी।

दीक्षार्थी श्री मयंकजी पावेचा का अभिनंदन श्री जिनेन्द्रजी, सर्वश्री अशोक, रमेश, सुनील, अनिल, कुशल व श्रीमती सुगनबाई, श्रीमती संध्या ने किया।

इस अवसर पर एक मार्मिक अपील पर 50 से अधिक मूक व निरह प्राणियों को कत्ल खाने से बचाकर गौशाला भेजने के संकल्प ने इस प्रसंग को यादगार बना दिया। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की इंदौर, राणापुर व जोधपुर व जालना शाखा के माध्यम से बीमारू व अयोग्य वृद्ध पशुओं को खरीदा जाएगा।

दीक्षार्थी श्रीमयंक पावेचा ने दीक्षा क्यों, संवाद में बताया कि बाल्यकाल से ही धार्मिकता में रूचि व साधु-साध्वी भगवंतों से संसार की असारता को समझ लिया था, आत्मा को शुद्ध, बुद्ध बनाने के लिए संयम अति आवश्यक है, यह आत्मा निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्कर में भवों-भव भटक रही है, अजरामर स्थिति मोक्ष हेतु संयम एक मात्र मार्ग है जहाँ साधनों को छोड़ साधना कर स्वयं में स्वयं को स्वयं से खोजा जा सकता है।

साधना के मार्ग में सांसारिक आवश्यक वस्तुओं का बिना आसक्ति भाव से उपयोग करना ही संसारवृत्तियों को

त्यागना है।

यद्यपि मैं माता-पिता का इकलौता पुत्र हूँ, इनके प्रति अपने दायित्व को समझता हूँ तथापि हम जानते हैं अभी तक अनंतों बार माता-पिता बनाते आ रहे हैं और इस मानव भव में इस चक्र को समाप्त करने का नहीं समझा तो पुनः अनंतों भव तक घूमना पड़ेगा।

माता-पिता, गुरु उपकारी हैं उन्होंने सुसंस्कारों से सज्जित किया है, मेरे संसार वृत्ति छोड़ने पर मेरी बहन, जीजा व अन्य परिवारजन उन्हें इस अभाव से दूर रखेंगे। तब भी हर प्राणी को मोह आदि को छोड़ इस चक्र से बाहर आना है।

संयम के माध्यम से जिन आज्ञा का पालन गुरु की निश्रा में उनके बताए मार्ग पर चलकर आत्मा को परमात्मा तक पहुंचाना और मानव जन्म को सार्थक करना ही लक्ष्य हो। दीक्षार्थी के अभिनंदन निमित्त सैकड़ों की संख्या में लोगों ने विभिन्न त्यागवृत्ति के संकल्प लिए। कार्यक्रम में देश के 80 से अधिक शहरों के प्रतिनिधि भी आये थे। थांदला के श्री भरतभाई भंसालीजी ने भी विचार रखते हुए कहा शारीरिक संसार छोड़ना आसान है पर मानसिक संसार छोड़ना अत्यंत कठिन है, दीक्षा का निर्णय या दीक्षा लेना सरल है पर शुद्ध रूप से पालना ही लक्ष्य तक पहुँचने का हेतु बनेगी, आज संयोग से मंदिर मार्गी व स्थानकवासी के विचारों का समागम भी इस आयोजन की गरिमा है।

मुमुक्षु श्री मयंक पर पूज्य उमेश मुनीजी की प्रेरणा व मार्गदर्शन व आशीर्वाद, आज फलित हो रहा है वहीं वर्षीतप के तपस्वी अशोकजी, दीपमालाजी सहित हम सभी पर पूज्य राष्ट्र संत पुण्य सम्राट जयंत सेन सूरीजी म.सा. की खूब कृपा रही।

कार्यक्रम के आरम्भ में श्रीमती सपना, श्रीमती करूणा व आस्था श्रीश्रीमाल ने स्वागत गीत, संयम गीत की प्रस्तुति दी। श्री जिनेन्द्रजी बाठियाँ ने ओघा की महत्ता पर गीत सुनाया।

कार्यक्रम के दौरान अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, राजेन्द्र जयंत महिला मंडल, अणु मित्र मंडल, स्थानक समाज से उषानगर महिला मंडल, स्कीम नम्बर 71 व गुमास्ता नगर महिला मंडल, श्री धर्मदासगण परिषद सहित विभिन्न संस्थाओं ने दीक्षार्थी श्री मयंक व वर्षीतप तपस्वी का अभिनंदन किया।

संचालन अशोक श्रीश्रीमाल व आभार सुनील जैन व गौतम श्रीश्रीमाल ने व्यक्त किया। स्वधर्मिवात्सल्य पश्चात् चौवीसी व मातृ-पितृ वंदनावली की गई जिसमें दीक्षार्थी ने माता-पिता सहित सभी बडिलों का पाद पक्षालन कर अपने कर्मों का पक्षालन किया।

गुरु जयन्तसेन सूरि म.सा. की द्वितीय पुण्य तिथी पर्व धूमधाम से मनाई गई

रतलाम । प.पू. शासन सम्राट जन-जन के आस्था के केन्द्र लोकसंत आचार्य देव श्रीमद जयन्त सेन सूरीश्वरजी म.सा. की द्वितीय पुण्य तिथी सप्तमी पर्व पर के रूप में स्त्रितुतिक श्री संघ व अखिल भा. श्री राजेन्द्र जैन परिषद परिवार द्वारा विभिन्न आयोजन कर गुरु गुणांनुवाद सभा के रूप में मनाई गई । इस शुभ अवसर पर प्रातकाल त्रिवेणी रोड गौशाला में गौ सेवा के पश्चात नीमवाला उपाश्रय में गुरू गुणानुवाद सभा के हत श्री संघ के श्री सोहनलाल जी मूनत, राजेन्द्र जी लूनावत, डॉ निर्मल मेहता, राजकमल दुगड़, प्रो वी.के. जैन, राजेश खांबिया, मन्जू मेहता आदि वक्तायों ने गुरु के संस्मरण अपने भाव से व्यक्त किये तत्पश्चात विरियाखेड़ी वृद्धाआश्रम में वस्त्र वितरण किये गये तथा गुरु जयंत सूरी अस्ट प्रकारी पूजन व संध्या में गुरुमाल जाप का आयोजन किया गया ।

महिला परिषद द्वारा गुरुदेव के ऊपर स्तवन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमे मधु गंग, अंजू राठौड़, शांता कटारिया, कोचर, सुनीता दुगड़, कविता गादिया, रीना कोठारी, मधु लुनावत आदि ने भाग लिया, इसमें से प्रथम, द्वितीय, तृतीयव प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए गए लाभार्थी परिवार-क्रमश रत्नेश जी निलेश जी लोढा (गो सेवा), गादिया परिवार (पूजन), वस्त्र वितरण (सुनीता राजकमल दुगड़ व तरुण परिषद) पुरुस्कार (राजकुमार जी श्रेणिक जी सकलेचा) रहे ।

तरुण परिषद द्वारा सकोरे का वितरण किया गया एवं बालिका परिषद द्वारा जिनालयों में चुन्नी रखी गई । कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष विनय सुराणा, राजकमल दुगड़, डॉ. निर्मल मेहता, विपिन भंडारी, राजेन्द्र लुनावत, मुकेश औरा, पंकज राठौर सनी पोरवाल, धर्मेन्द्र रांका, सुरेन्द्र गंग, अभय सकलेचा, देवेन्द्र मेहता,

विनायक मूनत, नितेश तलेरा, जय सुराना, महिला परिषद अध्यक्ष मन्जू जी मेहता रमिला सकलेचा, ममता भंडारी, सरोज कासवा, विभा संघवी, तरुण परिषद अध्यक्ष रोमित जैन, प्रांजल कॉठी, अर्पित आंचलिया, बालिका अध्यक्ष शालिनी जैन, मानसी मेहता, चिंकी जैन, आदि बड़ी संख्या में समाज जन उपस्थित थे। प्रभावना के लाभार्थी अभिषेक राजेन्द्र कुमार जी खाबिया रहे, संचालन व आभार परिषद सचिव प्रवीण जी संघवी ने किया। उपरोक्त जानकारी राष्ट्रीय महामंत्री राजकमल दुग्गड ने दी।

सेवा कार्य के रूप में मनाई पुण्यतिथि

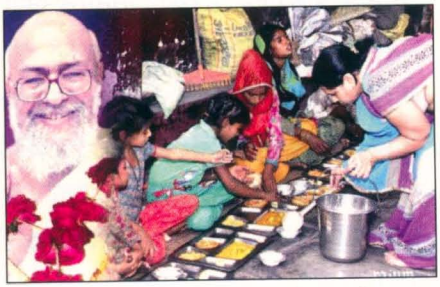

नागदा । त्रिस्तुत्रिक सम्प्रदाय के गच्छाधिपति आचार्यदेवेश राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की द्वितीय पुण्य तिथि शुक्रवार को श्रीसंघ में सेवा कार्य के रूप में मनाई गई। इस मौके पर सुबह 6.30 बजे महात्मा गांधी मार्ग स्थित चन्द्रप्रभु जैन मंदिर में भक्ताम्बर पाठ एवं गुरू चालीसा का आयोजन किया गया। सुबह 9 बजे पाल्या रोड़ स्थित गोपाल गोशाला परिसर में मुक पशुओं को लापसी, गुड़, घांस एवं खली खिलाई गई जिसका लाभ मानकुंवर बाई तेजमल जोधावत परिवार ने लिया। सुबह 11 बजे अन्न क्षेत्र में द्ररीद्र नारायण को भोजन कराया गया जिसका लाभ विनयकुमार चिमनलाल बोहरा परिवार ने लिया। वहीं दोपहर 2 बजे जैन कॉलोनी स्थित शांतीनाथ जैन मंदिर जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन किया गया जिसका लाभ ब्रजेशकुमार बाबूलाल बोहरा परिवार ने लिया। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् द्वारा पूजन पढ़ाई गई। श्रीसंघ मीडिया प्रभारी विपिन वागरेचा ने बताया कि पुण्य तिथि के मौके पर अखिल भारतीय जैन नवयुवक परिषद् द्वारा अन्नक्षेत्र भोजन पट्टी एवं पांच जैन परिवारों को एक माह का राशन प्रदान किया गया।

परिषद प्रांगण से

शिविरों को सम्बोधित किया श्री रमेशभाई धरू व पदाधिकारियों ने

* नागदा जंक्शन । जैन संस्कृति व जैनत्व हमारी पहचान है, नई पीढ़ी को इससे अवगत कराना माता-पिता का प्रथम दायित्व है। माता-पिता ऐसा करके अपनी परिवार की, समाज व राष्ट्र की भावी पीढ़ी को उनका बोध ज्ञानत्व कराएंगे। हमारी जागरूकता अथवा उदासीनता पर बच्चे का भविष्य निर्मित होगा। सोचना हमें है बच्चे तो कुम्हार के कच्ची मिट्टी के समान हैं जिसे चाहे जैसा आकार दिया जा सकता है।

उक्त विचार राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, अशोकजी श्रीश्रीमाल, भरत भाई वोरा व सुधीरजी लोढ़ा ने व्यक्त किये। श्री यतीन्द्र ज्ञानपीठ के सफल छात्रों को पुरस्कार वितरण पदाधिकारियों के हाथों हुआ । अध्यात्म यात्रा में 60 से अधिक शिविरार्थियों की उपस्थिति रही। परिषद की बैठक में श्री मनोजजी नागदा की गतिविधियों तथा भावी कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की । अशोकजी ने राष्ट्रीय स्तर पर चल रही योजनाओं तथा विभिन्न परिषदों के कार्यों को विशेषकर जीवदया, कत्लखानों में जा रहे जीवों को बचाना, पाठशाला के बच्चों को सूत्र कंठस्थ करवाना आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम में श्री संघ प्रमुख श्री वीरेन्द्र सकलेचाजी, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेशजी बोहरा, शिविर का संचालन हेतु पधारे पुनित सकलेचा झाबुआ व राज शाह डीसा सहित सभी वरिष्ट व नवयुवक, तरूण व महिला परिषद की सदस्या मौजूद थीं।

परिषद साथियों ने नित्य नियम के संकल्प लिए। शिविर कार्यक्रम में विनोदजी व संगीताजी पोरवाल की भी उपस्थिति रही। नागदा परिषद द्वारा आगामी शिविर में भाग लेने वाले बच्चों की उम्र सीमा बढ़ाकर 10 वर्ष करने का सुझाव दिया गया।

पदाधिकारी गण परिषद साथियों के साथ समाज के सबसे वरिष्ठ श्री चौधरीजी के निवास पर गए थे। वितरण का संचालन श्री नीलेशजी पगारिया व कार्यक्रम का संचालन परिषद अध्यक्ष श्री मनोज वागरेचा ने किया। आभार मुकेश बोहरा व मनोज ओरा ने किया।

मालवा में दो दिवसीय धार्मिक शिविर सम्पन्न

पुण्य सम्राट के दिव्य आशीर्वाद से मालवा में छाया भक्तिमय का माहौल अध्यात्म यात्रा दो दिवसीय शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें अलग-अलग जगह पर शिविर करवाने गए हुए ज्ञानोपासक जिनकी जितनी अनुमोदना की जाय कम है।

खाचरोद – पक्षालभाई हसमुखभाई कोरडीया (सूरत) , विरलभाई मुकेशभाई चत्तर (नामली), खाचरोद में कुल 95 बालक-बालिकाओं ने शिविर में भाग लिया था जिसमें कई बच्चों ने रात्रिभोजन और जमीनकंद का त्याग किया था।

नागदा– पुनितभाई सकलेचा (झाबुआ), राजभाई विक्रमभाई वोहेरा (डीसा) नागदा में शिविर के दौरान कुल 75 बच्चों ने भाग लिया था। जिसमें अद्‌भुत प्रभु का ध्यान एवं साधना सिखाया गया था। विशेष रूप से मन्दिरजी में पूजा विधि प्रेक्टिकल करके बताई।

पिपलौदा– आगमभाई अश्विनभाई कोरडीया (डीसा), यशभाई नरेशभाई सेठ (डीसा) पिपलौदा में शिविर के दौरान कुल 30 बच्चों ने भाग लिया था जिसमें अद्‌भुत पूर्व प्रभु की पूजा की। प्रत्यक्ष विधि सकराई गई और उसके बाद कई बच्चों ने 3 माह पूजा करने का नियम भी लिया।

पिपलियामंडी – प्रशान्तभाई प्रेमराजभाई चोरडिया (गोआ), आश्वभाई कुमारभाई मोरखिया (डीसा) इस शिविर के दौरान कुल 30 बच्चों ने भाग लिया था। जिसमें भक्तामर महाअभिषेक किये गए थे।

महिदपुर रोड़– मोक्षभाई चीनूभाई कोरडीया (डीसा), अक्षतभाई अशोकभाई मोरखिया (डीसा), राजभाई हितेशभाई मोरखिया (डीसा) इस दौरान शिविर में कुल 25 बच्चों ने भाग लिया था। इसमें बच्चों को औषधियुक्त महाअभिषेक संवेदना के साथ हुए थे। मालवा में शिविर के दौरान भक्तिमय और साधनामय माहौल बना। दो दिवसीय शिविर में बच्चों का बहुत उत्साह दिखा। अनेक बच्चों ने अपने आत्म कल्याण के लिए कुछ नियम भी लिए।

इस शिविर की सफलता के लिए श्रीसंघ व परिषद परिवार के सदस्यों व विशेष रूप से अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय शिक्षामंत्री भरतभाई वोरा की खूब-खूब अनुमोदना जिन्होंने पांचों शिविर के

सभी शिविरार्थियों व दो प्रतिक्रमण याद करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया। अन्य सभी लाभार्थी परिवारों की भी अनुमोदना शिविर को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जो सहयोग दिया उसके लिए सभी को धन्यवाद व आभार। आगे भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहे यही आशा है।

– ब्रजेश बोहरा (राष्ट्रीय मिडिया प्रभारी)

निम्बाहेड़ा में शिविर सम्पन्न

निम्बाहेड़ा । परम पूज्य साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में पुण्य सम्राट सम्यक् ज्ञानोपासना कन्याशिविर का आयोजन सोमवार से शनिवार रत्नराज नगर कॉलोनी में स्थित श्री सुमतिनाथ मंदिर स्थल पर किया गया। शिविर समापन वंडर सीमेन्ट उपाध्यक्ष नितिन जैन के मुख्य आतिथ्य एवं विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र डुंगरवाल, सुभाष मोदी, नरेन्द्र कुमार सिरोहिया, प्रकाश सेठिया, राजेन्द्र मुणत, मुकेश ढेलावत, हंसराज मारवाडी, चांदमल बिराणी, कान्तिलाल पीपडा, कैलाश बाफना व रतनसिंह पारख की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

शिविरार्थी लाभार्थी बहन सीमा पारख परिवार ने बताया कि शिविर में 85 शिविरार्थियों व स्थानीय श्रद्धालुओं ने भाग लिया, सभी ने पूर्ण रूप से जैन धर्म के नियम की पालना करते हुए और अनुशासन में रहकर सम्पन्न किया। प्रातः काल 5.30 बजे सभी शिविरार्थियों सहित श्रद्धालु भक्ताभर प्रार्थना, योगा प्राणायाम करके सभी सूत्र-अर्थ की कथा के बाद साध्वी संग जिनमंदिर दर्शन करके पूरे दिन कक्षा एक्टीवीटी चलती रहती। सभी शिविरार्थी को प्रभात फेरी में स्थानीय गांव के सभी जिनालयों के दर्शन कराये। स्नात्र पूजा, संयम वंदनावलि, ग्वली, पेंटिग प्रतियोगिता का भी आयोजन

किये गये । इस शिविर में एक बालिका ने डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी से प्रेरित होकर आजीवन टी.वी. का त्याग किया।

इस अवसर पर बम्बई निवासी शाह अमीत भाई डोसी ने प्रोजेक्टर द्वारा अनेक प्रकार के भक्ष-अभक्ष्य पदार्थों व अटवाद्य पदार्थों के बारे में जैसे मैगी, जैली, चाकलेट, ज्यूस, नुडल्स इनके बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया। यह अनेक प्रकार के मांसाहारी से, जुड़े हुए हैं। बहनों के सौंदर्य के साधन में लिपिस्टिक, नेलपॉलिश, रेशम की साड़ी प्राणी पर अत्याचारों के बाद जीवों की हिंसा से बनता है। कई बहनों ने इस अवसर पर ये नहीं प्रयोग करने का नियम लिया है।

जयणा पूर्वक भोजन बने इस क्रिया के बारे में श्री अमीत डोसी ने बताया कि सुबह जयणा पूर्वक भोजन बनाने से पूर्व गैस चूल्हे की स्थल को साफ कर गैस का पूजना- ताकि जो कि हिंसा से बचा जा सके। सभी प्रकार की सामग्री व खाद्यान्न पदार्थ बनाने से पूर्व छनवाना, दही को उबालना, चौका सुबह 6 बजे से सायं 6 बजे के अन्दर ही बनाकर खिलाना जैसी क्रिया से भी कई बीमारियों व हिंसा से बचा जा सके। इस पांच दिवस के शिविर में बाहर की रेडिमेट, अभक्ष्य वस्तुओं का उपयोग नहीं करते हुए सारी जेयणा विधि पूर्वक रसोई परोसी गई। सबसे खास बात यह रही कि इस क्रिया की पालना के साथ ही जंकफूड के एवज में शिविरार्थियों को शुद्धता पूर्वक खाद्यान्न पदार्थों का सेवन करवाया गया। पारख परिवार और साध्वी डॉ. प्रीति दर्शनाजी की भावना कि सभी संघों में जयणा पूर्वक रसोई की जाकर उपयोग करें। जिससे काफी दोषों से बचा जा सके।

शिविरार्थी के आखरी समापन के दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम में पारख परिवार की महिलाओं व शिविर में दूर-दराज से आये बालिकाओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। जैन धर्म सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रम विस्तार पूर्वक प्रस्तुत करने से कई श्रद्धालुओं के अपने विचार व मन में शुद्धीकरण हुआ। इस कार्यक्रम की प्रस्तुतीकरण में सीमा पारख, कविता पारख, मोनिका पारख, सुनीता पारख, माया, रेखा, रचना, रिंकु किमती आदि ने योगदान दिया। कई स्थानीय श्रद्धालुओं ने सराहनीय प्रस्तुतीकरण बताया। इसी प्रकार महाराज साहब गोचरी के समय किस तरह से गोचरी करनी चाहिये उसे भी

विस्तार पूर्वक यश पारख, युवराज ने बताया। समापन आयोजन के मुख्य अतिथि वंडर सीमेन्ट उपाध्यक्ष नितिन जैन ने उद्‌बोधन किया। इससे पहले मुख्य अतिथि जैन का ज्ञानोपासना कन्या शिविर के लाभार्थी रतनसिंह, शेरसिंह, मुकेश, मनोज, राहुल पारख द्वारा श्रीफल, माला, शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

शिविर में पांच दिन तक विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय शिविरार्थियों को मुख्य अतिथि उपाध्यक्ष नितीन जैन, वंडर सीमेन्ट सी.एस. आर. हेमन्द्र झाला द्वारा पुरस्कार वितरण कराया गया। इससे पहले सभी सुबह जैन धर्म अनुसार कई कार्यक्रम में भाग लेकर जैन धर्म के बारे में विस्तार पूर्वक क्रियाओं के बारे में उत्सुकता पूर्वक ग्रहण किया, जिसमें भाग लेकर बड़े ही उत्साह पूर्वक शिविर में उपस्थित सभी ने जैन धर्म की क्रिया के बारे में विस्तार पूर्वक समझा और क्रियाएं की।

शिविर में चित्तौडगढ़, निम्बाहेड़ा, छोटी सादड़ी, नीमच, मंदसौर, जावरा, रतलाम, उज्जैन, बड़नगर, भीलवाड़ा, मंगलवाड़, डुंगला, बड़ीसादड़ी आदि अनेक नगरों की कन्याओं व महिलाओं ने भाग लिया है। जिसका सम्पूर्ण लाभ श्रेष्ठवर्श रतनसिंह, शेरसिंह, पारसमल, प्रकाशचन्द्र, दिलीप, ललीत, मनोज, पशाल, मोक्ष पारख परिवार ने लिया। सोमवार को शिविरार्थियों ने हमारे उपकारी देव गुरु धर्म के बारे में जाना उनके अनन्त उपकार उनकी अनंत शक्ति, उनकी अचिन्त्य महिमा के बारे में जाना। गुरुदेव की ध्यान साधना के दौरान निम्बाहेड़ा निवासी चक्षु बाबेल उम्र आठ वर्ष ध्यान साधना में इतनी लीन हो गई उसकी आँखों से अश्रु धारा बहने लगी जब उससे पूछा गया वह बच्चा बोल नहीं पा रहा था क्योंकि उसका गला पूरा रूंध गया था। उसने अपने अनुभव में बताया उसे लगा कि ध्यान साधना के दौरान उसे गुरुदेव के साक्षत दर्शन हुए हों।

गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म. सा. के 70 वाँ जन्मदिन को पूज्य साध्वी श्री प्रीति दर्शनाजी आदि ठाणा-3 की शुभ निश्रा में सुमतिनाथ मंदिर में रतनसिंह पारख, शेरसिंह, पारसमल, प्रकाशचन्द्र, दिलीप, मनोज, ललीत पारख परिवार की ओर से प्रातः भगवान की स्नात्र पूजा व अभिषेक का कार्यक्रम रखा गया।

राष्ट्रीय महामंत्री का बहुमान

राणापुर । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल का श्री मुनिसुव्रत जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में राणापुर परिषद की और से ही 'गाय' का अभयदान देने के लिए उनका अनुमोदना पत्र से बहुमान किया गया। गौरतलब है उन्होंने मुमुक्षु मयंक पावेचा की दीक्षा और अपने वर्षीतप के निमित्त इंदौर परिषद के माध्यम से 51 गायों को अभयदान देने के लिए राशि रानापुर की परिषद को भिजवाई है। अनुमोदना कार्यक्रम के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री ने रानापुर की स्थानीय शाखा की बैठक ली। उन्होंने परिषद के उपस्थित प्रत्येक सदस्य से फीडबेक लेते हुए उनकी जिज्ञासा को शब्दों के माध्यम से ध्यान पूर्वक सुना। राणापुर परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने परिषद के 100 दिन के कार्यों को विस्तार से बताया एवम् विभिन्न गतिविधियों का रिकॉर्ड एलबम के रूप में दिखाया। पाठशाला के बारे में जानकारी दी। महामंत्री अशोकजी ने सभी की बातों को सुनकर सभी सदस्यों के द्वारा किये जा रहे कार्यों की खूब प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जीवदया में रानापुर ने नाम कमाया है, अन्य गतिविधियाँ भी सन्तोषप्रद है, सभी को परिषद के हीरक जयंती के 60 बिन्दुओं पर कार्य करने का अनुरोध किया । सामायिक, स्नात्र पूजन और तप जैसे धार्मिक कार्यों पर भी फोकस करने की बात बताई। चन्द्रसेन कटारिया ने परिषद के महामंत्री के आगमन पर खुशी व्यक्त की। जितेन्द्र नाहर, जेपी जैन, पंकज कटारिया, जितेन्द्र सालेचा, ललित सालेचा, प्रकाश सालेचा, धर्मेश जैन, प्रवीण नाहर आदि ने अपने शब्दों से परिषद के कार्यों को बताया। दिलीप सालेचा ने समाज की श्री राजराजेन्द्र जयंतसूरी सहायता बैंक के कार्यों की जानकारी दी। संचालन रजनीश नाहर ने किया।

राणापुर । अभा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद मुनिसुव्रत जिनालय राणापुर का नवगठन नववर्ष के प्रथम दिन शनिवार को यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में सम्पन्न हुआ। जिसमें 30 नए सदस्य बनाये गए इनमें से नए अध्यक्ष और कार्यकारिणी का गठन सर्वानुमति से हुआ। अध्यक्ष आशा कटारिया, उपाध्यक्ष उर्मिला कटारिया, कोषाध्यक्ष सुनीता कटारिया व सीमा सालेचा, सचिव सीमा कटारिया एवम् रूपाली नाहर, प्रचार मंत्री गुणमाला सालेचा, रेखा कटारिया, सांस्कृतिक सचिव सपना सालेचा, वैशाली अर्पित कटारिया मनोनीत किये गए।

राणापुर । श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, तरूण, परिषद रानापुर

द्वारा रविवार को राष्ट्रीय पल्स पोलियों अभियान के अंतर्गत 2 स्टाल लगाकर बच्चों को दवाई पिलवाई गई। स्टॉल का शुभारम्भ नगर की बीएमओ डॉ. उषा गेहलोत, डॉ. जी.एस. चौहान, श्री मुनिसुव्रत जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, संघ के वरिष्ठ मदनलाल नाहर, रमणलाल कटारिया, मनोहरलाल नाहर, राजेन्द्र कटारिया, पार्षद नारायण जैन की उपस्थिति में दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरिजी एवम् पुण्य सम्राट श्री जयंतसेनसूरिजी के चित्र के मस्मुख दीपप्रज्वलन एवम् माल्यर्पण के साथ किया। डॉ. गेहलोत मेडम ने कहा कि खुशी की बात है कि जैन समाज की संस्था नवयुवक परिषद राष्ट्रीय कार्यक्रम में भी सहभागिता प्रदान कर स्वास्थ्य विभाग को सहयोग कर, जनहित के कार्य कर रही है। चन्द्रसेन कटारिया ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। आभार परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने व्यक्त किया। संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया। स्वल्पाहार के लाभार्थी ओमप्रकाश सालेचा रहे। दवाई पीने वाले बच्चों को परिषद की ओर से बिस्किट के पैकेट बाटे गए।

रतलाम । पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व सूरीमंत्र आराधक आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. कि निश्रा में 23/5/19 अहमदाबाद में आत्मोद्धार 3 होने जा रहा है जिसमें 19-19 भव्य आत्माएँ दीक्षा लेने जा रही है उसी में से एक दीक्षार्थी रोशनी बहन रांका (हैदराबाद) नीमवाला उपाश्रय रतलाम फधारी। जहाँ त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व परिषद् परिवार द्वारा बहुमान व अनुमोदना की गई।

उनका चयन पैरामिलट्री फोर्स में हुआ था ट्रेनिंग भी ली। साथियों ने रात्रि भोजन, कंदमूल नहीं खाते जैन के बारे में पूछा तो उत्तर नहीं दे पायी उसी क्षण से जैनिज्म को अंतर से जानने की ललक से आज जैन धर्म वीतराग परमात्मा महावीर स्वामी के शासन की सैनिक बनने जा रही है। श्रीसंघ, नवयुवक, महिला, तरूण परिषद के सदस्यों ने आपका बहुमान कर बहुत ही हर्ष व्यक्त करते हुए संयम जीवन कि मंगल कामना कर अनुमोदना की। सर्वश्री सुजानमल सोनी, गेंदालाल सकलेचा, सतीस खेड़ावाला, अभय सकलेचा, सुरेन्द्र गंग, देवेन्द्र मेहता, नितेश तलेरा, विपीन भंडारी, पंकज ओहरा, विकास गादिया, विनायकमूनत, अक्षत ओहरा, महिला परिषद से मंजू मेहता, ममता भंडारी, रामिला कोचर, शांता कटारिया, मधु लूनावत, सारिका लोढ़ा, पुष्पा घोचा, राजकुमारी सकलेचा, सारिका जैन,

आशा कटलेचा आदि उपस्थित थे। संचालन प्रवीण संघवी ने किया।

– नीलेश लोढ़ा, व दीपक खेड़ावाला

रतलाम । राजेन्द्र जैन महिला परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अंगूरबालाजी सेठिया, महामंत्री पद्माजी सेठ, गुणमाला बेन नाहर, प्रदेश अध्यक्ष पुष्पाजी भंडारी का दो दिवसीय दौरा रतलाम से प्रारम्भ हुआ। उपाश्रय में महिला एवं बालिका परिषद की मीटिंग हुई।

अतिथियों का स्वागत रमिला बेन सकलेचा, ममता भंडारी माया लुनावत, मंजू आंचलिया, मंजू मेहता, चंदा चौरडिया, श्रद्धा लुनावत आदि पदाधिकारियों ने किया। आभार सचिव चंदा चौरड़िया ने माना।

शपथ विधि समारोह

इंदौर । अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा जूनी कसेरा बाखल, इंदौर का शपथ विधि समारोह राजेन्द्र आराधना भवन, कुँवर मण्डली, इंदौर पर सम्पन्न हुआ। जिसके अन्तर्गत संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्षा डॉ. अंगूरबाला सेठिया ने अध्यक्ष श्रीमती पूनम जैन, सचिव जैन अंतिम राठौर, उपाध्यक्ष अर्चना बम्बौरिया, कोषाध्यक्ष किरण मेहता, अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य रेखा सुराणा, वीणा मेहता, प्रगति जैन, प्रमिला रूणवाल, छबि पिपाड़ा, मंजूला सकलेचा, रजनी बाफना, वीणा बोहरा, राजलता सुराणा, मधु श्रीश्रीमाल, अंजिता जैन, कविता वागरेचा, साधना बाँठिया, अंगूरबाला मेहता को पद व गोपनीयता की शपथ दिलवाई। शपथ के पूर्व अतिथियों द्वारा पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित एवं माल्यार्पण किया गया व अर्चना बम्बौरिया, अंजिता जैन व प्रगति जैन द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर डॉ. अंगूरबालाजी सेठिया ने पूरी टीम से आह्वान किया की जो जोश और जज्बा आपका आज शपथ लेते हुए है उसे बनाए रखना और अपने गुरुदेव के दिखाये गए रास्ते पर चलते हुए गुरुगच्छ की शोभा में अभिवृद्धि करना। हमेशा आप सबके मन में एक ही विचार होना चाहिए कि 'चलो उठो और समाज के लिए कुछ करो' क्योंकि समय सीमित है और कार्यों की फेहरिस्त लंबी। उन्हीं की बात को आगे बढ़ाते हुए संस्था की प्रदेश अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी भण्डारी ने आह्वान किया की संगठन की इस एकता को ऐसे ही बनाए रखना व वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती गुणबालाजी नाहर व प्रदेश महामंत्री श्रीमती हेमाजी हिंगड़ ने

पदाधिकारियों को कहा कि आपका कार्यकाल तभी सफल माना जाएगा जब आप अपनी सफलता को सदस्यों की सफलता और सदस्यों की गलतियों को अपनी गलती मानेंगे। सभा में विशेष रूप से आनन्दतीर्थ महिला परिषद की गुरुदेव के जीवन चरित्र का उनके जीवन पर जो गहन प्रभाव पढ़ा उसका उन्होंने सारगर्भित उल्लेख सभा में किया। अंत में आभार श्रीमती साधनाजी बाँठिया ने माना। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती जैन अंतिम राठौर व अंजिता जैन ने किया।

रतलाम । जयंत कृपा- मानव सेवा को चरितार्थ करते हुए अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद रतलाम शाखा द्वारा परिषद साथियों के जन्मदिवस या विवाह वर्षगांठ के अवसर पर परिषद के माध्यम से सेवा गतिविधि के प्रकल्प को प्रारम्भ किया। पुण्य सम्राट की मासिक तिथि के अवसर पर श्री राजेन्द्रजी खाबिया के जन्म दिवस पर गौशाला में चना चूरी, खल, व गायों को चारा वितरण किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जैन कल्याण मंत्री सुशीलजी छाजेड़, सहमंत्री राजकमल दुगड़, परिषद अध्यक्ष विनय सुराना, सचिव प्रवीण संघवी, जीवदया समिति धर्मेन्द्र रांका, नितेश तलेरा, सन्नी पोरवाल, सतीश खेड़ा, राजेन्द्र लुनावत, मुकेश औरा, जय सुराना, राजेश खाबिया, अनुज छाजेड़, अभिषेक खाबिया, नरेन्द्र छाजेड़, महिला अध्यक्ष मन्जू मेहता आदि पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

कोयम्बतूर । अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् कोयम्बतूर शाखा ने गुरूवार को सेनेटरी पैड वितरण कर एक नयी पहल को अंजाम दिया है। परिषद् की अध्यक्ष मंजूजी संघवी ने बताया की तमिलनाडु के ही पैडमेन मुरगनंतम एक पुरूष होते हुए भी महिलाओं की समस्या को समझकर सस्ते पैड बनाने का काम किया और उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

बेंगलुरू । अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के तत्वाधान में बेंगलुरू से करीब 14 सदस्य कुंभोजगिरी यात्रा एवं पू.म. सा. सूरियादयाश्रीजी, कैलाशश्रीजी म.सा. विपुलदर्शाताश्रीजी म.सा. को वंदन करने गए। साथ में सिमन्धर स्वामी राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर मामूलपेट के ट्रस्टी एवं सह कोषाध्यक्ष तिलोक भंडारी, महिला परिषद अध्यक्ष प्रेमा बेन मूथा, नवयुवक परिषद् अध्यक्ष डुंगरमल चोपड़ा, उपाध्यक्ष हेमराज जैन, मंत्री नेमीचंद संघवी, माँगीलालजी गांधी मुथा, शांतिलालजी मोदी, फतहचंद गांधी मुथा, प्रकाश बालर आदि भक्तों ने म.सा. का दर्शन वंदन किया। प.पू.म.सा सूर्योदयाश्रीजी ने कहा कि आचार्य

भगवंत श्री नित्यसेनसूरिजी का आदेश होगा तो इस बार चातुर्मास बैंगलोर में जरूर करेंगे। बीजापुर से आए हुए संघ के 12 सदस्य ने भी अक्षय तृतीया के पारना के दिन म.सा. को बीजापुर आने की विनती की।

नागदा । श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जैन श्री संघ ने गुजरात के अनेक नगर की यात्रा कर पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय के गुरु भगवंतों के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए। यात्रा के दरम्यान मोडासा में मध्यप्रदेश की ओर विहाररत आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरिश्वरजी महाराजा , पाटण में अध्ययन हेतु बिराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी, मुनिराज श्री निपुण रत्नविजयजी आदि ठाणा, अहमदाबाद में अध्ययन हेतु बिराजमान मुनिराज श्री जिनागम रत्न विजयजी आदि ठाणा एवं शंखेश्वर तीर्थ अहमदाबाद ओर पाटण में बिराजमान समुदाय के अनेक साध्वीजी भगवंतों के दर्शन वंदन किए। इस यात्रा में मूर्ति पूजक जैन श्रीसंघ नागदा के अध्यक्ष वीरेन्द्रजी सकलेचा के नेतृत्व में चातुर्मास अध्यक्ष दिलीपजी ओरा, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा, परिषद के सुभाषजी गेलड़ा, महेन्द्रजी बोहरा, तेजमलजी जोधावत आदि सदस्यों ने अहमदाबाद मोटरा में बिराजमान साध्वी श्री अमृतरसाजी म.सा. व साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 2 की नागदा चातुर्मास हेतु विनती की। उपरोक्त जानकारी नागदा श्रीसंघ के मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा व विपीन वागरेचा ने संयुक्त रूप से दी।

आचार्य श्री नित्यसेनसूरिजी जन्मोत्सव पर कार्यक्रम का आयोजन

इंदौर । गुमाश्ता नगर क्षेत्र में सक्रिय अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा इंदौर जयन्त द्वारा वर्तमानाचार्य देवेश धर्मदिवाकर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के जन्मोत्सव पर गरीब बस्तियों एवं वहाँ संचालित विद्यालय में खिचड़ी, फल आदि का वितरण किया गया। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक संघ के पूर्वाध्यक्ष श्री कैलाशजी मेहता,सचिव श्री नरेन्द्र जैन, श्री शैलेषजी कुक्षीवाला, श्री शांतिलालजी डुंगरवाल आदि महिला परिषद् गुमाश्ता नगर की स्नेहलताजी डुंगरवाल, श्रीमती चंद्रिकाबेन जैन, श्रीमती शीलाबेन जैन आदि एवं नवयुवक परिषद शाखा इंदौर जयन्त के अनूप बोहरा, राजेश कोलन, पीयुष

रूनवाल, राकेश बैद, धर्मेन्द्र नाहर, पीयुष संघवी, राजेश वागरेचा आदि उपस्थित थे।

शाखा इंदौर जयन्त ने इस कार्यक्रम के माध्यम से आचार्य भगवंत के सुदीर्घ, शातामय, स्वस्थ जीवन की अभिलाषा की है।

सच्चा सेवक

सेवा में सेवक के तन और मन का समर्पण आवश्यक है। पर-पीड़ा की अनुभूति और सद्भावना सेवा के प्राण हैं। विनय एवं वाणी का संयम सेवा को चमकाते हैं। पीड़ित के प्रति आदर भाव , उसके स्वाभिमान की रक्षा, उज्ज्वल, सुखद एवं सुसंस्कारित जीवन की मंगल भावना तथा सेवक के विवेकपूर्ण आचरण सेवा के लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त करने में अत्यधिक सहायक होते हैं। सेवक को सदैव, शांत, प्रसन्न, सहज, सरल और विनम्र होना चाहिए। अपेक्षाएं स्वार्थ का प्रतीक है। उनके लिए की जाने वाली सेवा, सेवा नहीं सौदा है। सेवा का व्यवसायीकरण जो कदापि उचित नहीं है। सेवा में तो देना ही प्रमुख है। यश-प्राप्ति के लिए की गयी सेवा, सेवा का अवमूल्यन करती है

जैन विश्व

डॉ. सागरमल जैन को पुरस्कृत किया राष्ट्रपति ने डॉ. दिलीप धींग जीतो सेवा अवार्ड से सम्मानित

* **शाजापुर–** डॉ. सागरमल जैन को भारत के राष्ट्रपति के द्वारा वर्ष 2017 का प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु राष्ट्रपति अवार्ड एवं सम्मान पत्र प्रदान किया गया है। डॉ. जैन ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में जो उत्कृष्ट अवदान दिया है, वह निम्नानुसार है– आपके मार्गदर्शन में प्राकृत भाषा और साहित्य के क्षेत्र में 54 पी.एच.डी. एवं डि. लिट के शोध छात्रों ने शोध कार्य किया है। उनमें जिन्हें पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। उनके द्वारा लिखित पुस्तकों की संख्या 70 है और सम्पादन कार्य एवं प्रूफ रीडिंग का कार्य 230 पुस्तकों का तथा आपके लगभग 300 शोध आलेख जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार डॉ. जैन ने प्राकृत भाषा और जैन साहित्य के क्षेत्र में महत्तीय कार्य किया है।

* फिल्म अभिनेता अमिर खान ने कहा है कि मैं जैन फिलोसफी से बहुत प्रभावित हूँ। एक अहिंसा, दूसरा आप उतना ही इस्तेमाल करें जितना आपको जरूरत है, तीसरा किसी ओर के सोच–विचार आपसे अलग हैं तो आप उससे झगड़ा मत कीजिए।

* मुंबई की हाफकिन इन्स्टीट्यूट के अभ्यास अनुसार अण्डे बच्चों के लिये रोगजन्य हैं। अण्डा निर्जीव नहीं होता है। वह मांसाहारी है।

* चुनाव आयोग ने चुनाव आचार संहिता जारी कर चुनाव में प्रचार के दौरान पशुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

* **चिकल ठाणा (महाराष्ट्र)** में पत्रकार श्री एम.सी. जैन ने अपने पोती के विवाह में आलु, लहसुन, प्याज पर पूर्ण प्रतिबंध रखा तथा रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

* मुनिराज श्री प्रतीक सागरजी म. सा. ने कहा कि मदिरा पान करने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए उनके परिवार में रोटी–बेटी

का संबंध नहीं रखा जाना चाहिए।

* मुंबई के एक समारोह में चंवालीस दीक्षार्थियों का सम्मान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आतिथ्य में किया गया।

* सूरत के डायमण्ड व्यापारी श्री हँसमुख सेठ ने अपने पुत्र के विवाह में होने वाले रिसेप्शन को स्थगित कर ग्यारह लाख रुपये पुलवामा शहीदों के परिवारों को भेंट किये।

* टी.टी. नगर जिनालय में भगवान महावीर की सवा नौ फीट ऊंची पद्मासन प्रतिमा बिराजमान की गई। जिसका वचन 11 टन है। इसका निर्माण वियतनाम से मंगवाये गये संगमरमर पाषाण से हुआ है।

* स्थानकवासी सन्त श्री शीतलराजजी महाराज अपने संयम जीवन के 50 वर्षों में 48 वर्ष से आड़ा आसन त्यागी हैं। इन्होंने इस दौरान 1 दिन या कुछ मिनट भी लेटकर शयन नहीं किया।

* श्री नाकोड़ाजी महातीर्थ पर 291 भाग्यशालियों सहश्री नाकोड़ा पार्श्व-बैरव महापूजा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद् विजयरविचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में 14 अप्रेल रविवार को सम्पन्न हुई जिसमें काफी भक्तिभाव हुआ।

* देश के 24 राज्यों और तीन केन्द्र प्रदेशों के एक हजार से अधिक चिकित्सकों ने ई-सिगरेट तथा ई-हुक्का पर प्रतिबंध लगाने का ज्ञापन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भेजा है।

* पुलवामा की भिड़न्त के पश्चात् बृहद मुंबई जैन संघ ने शहीदों के कोष में विभिन्न किश्तों में ग्यारह करोड़ रु. भेंट किए।

* समस्त महाजन के ट्रस्टी श्री गिरीश शाह ने लोकसभा के वर्तमान चुनाव में कम से कम 22 टिकिट देने की भाजपा से मांग की है।

* धारवाड़ जिला कांग्रेस प्रचार समिति के अध्यक्ष पद के लिए समाजसेवी महेन्द्रसिंधि को मनोनीत किया गया है।

* **महिदपुर-** आचार्य श्रीमद् विजय जयानंदसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में शांतिनाथ आराधना भवन में श्री नवपद ओली की आराधना हुई।

* अचलगच्छाधिपति श्री गुणोदय सागर सूरीश्वरजी म.सा. का रामजी का गोल में मंगल प्रवेश 10 अप्रेल को हुआ। शोभायात्रा भी निकली।

* **रतलाम-**धर्मदासगण परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सर्वानुमति से एस.एल. भंडारी के धर्मदासगण परिषद का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष शांतिलाल भण्डारी बचपन में श्री सूर्यमुनिजी म.सा. के

सान्निध्य में जैन युवा संगठन के सर्वप्रथम राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष बने और गण के पत्र जिनशासन गौरव समाचार पत्र के प्रधान संपादक भी रहे।

* **पूणे** – गुरु पुष्कर सेवा समिति पूणे के तत्ववाधान में श्री नरेश मुनि म.सा. के सान्निध्य में पूणे में भूमि पूजा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर नरेश मुनि म.सा. को भारत सरकार द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय संत की उपाधि की चादर भी संघ के सदस्यों द्वारा ओढ़ाई गई।

* **चैन्नई** – अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने जीतो सेवा अवार्ड से सम्मानित किया।

* **कन्याकुमारी**– श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर व दादावाड़ी पर ध्वजारोहण व अन्य अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

तो हमें रोना न पड़े

एक अतिश्रेष्ठ व्यक्ति थे, एक दिन उनके पास एक निर्धन आदमी आया और बोला कि मुझे अपना खेत कुछ साल के लिए उधार दे दीजिये, मैं उसमें खेती करूंगा और खेती करके कमाई करूंगा, वह अतिश्रेष्ठ व्यक्ति बहुत दयालु थे, उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को अपना खेत दे दिया और साथ में पाँच किसान भी सहायता के रूप में खेती करने को दिये और कहा कि इन पाँच किसानों को साथ में लेकर खेती करो खेती करने में आसानी होगी। इसमें तुम और अच्छी फसल की केती करके कमाई कर पाओगे। वह निर्धन ये देखके बहुत खुश हुआ कि उसको उधार में खेत भी मिल गये । लेकिन वह आदमी अपनी इस खुशी में बहुत खो गया, और वह पाँच किसना अपनी मर्जी से खेती करने लगे और वह निर्धन आदनी अपनी खुशी में डूबा रहा और जब फसल काटने का समय आया तो देखा कि फसल बहुत ही खराब हुई थी।

उन पाँच किसानों ने खेत का उपयोग अच्छे से नहीं किया था न ही अच्छे बीच डाले, जिससे फसल अच्छी हो सके। जब वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति ने अपना खेत वापस मांगा तो वह निर्धन व्यक्ति रोता हुआ बोला कि मैं बर्बाद हो गया, मैं अपनी खुशी में डूबा रहा और उन पाँच किसानों को नियंत्रण में रख सका न ही इनसे अच्छी खेती करवा सका। अब यहाँ ध्यान देने की बात है वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति है भगवान निर्धन व्यक्ति है हम खेत है हमारा शरीर। पाँच किसान हैं हमारी इन्द्रिया आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा प्रभु ने हमें यह शरीर रूपी खेत अच्छी फसल (कर्म) करने को दिया है और हमें इन पाँच किसानों को अर्थात इन्द्रियों को अपने – अपने नियंत्रण में रखकर कर्म करने चाहिये जिससे वो दयालु प्रभु जब ये शरीर वापिस मांगकर हिसाब करें तो हमें रोना न पड़े।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

आत्मोद्धार -3 आयंबिल यात्रा संदेश

अहमदाबाद। राजनगर में 23 मई 2019 को लोकसंत सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के परम्परा में गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. व आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में आयोजित 'आत्मोद्धार-3' सामूहिक दीक्षा महोत्सव सह आनन्द सम्पन्न हो इसी शुभाशय से सामूहिक आयंबिल का आयोजन सकल श्रीसंघों में किया जा रहा है। 27 दिवसीय अखण्ड आयम्बिल रखा गया है। आयोजन में आपके श्रीसंघ का नाम जिस दिन आये उस दिन अधिक से अधिक 'आयंबिल' करने के भाव रखे, आयम्बिल 27 अप्रैल से शुरू होंगे अपने श्रीसंघ का नाम मीडिया प्रभारी को लिखा सकते हैं। ध्यान रहे साकली आयंबिल की कड़ी अखंडित रहे कम से कम एक आयंबिल अनिवार्य है। संयम अनुमोदना अवश्य करें।

'पारा नगरे' त्रि-दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव

5 मई से 7 मई 2019

(अक्षय तृतीया, आखातीज)

सुविशाल गच्छाधिपति प.पू. आचार्य प्रवर धर्म दिवाकर श्रीमद्विजय 'नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.' की निश्रा एवं प.पू. आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.के शुभाशीष एवं श्रमण, श्रमणीवृन्द की निश्रा में सामूहिक वर्षीतप पारणा महोत्सव आयोजित किया जा रहा है।

:: आयोजक ::

श्री सौधर्म बृहत्तपोगछिय त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ

एवं

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद व परिषद परिवार, पारा

सूचना

आगामी माह जुलाई का अंक 'सामायिक' विषय पर केन्द्रित होकर प्रकाशित होगा।

सभी पुज्य मुनिराज गणों साध्वीजी महाराज, लेखक एवं रचियताओं से निवेदन है कि अपनी 'सामायिक' विषय पर केन्द्रित सामग्री आगामी 25 मई 2019 तक मन्दसौर कार्यालय पर भिजवाने का कष्ट करें।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month.

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष-66, अंक-5 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 116

250 से भी अधिक श्रमण-श्रमणीओं की
वीरभूमि राज नगरे अहमदाबाद

आत्मोद्धार

'सामूहिक दीक्षा महोत्सव'

आत्मोद्धार के वीर मुमुक्षु

19+ आत्मोद्धारक मुमुक्षु

16 मर्हूत के पश्चात् आज मोहनखेड़ा जयन्तसेन म्यूजियम में दिए गए तीन और मुर्हूत

आत्मोद्धार निश्रा प्रदाता :

युगप्रभावक पुण्यसम्राट गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

1. मुमुक्षु विशेष भाई भरतभाई बल्लु
2. मुमुक्षु संयमभाई हसमुखभाई मोरखीया
3. मुमुक्षु मिलबेन भरतभाई बल्लु
4. मुमुक्षु निरालीबेन हँसमुखभाई धरु
5. मुमुक्षु सिल्कीबेन महेशभाई आंबाणी
6. मुमुक्षु निशीबेन दिनेशभाई दोशी
7. मुमुक्षु नियतिबेन नरेन्द्रभाई संघवी
8. मुमुक्षु रोशनीबेन सुरजमलजी रांका
9. मुमुक्षु रिंकलबेन कीर्तिलाल ओझा
10. मुमुक्षु मीनाबेन हसमुखभाई मोरखीया
11. मुमुक्षु रिद्धिबेन नरतपभाई दोशी
12. मुमुक्षु रिद्धिबेन दिनेशभाई वोहेरा
13. मुमुक्षु क्रिनाबेन शैलेशभाई वोहेरा
14. मुमुक्षु आंगीबेन परेशभाई अदानी
15. मुमुक्षु मित्तलबेन विनोदभाई दोशी
16. मुमुक्षु पूजाबेन दिनेशभाई मोरखीया
17. मुमुक्षु मोक्षालीबेन किरीटभाई वोरा
18. मुमुक्षु वैरागीबेन किरीटभाई वोरा
19. मुमुक्षु झीलबेन बकुलभाई भणसाली

आत्मोद्धार स्थल :
वल्लभ सदन रिवरफ्रंट, आश्रम रोड़
राजनगर (अहमदाबाद), गुजरात

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001